♦ कार्तिक शुक्ल पक्ष 05/06 विक्रम संवत 2079 ♦ डालटनगंज (मेदिनीनगर), रविवार 30 अक्टूबर 2022 ♦ वर्ष-29 अंक-16 पृष्ठ-12, मूल्य ₹1.50

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

छठ महापर्व

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com

शुभकामनाएं

राष्ट्रीय नवीन मेल के सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, अभिकर्ताओं, हॉकरों एवं शुभचिंतकों को छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

अवकाश की सूचना

छठ महापर्व के अवसर पर राष्ट्रीय नवीन मेल कार्यालय रविवार (30 अक्टूबर) को बंद रहेगा। अतः अखबार का अगला अंक मंगलवार (01 नवम्बर) को प्रकाशित होगा।

न्यूज गैलरी

सीएम ने दी शुभकामनाएं

रांची। लोक आस्था के महापर्व छठ के दूसरे अनुष्ठान खरना पूजा की राज्यवासियों व छठव्रतियों को सीएम ने शुभकामनाएं दीं। सीएम ने ट्वीट कर कहा कि लोक आस्था और सूर्योपासना के महापर्व छठ पूजा के दूसरे दिन खरना की सभी को अनेक-अनेक शुभकामनाएं। भगवान भास्कर और छठी मइया की कृपा आप सभी पर बनी रहे, यही कामना करता हूं।

छठ के प्रसाद बनाने के दौरान सिलेंडर फटने से लगी भीषण आग, 25 से अधिक झुलसे

औरंगाबाद (एजेंसी)। बिहार के औरंगाबाद जिले में शनिवार सुबह छठ पर्व के लिए प्रसाद बनाने के दौरान एक घर में रसोई गैस पाइप में रिसाव के कारण हुए सिलेंडर विस्फोट से लगी आग में 25 लोग झुलस गये। नगर थाना के अवर निरीक्षक विनय कुमार सिंह ने बताया कि हादसा शाहगंज मोहल्ले के वार्ड संख्या 24 निवासी अनिल गोस्वामी के घर में हुआ। सिंह ने बताया कि आग की चपेट में आकर झुलसे लोगों में गोस्वामी और उनके परिवार के अन्य सदस्यों के अलावा आग बुझाने के लिए वहां पहुंचे पांच पुलिसकर्मी, दमकल कर्मी और पड़ोस के लोग भी शामिल हैं। सिंह के अनुसार, हादसे में झुलसे लोगों को सदर अस्पताल ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने गंभीर रूप से झुलसे कुछ लोगों को अन्य अस्पतालों में रेफर कर दिया। अवर निरीक्षक के मुताबिक, घायलों में से पांच की हालत गंभीर है। उन्होंने बताया कि अग्निशमन दस्ते और स्थानीय लोगों की मदद से घर में लगी आग पर काबू पा लिया गया है।

राज्यवासियों को जल्द मिलेगा राज्य का पहला सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क

रांची। राज्य का पहला सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क राज्यवासियों को जल्द मिलनेवाला है। इससे मल्टीनेशनल कंपनियां यहां आयेगी और लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके अलावा राज्य में चार अन्य सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क का निर्माण हो रहा है। इसके साथ ही राज्य में कुल पांच सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क बन रहे हैं। वहीं, डाटा सेंटर से देश-विदेश स्थित क्लाइंट को सेवाएं भी मिलेगी। 25 करोड़ की लागत से सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क तैयार : भारत और झारखंड सरकार के संयुक्त पहल से सरायकेला-खरसावां स्थित आदित्यपुर के श्रीडुंगरी में बने लगभग 25 करोड़ की लागत से तैयार सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क में भारत सरकार के सेंटर फॉर एक्सीलेंस के साथ यूएस की क्यू कनेक्ट, उदयपुर की फाइव स्पलैश कंपनियों के अलावा यूके का डाटा सेंटर स्थापित होंगे। इसके लिये सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया को प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू, आज अस्ताचलगामी सूर्य को देंगे अर्घ्य

नवीन मेल संवाददाता

रांची। लोक आस्था और सूर्योपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ के दूसरे दिन शनिवार को व्रतियों ने खरना पूजा की। इस दौरान व्रतियों और श्रद्धालुओं ने सूर्य देवता की आराधना कर उन्हें खीर, पूरी और फलों का प्रसाद अर्पित किया। छठ व्रत करनेवाले लोग खरना प्रसाद ग्रहण करने के बाद 36 घंटे का निर्जला उपवास रखते हैं जो सोमवार सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के साथ सम्पन्न होगा। रविवार को

अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया जायेगा।

इधर, राजधानी रांची सहित राज्य के तालाब और डैमों की साफ-सफाई भी लगभग पूरी कर ली गयी है। वहीं, छठ के अवसर पर सुरक्षा की भी चाक-चौबंद व्यवस्था की गयी। छठ घाटों पर अधिकारियों के साथ पुलिसकर्मियों और एनडीआएफ की भी तैनाती की गयी है।

छठ के दूसरे दिन खरना करने की है परंपरा : लोक आस्था के चार दिवसीय महापर्व छठ के दूसरे दिन खरना करने की परंपरा रही है। चार दिवसीय महापर्व छठ के दूसरे दिन शनिवार को राजधानी रांची समेत राज्य के विभिन्न इलाकों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान कर व्रती समेत उनके परिवार के सदस्य पूजा की तैयारी में जुट गये। व्रत के दूसरे दिन खरना व्रत की परंपरा निभायी जाती है।

सीएम हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में आपदा प्रबंधन प्राधिकार की बैठक

झारखंड में सुखाड़ की स्थिति पर चर्चा

- राज्य के 22 जिलों के 226 प्रखंड सूखाग्रस्त घोषित
- 22 जिलों के 226 प्रखंडों में प्रति किसान परिवार को तत्काल 3500 रुपये की सूखा राहत राशि उपलब्ध करायी जायेगी
- राज्य के लगभग 30 लाख से अधिक प्रभावित किसान परिवार को मिलेगा इसका लाभ
- लगभग 1200 करोड़ रुपये खर्च करेगी राज्य सरकार

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में शनिवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में झारखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकार की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में राज्य के 22 जिलों के 226 प्रखंडों को सूखाग्रस्त घोषित करने का निर्णय लिया गया। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों के साथ राज्य में सुखाड़ को लेकर कृषि विभाग द्वारा तैयार की गयी सूखे का आकलन प्रतिवेदन पर विचार-विमर्श करते हुए महत्वपूर्ण निर्णय लिये। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कृषि विभाग द्वारा तैयार की गयी सूखे का आकलन प्रतिवेदन पर गंभीरता से विचार करते हुए राज्य के चिन्हित 22 जिलों (पूर्वी सिंहभूम एवं सिमडेगा छोड़कर) के 226 ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

जेजेएमपी उग्रवादी संगठन के दो सक्रिय सदस्य गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। थाना क्षेत्र के बारीडीह गांव से जेजेएमपी उग्रवादी संगठन के दो सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार कर लातेहार मंडल कारा भेज दिया है। जिसमें लातेहार बारीडीह गांव निवासी जेजेएमपी सदस्य सुधीर लोहरा पिता बालमुकुन्द लोहरा , बालूमाथ ओल्हे पाठ गांव निवासी जीतेन्द्र कुमार तुरी पिता स्व० बंधन तुरी को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी अमित कुमार गुप्ता ने प्रेस वार्ता कर बताया कि पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन को गुप्त सूचना मिली थी

की जेजेएमपी उग्रवादी संगठन के सक्रीय सदस्य अप्रिय घटना कारित करने के लिए लातेहार थाना क्षेत्र के ग्राम बारीडीह में एकत्रित है हुए। पुलिस अधीक्षक लातेहार के ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री की सराहनीय पहल

छठ पर्व में आकर्षक दृश्यों का अवलोकन कर सकेंगे श्रद्धालु

नवीन मेल संवाददात

रांची। एचईसी परिसर स्थित मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र (शालीमार, धुर्वा) में इस बार छठ पर्व पर छठव्रतियों के अलावा श्रद्धालुगण अद्भुत व आकर्षक दृश्यों का अवलोकन कर सकेंगे। राज्य के कृषि, पशुपालन व सहकारिता मंत्री बादल की पहल पर ऐसा संभव हो सका है। परिसर में आकर्षक विद्युतीकरण राज्य

सरकार द्वारा तालाब एवं जलाशय मत्स्य का विकास एवं जीर्णोद्धार योजना के तहत किया गया है। इसके तहत शालीमार परिसर स्थित तालाब के चारों ओर आकर्षक विद्युत सज्जा की गयी है। इससे मत्स्य प्रशिक्षण केंद्र परिसर की शोभा बढ़ी है। वहीं, विशेष रूप से छठव्रतियों को तालाब पर छठ व्रत करना काफी सुगम होगा। गौरतलब है कि विभागीय मंत्री बादल ने इसे गंभीरता से लेते हुए निर्धारित समय के ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

मुख्यमंत्री से मिला गुरु सिंह सभा का प्रतिनिधिमंडल

प्रकाश उत्सव में सम्मिलित होने का दिया निमंत्रण

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से शनिवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में गुरु सिंह सभा रांची के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने आगामी आठ नवम्बर 2022 को गुरुनानक जयंती के शुभ अवसर पर पीपी कंपाउंड स्थित गुरुनानक स्कूल में आयोजित प्रकाश उत्सव कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित होने हेतु मुख्यमंत्री को आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री से मुलाकात करनेवाले प्रतिनिधिमंडल में ज्योति सिंह मथारू, गगनदीप सिंह सेठी, परमजीत सिंह टिंकू, प्रो. हरविंदर वीर सिंह, रंजीत सिंह हैप्पी, ऋषि छाबड़ा, हरप्रीत जग्गी, रणवीर सिंह, भूपेंद्र सिंह, त्रिलोचन सिंह, जसप्रीत नागी, हरविंदर वेदी, हरगोविंद सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

पलामू सेंट्रल जेल में 11 कैदी कर रहे छठ, जेल प्रशासन दे रही सुविधा

मेदिनीनगर। आस्था का महापर्व छठ शुक्रवार को नहाय खाय के साथ शुरू हो गई। आस्था के इस महापर्व की गूंज चारों ओर सुनाई दे रही है। चारों तरफ छठ को लेकर माहौल बना हुआ है। पलामू सेंट्रल जेल भी इससे अछूता नहीं है। पलामू सेंट्रल जेल में 11 कैदी छठ कर रहे हैं। जिसमें छह महिला और पांच पुरुष कैदी हैं, 03 कैदी सजायाफ्ता है जो आजीवन कारावास की सजा काट रहे । पलामू सेंट्रल जेल प्रबंधन द्वारा छठ को लेकर विशेष व्यवस्था की गई है। कैदियों को पूजा से संबंधित सारी सामग्री उपलब्ध करवाई गई है। छठ करने वाले व्रतियों के लिए जेल के अंदर अर्घ्य की व्यवस्था की गई है। पलामू सेंट्रल जेल अधीक्षक जितेंद्र कुमार ने बताया कि छठ व्रत करने वाले सभी कैदियों को सारी सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई है। कैदियों के लिए नए कपड़े खरीदे गए हैं और उन्हें पूजा से संबंधित सारी सामग्री उपलब्ध करवाई गई है।

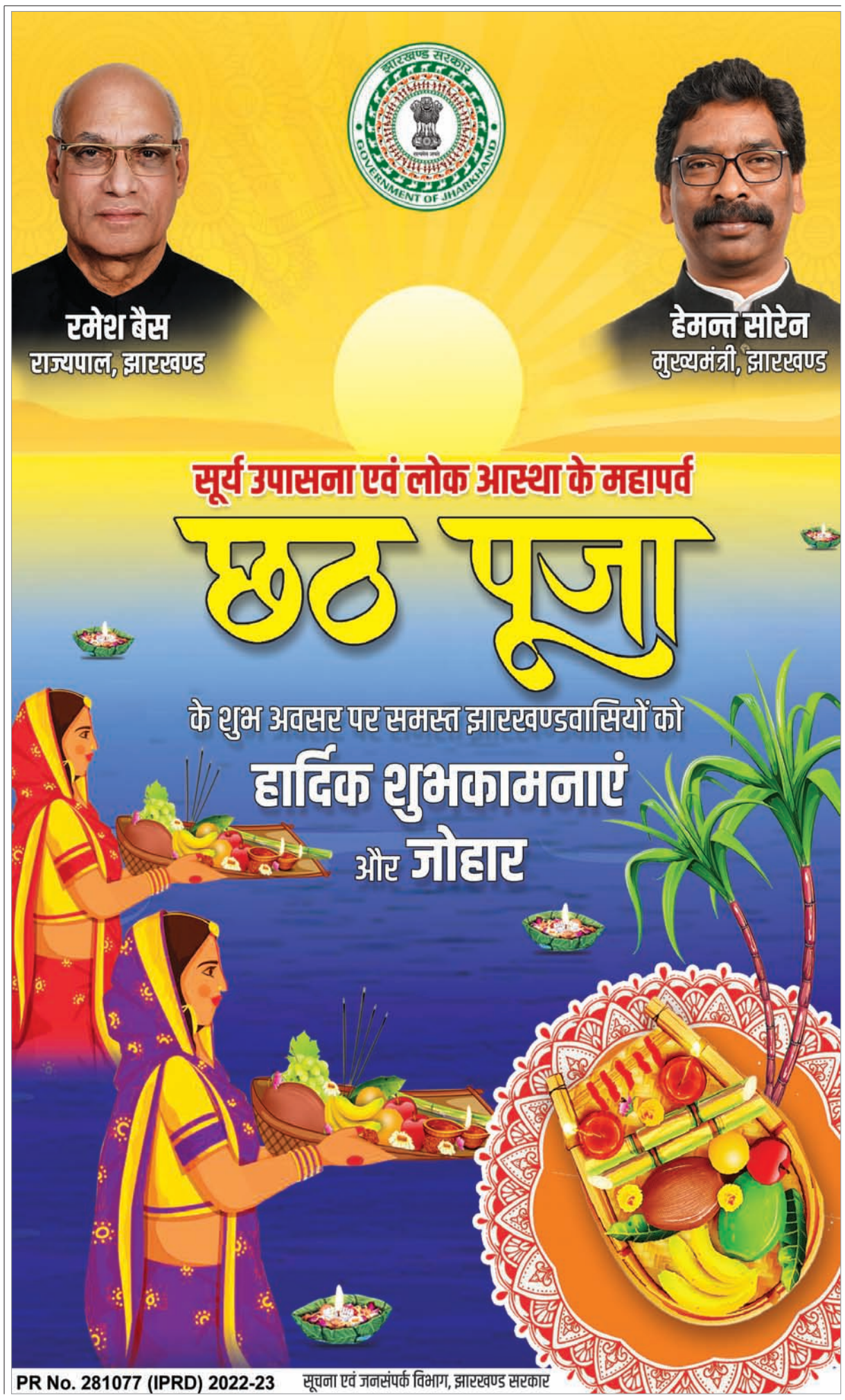

डालटनगंज : तथाकथित मरीन ड्राइव-टू फेज का हाल-बेहाल

सवा चार करोड़ के निर्माण में गुणवत्ता के साथ हो रही है खानापूर्ति

- स्थानीय लोगों में आक्रोश चुनाव में फायदे के लिए हो रहे हैं कार्य

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। निगम के द्वारा शहर के सौन्दरीकरण करने के प्रयास में मरीन ड्राइव टू की शुरूआत हो गई है। इसका उद्घाटन 19 अक्तूबर को हुआ था। इसका बड़े पैमाने पर प्रचार प्रसार किया गया था। इस बार के निगम चुनाव में यह कार्य जनता के सामने बहुत बड़ी उपलब्धि के रूप में गिनाने का प्रयास होगा। निगम मेयर सहित विधायक व सांसद की उपस्थिति कई वार्ड पार्षदों की उपस्थिति में मरीन ड्राइव फेज 2 का शिलान्यास किया गया है। उसके बाद कार्य शुरू भी हो चुका। लेकिन निगम की लापरवाही और ठेकेदारों के द्वारा

करोड़ों की लागत से बन रहे मरीन ड्राइव के निर्माण में गुणवत्ता के साथ खानापूर्ति की जा रही है। कोयल नदी के तट पर बने पार्क में खाली स्थानों पर सूखे सीमेंट और छाई शनिवार को डाले गये हैं। जबकि सच्चाई है कि पहली बारिश में ये सामान पानी के बहाव में कोयल नदी में समा जायेगें।

स्थानीय लोगों ने घटिया गुणवत्ता पर उठाये सवाल : निगम के निर्माण को लेकर स्थानीय लोगों द्वारा इसके घटिया गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाने लगे हैं। स्थानीय लोगों ने कहा कि निगम का प्रयास सराहनीय है लेकिन घटिया गुणवत्ता के साथ मरीन ड्राइव का निर्माण किया जा रहा है। जो सरासर गलत है। लोगों ने बताया कि काम गुपचुप दूसरी पिचिंग के पहले ही रात को भी जारी है। नियम के अनुसार पहले पूरी सफाई करनी चाहिये फिर निर्माण होनी चाहिये। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। ठेकेदारों को काम जल्दी खत्म करने को बोला गया है। इसलिये ठेकेदार भी किसी तरह काम निपटाने में लगे हैं। इसे देखकर पहली नजर में ही समझा जा सकता है। पहले लेयर में ही बनाई जाने वाली सीढ़ी उखड़नी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

सवा चार करोड़ से अधिक की लागत से हो रहा निमार्ण

निगम के द्वारा बनाया जा रहा मरीन ड्राइव फेज 2 के निर्माण में व्यापक अनियमितता बरती जा रही है। नगर विकास और आवास विभाग के चार करोड़ 25 लाख 13 हजार एक सौ 65 रुपये की लागत से वार्ड संख्या 22,29 और 30 में इस ड्राइव का निर्माण किया जा रहा है।

न्यूज गैलरी

प्रशासनिक अधिकारियों ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

नावा बजार। रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सह भाजपा नेता डॉ. ईश्वर सागर चंद्रवंशी, बीडीओ प्रशांत कुमार हेंब्रम, थाना प्रभारी शशि रंजन, नगर प्रबंधक सुभाष हेंब्रम, प्रभात कुमार सहित कई प्रशासनिक अधिकारियों ने आज बिश्रामपुर शिव घाट व राज घाट का निरीक्षण किया। छठ महापर्व को लेकर घाटों पर चल रहे तैयारी का जायजा लिया। पूजा कमेटी को कई दिशा निर्देश भी दिया। श्री चंद्रवंशी ने कहा कि घाट पर छठ व्रतियों को हर सुविधा उपलब्ध कराया जायेगा। घाटों पर व्रतियों के लिए रोशनी, स्नानघर, पूजन सामग्री, अर्घ्य देने हेतु गाय का शुद्ध दूध, घी, पान का पत्ता, कश्याली, नारियल सहित सभी चीजें रहेंगी। शिव घाट छठ पूजा कमेटी अध्यक्ष गोपाल सोनी ने बताया कि गंगा आरती और देवी जागरण का भी आयोजन किया गया है। इधर राज घाट पर भी गंगा आरती व भक्ति जागरण आयोजित किया गया है। मौके पर विधायक प्रतिनिधि राजन पांडेय, विजय कुमार रवि, सुनील कुमार चौधरी, संजय ठाकुर, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष बबन राम, संतोष राम, कुकू पाशी, असलम बहादुर, विजय पेंटर, विनोद विश्वकर्मा, शिवबंश मिश्रा, उदेश्वर यादव, राजकुमार मेहता सहित कई लोग मौजूद थे।

वार्ड सदस्या ने की पूजन सामग्री का वितरण

उंटारी। रोड उंटारी रोड प्रखंड क्षेत्र के दरूआ में लोक आस्था के शुद्धता व पवित्रता के महान पर्व के छोटकी लोहड़ व खीर भोजन के दिन वार्ड सदस्या संजू देवी ने अपने निजी खर्च से छठ व्रतियों के बीच पूजन सामग्री का वितरण की। पूजन सामग्री वितरण के दौरान वार्ड सदस्या संजू देवी ने कही की छठ पर्व आस्था का प्रतीक पर्व माना जाता है। छठ महापर्व के दिन भगवान भास्कर की विधि विधान से पूजा किया जाता है।मौके पर मनोज चौधरी, शिक्षक लालबिहारी चौधरी, रमेश चौधरी, कमलेश चौधरी, संतोष चौधरी सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

राजद नेता ने छठ व्रतियों के बीच आम की लकड़ी का किया वितरण

हरिहरगंज। छठ महापर्व के मौके पर राजद प्रदेश महासचिव सह समाजसेवी कमलेश कुमार यादव ने शनिवार को हरिहरगंज नगर पंचायत के बेलौदर मोड़, अररुआ खुर्द मोड़ तथा घाघरा सहित अन्य जगहों पर छठ व्रतियों के बीच आम की लकड़ी का निःशुल्क वितरण किया। लकड़ी वितरण के मौके पर उन्होंने कहा कि छठ पर्व हिंदू समाज का आस्था का महापर्व है त्योहार और पर्व में लोगों की सेवा, मदद कर आत्मा की शांति मिलती है। साथ ही लोगों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि पर्व के दौरान छठ व्रतियों को कोई परेशानी ना हो इसके लिए भी कई राहत कार्य चलाए जा रहे हैं। मौके छोटू कुमार, जितेंद्र पासवान, शशि सिंह, रविंद्र चौधरी, संदीप साव, प्रीतम साव, प्रमोद साव, राजेश गुप्ता, अनिल जायसवाल सहित कई श्रद्धालु उपस्थित थे।

सोनवे व बभंडी बतरे नदी छठ घाट की सफाई की गई

हरिहरगंज। लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा की तैयारी को लेकर विभिन्न घाटों, तालाबों अन्य घाटों की साफ-सफाई जोर-शोर से की जा रही है। इसी कड़ी में शनिवार को बभंडी पंचायत निवासी मानवाधिकार फाउंडेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश सिंह उर्फ भोला सिंह ने जेसीबी व ट्रैक्टर लगाकर तथा श्रमदान करते हुए सोनवे व बभंडी बतरे नदी छठ घाट व रास्ते को दुरुस्त करवाया। इसमें आधा दर्जन भर युवकों के द्वारा घाट पर जाने वाली मुख्य रास्ते की साफ सफाई की गयी। सतीश उर्फ भोला सिंह ने कहा कि छठ पूजा पर श्रद्धालुओं तथा छठ व्रतियों के लिए उत्तम व्यवस्था करना हमारा सौभाग्य है। छठ घाट की सफाई में मुखिया इशवन्ति कुंवर का विशेष योगदान रहा। जबकि घाटों की सफाई में पिंटल सिंह, नारायण सिंह, रविंद्र कुमार सिंह, शिवाजी, आशुतोष सिंह, घनश्याम विश्वकर्मा, सुबोध बरई आदि श्रद्धालु शामिल थे।

रेलवे बुकिंग क्लर्क के क्वार्टर से दस हजार रुपए की चोरी

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हुसैनाबाद सिटी के रेलवे कॉलोनी के समीप जपला रेलवे स्टेशन के बुकिंग क्लर्क सत्येन्द्र शर्मा के घर का वेंटिलेटर तोड़ कर चोरों ने नगदी दस हजार रुपए की चोरी कर ली। जपला रेलवे बुकिंग क्लर्क सत्येन्द्र शर्मा ने बताया कि शुक्रवार की देर रात तक वे ड्यूटी में थे। जब वह अपने एक निजी किराया के क्वार्टर में पहुंचा, तो देखा कि आंगन में बक्सा वह अटैची का सामान बिखरा पड़ा है। और नगदी पैसे गायब है। चोरों द्वारा वेंटिलेटर को तोड़ने के लिए लाया गया सामान भी वहां पर छूट हुआ है। इसकी जानकारी जपला आरपीएफ पोस्ट को दी गई। वैसे हुसैनाबाद सिटी सहित ग्रामीण क्षेत्रों इन दिनों चोरी की घटनाएं बढ़ गई है। जिसके कारण लोगों में भय व्याप्त है।

समाजसेवी ने फल व पूजन सामग्री का किया वितरण

हरिहरगंज। लोक आस्था का महापर्व छठ के अवसर पर नगर पंचायत क्षेत्र में युवा समाजसेवी राजीव रंजन ने कार्यकताओं के साथ छठ व्रतियों के घर-घर जाकर फल व पूजन सामाग्री का वितरण किया । इस दौरान हरिहरगंज, घाघरा, पिपरा, विशुनपुर, खाप कटैया सहित पूरे नगर पंचायत क्षेत्र में जाकर छठ व्रतियों को प्रसाद का थैला दिया । इस अवसर पर राजीव रंजन ने कहा कि व्रतियों के बीच फल का वितरण करना पुण्य का काम है। मौके पर गोपाल प्रसाद, मृत्युंजय सिंह, राजेश रंजन मिश्रा, रवी प्रजापति, दिनेश स्वर्णकार आदि मौजूद थे।

राजा मेदिनीराय की याद में जतरा मेला का आयोजन

नवीन मेल संवादाता

सतबरवा। लोक आस्था एवं सूर्य उपासना का महापर्व छठ पूजा के पारण के दूसरे दिन प्रत्येक वर्ष की भांति राजा मेदिनीराय जी के याद में लगने वाला पलामू किला जतरा मेला 2022 के लिए तीन दिवसीय पलामू किला मेला जतरा समिति का शनिवार को शिव मंदिर के प्रांगण में बैठक कर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया मेला को शांतिपूर्ण तरीके से पूर्ण हो इसका पूरा कोशिश करना है वही मेला के मुख्य संरक्षक अवधेश सिंह चोरों ने बताया की इस मेला मुख्य अतिथि मनिका विधानसभा के विधायक रामचंद्र सिंह एवं विशिष्ट अतिथि चतरा लोकसभा के सांसद सुनील सिंह होंगे मेला 31/10 /2022 सोमवार को चेड़ी पूजा 01/ 11 /2022 मंगलवार को मेला का उद्घाटन 02/11/2022 बुधवार को समापन किया जाएगा वही श्री सिंह ने कहा कि मेला शांतिपूर्ण रहे इसके लिए पूरी विधि व्यवस्था की गई है । हर जगह वालंटियर मौजूद रहेंगे । वही बैठक में मुख्य संरक्षक एवं संचालन अवधेश सिंह चेरो, मुख्य मार्गदर्शक लखन सिंह, अध्यक्ष उमेश सिंह चेरों, कार्यकारी अध्यक्ष आशुतोष सिंह चेरो, उपाध्यक्ष गंगेश्वर सिंह , सुधीर सिंह, कुमारेश सिंह, चंदन सिंह एवं दिनकर सिंह, सचिव विश्वनाथ सिंह, विनोद यादव एवं संयुक्त सचिव एवं पार्किंग के प्रभारी अरविंद सिंह चेरो, धीरज प्रसाद, कोषाध्यक्ष जमुना सिंह एवं शंभू उरांव, मीडिया प्रभारी विनय सिंह, संतोष सिंह,विपिन सिंह, प्रवीण सिंह, गुड्डू सिंह ,पंकज सिंह एवं अनिल सिंह, जमुना सिंह सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे। वहीं शनिवार को मेला का निरीक्षण सतबरवा थाना प्रभारी ऋषिकेश राय ने किया।

अनाधिकृत रूप से गाड़ियों के पार्किंग से यात्रियों की बढ़ी परेशानी

आरपीएफ व जीआरपी की मिलीभगत से इनकार नहीं

नवीन मेल संवाददाता

नावा बजार। धनबाद रेल मंडल के गढ़वा रोड स्टेशन परिसर में अनाधिकृत रूप से बड़ी वाहनों का पार्किंग व परिचालन से स्टेशन से निकलने व प्लेटफार्म पर जाने के लिए यात्रियों को भारी मशक्कत करना पड़ता है। यात्रियों की यह परेशानी सिर्फ व सिर्फ आरपीएफ व जीआरपी की मिलीभगत से बढ़ी है। छत्तीसगढ़ से आने- जाने वाली बसें गढ़वा रोड स्टेशन के मुख्य द्वार तक पहुंचती है। संकीर्ण रास्ते होने के कारण लोगों को काफी परेशानी का भी सामना करना पड़ता। लेकिन इसकी परवाह न तो गढ़वा रोड आरपीएफ को है और ना हीं जीआरपी को। बसों के एजेंट स्थानीय व दबंग होने के कारण बेबस लोग कुछ बोल भी नहीं पाते। शुक्रवार की देर रात गढ़वा रोड स्टेशन से छत्तीसगढ़ की ओर जाने वाली बस संकीर्ण रास्ते में असंतुलित होकर नाली के उपर रखे स्लैब को क्षतिग्रस्त करते हुए घुस गई। जिससे एक बड़ी दुर्घटना होने से बची। स्थानीय लोगों ने बताया कि अगर नाली का स्लैब क्षतिग्रस्त नहीं होता तो गाड़ी आगे जाकर दुकान में ठोकर मारती। जिससे अप्रिय घटना होने से इनकार नहीं किया जा सकता था। रेल परिसर में अवैध रूप से आरपीएफ व जीआरपी की मिलीभगत से करीब नौ दुकान लगता है। जिसे लगाने के पूर्व आरपीएफ व जीआरपी से पर्मिशन लेने को लेकर प्रकिया पूरी करनी पड़ती है। जब कभी भी ऊपर के अधिकारियों का विजिट होता है तो अवैध रूप से लगी सभी दुकानों का आरपीएफ व जीआरपी अधिकारी हटवा देते हैं। वहीं यात्री ट्रेन और एक्सप्रेस में अनाधिकृत रूप से सैकड़ो वेंडर इनकी मर्जी पर चलते है। कई बार दोनों पुलिस आरपीएफ व जीआरपी में झड़प भी हुआ करता है। रेलवे प्रशासन की इस लापरवाही को लेकर स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश हैं। लेकिन डरे सहमे लोग खुली जुबान कुछ बोल नहीं पाते।

टॉपर रंजन को जिप सदस्य ने किया सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। जीएलए कॉलेज के स्नातकोत्तर सत्र 2020 -22 में हिंदी के लिए नीलाम्बर- पीताम्बर विश्वविद्यालय के टॉपर रहे विद्यार्थी को सम्मानित किया गया। हुसैनाबाद प्रखंड के बेलबिगहा पंचायत के काजरात गांव निवासी रंजन कुमार यादव को हुसैनाबाद उत्तरी क्षेत्र के जिला परिषद सदस्य राजू कुमार मेहता ने शुक्रवार को मोमेंटो देकर सम्मानित किया। मौके पर राजू मेहता ने कहा कि रंजन कुमार यादव ने हिंदी विषय मे एनपीयू विश्वविद्यालय में टॉपर बनकर अपने परिवार, गांव समाज और क्षेत्र का नाम रौशन किया है। उन्होंने बधाई देते हुए छात्र की उज्वल भविष्य की कामना की है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद में भी काफी प्रतिभाशाली हैं, जरूरत है उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने की। उन्होंने कहा कि शिक्षा व खेल के क्षेत्र में प्रतिभावान छात्र- छात्राओं को हर संभव सहायता कर उन्हें आगे बढ़ाना हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण परिवेश के बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देकर ही क्षेत्र का सर्वांगीण विकास संभव है। मौके पर कृष्णा यादव, अजीत मेहता, पप्पू यादव, अजीत प्रजापति आदि लोग मौजूद थे।

जिप उपाध्यक्ष ने स्टॉल लगाकर फल व पूजा सामग्री का किया वितरण

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हुसैनाबाद शहर के जेपी चौक के समीप समाजसेवी व पलामू जिला परिषद के जिप उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह के सौजन्य से छठ व्रतियों के लिए फल व पूजा सामग्री वितरण के लिए स्टॉल लगाया गया। वितरण समारोह में मुख्य अतिथि जिप उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह उर्फ टुटू सिंह, समाजसेवी अविनाश कश्यप, संजय पाठक, धर्मेन्द्र सिंह, जाकिर अली उर्फ राज अली, वरुन सिंह, रोहन कुमार सिंह उर्फ मिंटू सिंह, राहुल रमन,चिराग पासवान,प्रदीप सिंह के द्वारा छठ व्रतियों के बीच नारियल, केला सेव, अगरबत्ती, सूप, पचंमेवा समेत अन्य पूजन सामग्री का वितरण किया गया। इस मौके पर आलोक कुमार सिंह ने लोगों को छठ पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गरीब इलाकों में भी जो अत्यंत गरीब है,छठ महापर्व करने में सक्षम नहीं है। वैसे व्रतियों को भी छठ पूजा सामग्री वितरित किया गया है। क्षेत्र के लोगों ने सूर्य उपासना का महापर्व में सहयोग करने की सराहना की है।

पिपराटांड थाना प्रभारी ने निजी खर्च से कराया तीन किलोमीटर सड़क की मरम्मत

पांकी। पिपराटांड़ थाना के थाना प्रभारी राहुल गुप्ता ने अपने निजी खर्च से छठ महापर्व के लिए छठ व्रतियों के लिए जेसीबी से 3 किलोमीटर सड़क का मरम्मत कराने के साथ छठ घाट की साफ - सफाई भी करवाया। उन्होंने लोहरसी चट्टी से चाको नदी तक सड़क मरम्मत कराने का काम किया। थाना प्रभारी राहुल गुप्ता ने बताया कि छठ घाट जाने वाले सड़क की स्थिति काफी जर्जर थी, इसे ध्यान में रखते हुए सड़क मरम्मत कराने का काम किया हूँ। साथ ही छठ घाट की साफ - सफाई भी करवाया गया है। उन्होंने लोगों से शांति , सौहार्द पूर्ण तरीके से छठ महापर्व मनाने की अपील की है। मौके पर उपस्थित मुकेश गुप्ता, डॉ गोविंद लाल पासवान, राजेश गुप्ता,शंकर साहू, विजय गुप्ता, महेंद्र गुप्ता, दीपक मेहता, मदन गोस्वामी, सिकंदर भोक्ता, रामविलास यादव सहित कई लोग उपस्थित थे।

लोजपा ने छठव्रतियों के बीच किया फलहार का वितरण

हुसैनाबाद। लोजपा के वरिष्ठ नेता आनंद प्रताप सिंह के सौजन्य से अंबेडकर चौक के सपीप महापर्व के अवसर पर व्रतियों के बीच पूजन सामग्री का वितरण किया। इस मौके पर लोजपा के जिला अध्यक्ष विक्रमा सिंह, प्रखंड अध्यक्ष, अजय पासवान, नगर अध्यक्ष मोहम्मद अली उर्फ डबली, रामसुंदर मेहता,नाशीम खान अफरोज आलम,अधिवक्ता श्याम नारायण राम, मिथिलेश पासवान ने छठव्रतियों के बीच नारियल, केला, सेव, सुप समेत कई पूजन सामग्री का वितरण किया। मौके पर आनंद सिंह ने सभी लोगों को छठपूजा की शुभकामनाएं देते हुए कहा की छठपर्व की महान महिमा है। मौके पर संजय विश्वकर्मा, गुड्डू कुमार, मनुउर आजाद, समेत लोजपा के कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

चनेया नवयुवक कमेटी की ओर से कराई गई छठ घाट का सफाई

नावा बजार। प्रखंड क्षेत्र के चनेया नवयुवक कमेटी की ओर से शनिवार को छठ घाट की सफाई कराई गई। साथ हीं व्रतियों को किसी भी तरह की परेशानी का सामना ना करना पड़े इसे लेकर स्थानीय युवा समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं। कमेटी के लोगों ने बताया कि व्रतियों के बीच पूजन सामग्री का भी वितरण किया जायेगा। अर्घ्य देने के लिए दूध की व्यवस्था भी कमेटी की ओर से की जायेगी। गांव के सभी तरह के धार्मिक कार्यों में नवयुवक कमेटी के सदस्यों द्वारा समर्पित होकर उत्साह के साथ कार्य किया जाता रहा है।

छठ पर्व को लेकर तालाब, नदी की हुई साफ सफाई

पाटन। प्रखंड में आस्था का पर्व छठ महा पर्व को लेकर विभिन्न जगहों पर साफ सफाई की जा रही है जिसमे किशनपुर पंचायत के कुम्हवा में जिला परिषद के विधायक प्रतिनिधि उमेश सिंह, पंचायत समिति सदस्य मनोरंजन गिरी के द्वारा कुम्हवा मे छठ घाट की साफ-सफाई करवाई गई। साफ सफाई अभियान में न्यू स्टार क्लब किशनपुर के मनीष चौधरी विशाल कश्यप छोटू चौधरी नंदन गुप्ता शिवम कश्यप रंजीत कुमार राहुल रजक, लकी गुप्ता, शशि भूषण चौरसिया समेत सम्मानित सदस्य शामिल थे।

नगर अध्यक्ष ने किया सफाई कर्मियों के बीच वस्त्र का वितरण

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हुसैनाबाद नगर अध्यक्ष शशि कुमार ने शनिवार को नगर पंचायत के सफाई कर्मी जो छठ व्रत कर रहे हैं उनके बीच वस्त्र का वितरण किया। इस मौके पर महिला सफाई कर्मी को साड़ी एवम पुरुष सफाई कर्मी को धोती दिया गया। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष शशि कुमार ने कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ व सुंदर बनाने में सफाई कर्मियों की भागीदारी अहम है। सफाई कर्मी जब स्वस्थ रहेंगे तो शहर भी स्वच्छ होगा। उन्होंने कहा कि मानवता से बढ़ कर कोई सेवा नहीं है। हमारे नगर पंचायत के सफाईकर्मी पूरी ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपना कार्य करते हुए नगर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मी भी श्रद्धा के साथ छठ मना सकें। इसको लेकर यह पहल की गयी है। उन्होंने कहा कि छठ मैया व भगवान भास्कर के असीम कृपा से क्षेत्र में समृद्धि व खुशहाली आए यही कामना है। नगर अध्यक्ष ने छठ पूजा के शुभ अवसर पर नगर पंचायत के समस्त कर्मियों समेत शहर वाशियों को पूजा की शुभकामनाएं दी है। मौके पर प्रदीप पटेल, सफाई जमादार अवधेश राम समेत कई सफाईकर्मी मौजूद थे।

एके सिंह कॉलेज के प्रोफेसर ने छठ पूजा पर की विवादित टिप्पणी पोस्ट

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिला के हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के एके सिंह कॉलेज के प्रोफेसर राम सुभाग सिंह द्वारा सोशल मीडिया व फेसबुक पर महापर्व छठ पूजा से संबंधित विवादित पोस्ट की है। इस पोस्ट के बाद लोगों में उस प्रोफेसर के प्रति काफी नाराजगी व्यक्त है। जिससे लोगों में धार्मिक भावना को काफी ठेस पहुंची है। वहीं इस मामले की शिकायत लोगों ने अनुमंडल क्षेत्र के देवरी ओपी और कॉलेज के सचिव रौनक सिंह से की है। प्रोफेसर ने अपने पोस्ट में लिखा है कि छठ पर्व बहिष्कार आंदोलन में जुड़कर पुण्य के भागी बने, समेत कई गलत टिप्पणी पोस्ट कर आम हिंदुओं की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाया है। जिसे आम हिंदू इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। लोगों ने पुलिस प्रशासन और सचिव से इस प्रोफेसर पर कार्रवाई की मांग की। क्योंकि इस प्रोफेसर के साथ कॉलेज की छवि भी धूमिल हुई है। **सचिव ने प्रोफेसर से मांगा जवाब :** इस मामले को लेकर कॉलेज के सचिव रौनक सिंह ने लोगों से कहा कि इस पोस्ट को गंभीरता पूर्वक लेते हुए तत्काल एक नोटिस जारी कर राम सुभाग सिंह से इस मामले में सात दिनों के अंदर जवाब मांगा गया है। वहीं हुसैनाबाद के थाना प्रभारी जगन्नाथ धान के निर्देश पर थाना के एसआई सौरभ कुमार ने उसके मोबाइल पर संपर्क कर इस मामले की जानकारी मांगी। तो प्रोफेसर ने बताया की मैं मेदिनीनगर में आया हूं। मेरे द्वारा जो फेसबुक पर पोस्ट किया गया था। उसे डिलीट कर दिया हूं। सौरभ कुमार ने उन्हें तत्काल टाउन थाना जाकर अपनी बात रखने का आदेश दिया है। इस मामले में स्थानीय विधायक कमलेश कुमार सिंह ने कॉलेज के प्रबंधन से राम सुभाग सिंह पर कड़ी कार्रवाई करने को कहा है।

समाजसेवी ने आधा दर्जन छठ घाटों की सफाई कराई

नवीन मेल संवाददाता

हरिहरगंज । पिपरा प्रखंड क्षेत्र के बभंडी पंचायत के समाजसेवी पिंटू कुमार सिंह ने पंचायत अंतर्गत धवतर, बभंडी, सोनवे, तरवन कला, गहोरा आदि गांव स्थित बतरे नदी छठ घाट की सफाई शनिवार को जेसीबी मशीन लगाकर समर्थकों के साथ किया। इस दौरान घाट पर पसरी गन्दगी को जेसीबी के द्वारा साफ कराया गया। पिंटू कुमार सिंह ने बताया कि छठ घाट पर व्रतियों व श्रद्धालुओं के लिए घाटों की साफ-सफाई की जा रही है। ताकि व्रतियों को दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़े। मौके पर कमलेश प्रजापति, हरिओम गुप्ता, लखन साव, मनदीप यादव, रघुनंदन मेहता, धर्मदेव मेहता, अभय रजक, सुनील पंडित, जैकी रंजन, उत्तम कुमार ,अरविंद कुमार ,राहुल कुमार ,शंकर कुमार, चंदन कुमार ,धीरज कुमार सहित कई लोग शामिल थे।

छठ महापर्व में भी एसबीएस इंटर कॉलेज में नही मिला वेतन

प्रबंधन कमिटी व एकांउन्टेट की लापरवाही के शिकार हुए सभी कर्मी

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू सरकार के सचिव का आदेश था कि पर्व त्यौहार को देखते हुए सभी इंटर कॉलेज के सभी कर्मियों को वेतन भुगतान किया जाय परन्तु शाहिद भगत सिंह इंटर कॉलेज जपला में प्रबंधन कमीटी (शासी निकाय) की उदासीन रवैया एवं कॉलेज के व्यय रोकड़पाल अरुण कुमार सिंह के तानाशाही रवैया के कारण कॉलेज कर्मियों को वेतन नही मिला है। प्राप्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सरकार द्वारा आदेश प्राप्त हुई थी, लेकिन वेतन के इंतजार में शिक्षक तथा अन्य कर्मी के घर मे त्यौहार की तैयारी थी। लेकिन 29 अक्टूबर को बैंक बन्द होने वाला हैं और सभी लोग वेतन के इंतजार में टकटकी लगाये बैठे हैं लेकिन पता चला की वेतन नही गया हैं इस सबन्ध में कॉलेज के प्राचार्य सचिता नंद तिवारी ने बताया कि मैं समय पूर्व ही वेतन बनाकर बैंक भेजने का आदेश व्यय लेखपाल अरुण कुमार सिंह को दिया था। लेकिन क्यो नही गया इसका कारण मुझे पता नही हैं। हम उन से बात करते है शिक्षकों तथा अन्य कर्मियों का वेतन जल्द होगा। अब मामला यह हैं कि क्या कॉलेज में अरुण कुमार सिंह के ऊपर कोई नही हैं या फिर कॉलेज के प्रबन्धक कमिटी ही इस लापरवाही का सरपरस्त हैं क्यो की छठ महा पर्व हिंदुओ के आस्था का बड़ा त्यौहार सभी लोगों की आशा रहती हैं कि मेरा मेहनत का पैसा मिलेगा, जिससे घर व परिवार के लोगो में उत्साह रहता हैं लेकिन वेतन नही मिलने से सभी लोगो के घर मे इस त्यौहार में फीका पड़ता हुआ नजर आया।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग,
भवन प्रमण्डल, डालटनगंज

निविदा शुद्धि–पत्र

इस कार्यालय द्वारा निर्गत निविदा आमंत्रण सूचना, जिसका पी0आर0 नं0– PR 280472 Building(22-23)D है को अपरिहार्य कारणों से निविदा की तिथि परिवर्तित करते हुऐ निम्नलिखित नई तिथि पढ़ा जाय:–

1. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि एवं समय 01.11.2022 को (पूर्वाह्न 10:00 से अपराह्न 01:00 बजे तक)
2. मुहरबंद लिफाफा निविदा प्राप्त की तिथि एवं समय–02.11.2022 को अपराह्न 03:00 बजे तक
3. मुहरबंद लिफाफा निविदा खोलने की तिथि एवं समय–02.11.2022 को 03:30 बते अपराह्न तक

कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमण्डल, डालटनगंज

PR 281047 (Building)22-23*D

Government of Jharkhand
Office of the Executive officer, Nagar Panchayat Manjhiaon

Notice Inviting Tender
Very short time E-tender reference No- NPM/09/2022-23

Sl. N.	Tender ID	Head	Name of Work	Estimated value	Earnest Money	Tender Fee	Completion of work
1	UDHD/NPM/09/01/22-23	नागरिक सुविधा	Const. of RCC drain from Nandu Prajapati house to Aadit sharma house via Dukhan Chaudhary house Part- 1	1090800	21850	5000	60 Days
2	UDHD/NPM/09 /02/22-23	15वें वित्त	Const. of Ghat at Nag Baba pond, Amar (ward-09) under Nagar Panchayat Manjhiaon.	1231134	24650	5000	60 Days
3	UDHD/NPM/09/03/22-23	नागरिक सुविधा	Const. of RCC drain from Tin Muhan to Farm of Ramchandra Chaudhary at ward no 11	1087084	21750	5000	60 Days.
4	UDHD/NPM/09 /04/22-23	15वें वित्त	Const. of Chhath ghat and renovation of Pond near Surya Temple at ward no 03 .	2295000	45900	5000	60 Days.
1	Date of Publication of Tender on Website				01.11.2022 at 5:00 P.M.		
2	Last Date/Time for Receipt of e-tender on website				09.11.2022 till 5:00 P.M.		
3	Date of Opening e- tender				10.11.2022 at 4:00 P.M.		
4	Last Date of Receipt of hard copy cost of Bid Document & EMD				10.11.2022 till 3:00 P.M		
5	Name & Address Of Office inviting tender				Executive Officer, Nagar Panchayat Manjhiaon.		
6	Contact No. of Procurement officer				6201517767		
7	Helpline number of e- procurement cell				6207078704, 7979987072		

NOTE : Only E-Tender will be accepted. Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in & Notice board office of the Nagar Panchayat Manjhiaon.

Executive Officer
Nagar Panchayat Manjhiaon

PR 281073 (Urban Development) 22-23 (D)

Government of Jharkhand
Office of the Executive officer, Nagar Panchayat Manjhiaon

Notice Inviting re-tender
Very short time E-tender reference No- NPM/11/2022-23

Sl.N.	Tender ID	Head	Name of Work	Estimated value	Earnest Money	Tender Fee	Completion of work
1	UDHD/NPM/11 /01/22-23	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Muni Chaudhary house to Lalan Saw house at ward no 06.	2125200	42600	5000	60 Days
2	UDHD/NPM/11/02/22-23	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Jalminar to Vinay Pandey house to Tin Muhan tak via Yogeshwar Thakur at Ward no 04.	1112900	22300	5000	60 Days.
3	UDHD/NPM/11/03/22-23	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Yogendra Mali house to Sarswati Kunwar house via Vijay Ram house at Ward no 06.	1152000	23100	5000	60 Days.
4	UDHD/NPM/11 /04/22-23	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Nandu Ram hoiuse to Manoj Ram house at Ward no 02.	1028100	20600	5000	60 Days.
1	Date of Publication of Tender on Website				01.11.2022 at 5:00 P.M.		
2	Last Date/Time for Receipt of e-tender on website				09.11.2022 till 5:00 P.M.		
3	Date of Opening e- tender				10.11.2022 at 4:00 P.M.		
4	Last Date of Receipt of hard copy cost of Bid Document & EMD				10.11.2022 till 3:00 P.M		
5	Name & Address Of Office inviting tender				Executive Officer, Nagar Panchayat Manjhiaon.		
6	Contact No. of Procurement officer				6201517767		
7	Helpline number of e- procurement cell				6207078704, 7979987072		

NOTE : Only E-Tender will be accepted. Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in & Notice board office of the Nagar Panchayat Manjhiaon.

Executive Officer
Nagar Panchayat Manjhiaon

PR 281075 Urban Development(22-23).D

खरना के साथ ही 36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। लोक आस्था के चार दिवसीय पर्व खरना पूजा के साथ 36 घंटे के निर्जला व्रत की शुरूआत शनिवार से हो गई। व्रतियों ने खरना के दिन छठी माता के दूसरे स्वरूप मां अन्नपूर्णा की पूजा अर्चना कर प्रसाद ग्रहण किया। छठी माता के गीत के बीच व्रतियों के साथ घर के सदस्यों ने श्रद्धापूर्वक पूजा किया। सुबह से ही स्थानीय कोयल नदी में छठ व्रतियों ने स्नान कर सूर्य को जल अर्पित किया और शाम के खरना के लिये जल लाये। छठ महापर्व के दूसरे दिन छठव्रतियों द्वारा सायं कालीन समय में छठ माई की विधिविधान से पूजन करते हैं और सूर्य भगवान को नमन करते हैं। वहीं, सायं कालीन समय में रोटी और साठी चावल से बनी खीर का भोग लगाया गया और केले के पत्ते पर दिया जलाकर पूजन किया गया। जबकि छठव्रती आज से ही निर्जला व्रत रखते हैं। इस अनुष्ठान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रयोग होने वाले सामग्रियों में सभी मौसमी फल, साठी चावल, दूध के साथ 56 प्रकार के व्यजनों और फलों का प्रयोग होता है। मुख्यत यह सूर्य उपासना का पर्व है, जो चार दिन तक होता है।

प्रत्येक दिन का महत्व : छठ पूजा में प्रत्येक दिन का महत्व होता है। जिसमें प्रथम दिन कद्दू की सब्जी, चने की दाल और चावल का भोग लगाया जाता है। इसे छठ व्रती पवित्र नदियों का जल लाकर प्रसाद बनाते हैं और इसे नहाय खाय का व्रत कहते है। वहीं, दूसरे दिन खरना होता है। इसमें खीर बनाई जाती है। जिसमें दूध, साठी चावल और गुड़ से बनाया जाता है और रोटी बनाई जाती है। इसी का भोग लगा कर प्रसाद ग्रहण किया जाता है और लोगों को दिया जाता है। छठ महापर्व को शुद्धता का पर्व भी कहा जाता है। लोग इस पर्व में शुद्धता पर काफी ध्यान देते हैं। तीसरे दिन अस्ताचलगामी भगवान भास्कर को नदी तालाबों और पोखरे के जल में खड़े होकर अर्ध्य दिया जाता है। जबकि चौथे दिन उदयाचल गामी भगवान भास्कर को अर्ध्य देने के साथ ही इस अनुष्ठान का समापन होता है। छठ पूजा को लेकर जिला प्रशासन, स्थानीय लोगों के द्वारा गंगा घाट, नदी और तालाबों में विशेष साफ-सफाई की गई है। जिले के सभी नदी और तालाबों के किनारे बने घाटों को काफी आकर्षक ढंग से सजाया गया है।

मुख्यत यह सूर्य उपासना का पर्व है, जो चार दिन तक होता है। प्रथम दिन कद्दू की सब्जी, चने की दाल और चावल का भोग लगाया जाता है। इसे छठ व्रती पवित्र नदियों का जल लाकर प्रसाद बनाते हैं और इसे नहाय खाय का व्रत कहते है। वहीं, दूसरे दिन खरना होता है। इसमें खीर बनाई जाती है, जिसमें दूध, साठी चावल और गुड़ से बनाया जाता है और रोटी बनाई जाती है। इसी का भोग लगा कर प्रसाद ग्रहण किया जाता है और लोगों को दिया जाता है।

पत्नी ने पति का काटा था प्राइवेट पार्ट,पत्नी का प्रेमी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिले के रामगढ़ थाना क्षेत्र अन्तर्गत 22 जून को पत्नी ने अपने प्रेमी की चाह में अपने पति के प्राइवेट पार्ट को काट दिया था। पूरी घटना के मास्टरमाइंड प्रेमी को पलामू पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। प्रेमी एक वर्ष से फरार था और दिवाली के दौरान अपने घर आया हुआ था। घर आने के बाद भी प्रेमी फरार चल रहा था। पुलिस को सूचना मिली थी कि आरोपी प्रेमी रामगढ़ थाना क्षेत्र के कुटी के इलाके में आने वाला है। इसी सूचना के आलोक में रामगढ़ थाना प्रभारी प्रभात रंजन राय ने छापेमारी कर आरोपी प्रेमी सतेंद्र रवि को गिरफ्तार कर लिया। सतेंद्र रवि को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। पूछताछ में उसने पुलिस को कई जानकारियां दी है। जानकारी के अनुसार पलामू जिले के रामगढ़ थाना क्षेत्र के नावाडीह में जून 22 जून 2022 को मनीता देवी नामक महिला ने अपने पति सूरज भुइयां के प्राइवेट पार्ट को काट दिया था। यह पूरी घटना मनीता देवी ने अपने प्रेमी सत्येंद्र रवि के कहने पर अंजाम दिया था। पुलिस ने पूरे घटना के आरोप में मनीता देवी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। पुलिस के अनुसंधान में यह बात निकलकर सामने आई थी कि मनीता देवी और सत्येंद्र रवि के बीच प्रेम संबंध था। सत्येंद्र गढ़वा के रंका के इलाके का रहने वाला है। मनीता देवी और सतेंद्र रवि एक ही गांव के रहने वाले है। दोनों के संबंधों की जानकारी सूरज भुइयां को हो गई थी। सूरज भुइयां मामले में प्रताड़ित करते रहता था। पुलिस अनुसंधान में यह बात सामने आई है कि घटना के दिन मनीता देवी और सत्येंद्र रवि 16 घंटे तक एक दूसरे से बात किया था। घटना के दिन सूरज भुइयां एक शादी समारोह से लौटा था।

टेंडर भरने से रोकने की जानकारी मिलते ही एसपी पहुंचे जिला परिषद कार्यालय

पुलिसकर्मियों को लगाई फटकार, कहा- टाउन थाना के सभी कर्मियों को कर देंगे निलंबित

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिले के 8 प्रखंडों में उप स्वास्थ्य केंद्र के निर्माण को लेकर शुक्रवार को स्थानीय जिला परिषद कार्यालय में निविदा डालने की अंतिम तिथि थी। एक उप स्वास्थ्य केंद्र की लागत 55 लाख रूपया है। इस क्रम में कुछ लोगों ने निविदा डालने रांची से आये एक व्यक्ति को रोकना चाहा । उस व्यक्ति ने तत्काल अपने परिचित उप विकास आयुक्त मेघा भारद्वाज से संपर्क कर टेंडर भरने से रोके जाने की जानकारी दी। इसके बाद मेघा भारद्वाज ने पलामू एसपी को पूरी जानकारी दी। पलामू एसपी चंदन कुमार सिन्हा ने जैसे ही सुना की टेंडर भरने के लिए रोका जा रहा है। उन्होंने अपने लाव लश्कर के साथ जिला परिषद कार्यालय पहुंचे। एसपी के जिला परिषद अभियंता से पूरी वस्तु स्थिति की कार्यालय पहुंचते ही टेंडर देने से जानकारी लिया। एसपी के पहुंते ही रोकने वाले लोग फरार हो गए। एसपी ने परिषद के मैदान में खड़े संवेदको को बुलवाया और चेतावनी दिया कि यदि टेंडर भरना है तो टेंडर भरें। इसके बाद यहां से मैदान खाली कर दें। इस क्रम में एसपी ने जानना चाहा कि कौन लोग टेंडर देने से रोक रहे थे। एसपी ने वहां तैनात टाउन थाना के दरोगा से पूछा कि तुम कब से हो, थानेदार ने जैसे ही कहा कि मैं दिन में 1:00 बजे से हूं। एसपी ने कहा कि टेंडर कितने बजे से होता है। इसके बाद एसपी ने टीओपी एक के प्रभारी रेवा शंकर राणा को फटकार लगाते हुए कहा कि जब टेंडर का समय सुबह 10:00 बजे से है तो सुरक्षाकर्मी 1:00 बजे क्यों आये। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि पूरे टाउन थाना को सस्पेंड कर देंगे। हालांकि एसपी के पहुंचने के बाद टेंडर भरने से रोकने वाले लोग फरार हो गए।

किसी तपस्या से कम नही छठ महापर्व,आज अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। चार दिवसीय छठ महापर्व का आज तीसरा दिन है। इसी क्रम में आज अस्ताचलगामी सूर्य को महापर्व का पहला अर्घ्य अर्पित किया जायेगा। सोमवार सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ ही सूर्योपासना के इस महापर्व का समापन होगा। छठ पूजा एक ऐसा त्योहार है, जो पूरे बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में पूरे जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। छठ के जगह-जगह गूंज रहे गीतों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया है। छठ पूजा के पावन पर्व पर भगवान सूर्यदेव को प्रथम अर्घ्य शुक्रवार की शाम 5:16बजे दिया जायेगा। वहीं अरुणोदयकालीन अर्घ्य शनिवार की सुबह 5:58 बजे दिया जायेगा।आज के दिन प्रसाद तैयार करने के बाद शाम को पूरी तैयारी और व्यवस्था कर बांस की टोकरी में अर्घ्य का सूप खूबसूरती के साथ सजाया जाता है। व्रती के साथ-साथ परिवार व पड़ोस के लोग भी अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के लिए घाट पर जाते हैं। सभी छठव्रती एक तय तालाब या नदी के किनारे इकट्ठा होकर सामूहिक रूप से भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर दान करते हैं। इस पर्व में व्रती नए कपड़े बिना सिलाई वाली पहनती हैं। इस व्रत को उठाने के बाद तब तक करना पड़ता है जब तक कि कोई अगली पीढ़ी इसके लिए तैयार न हो जाए। अधिकतर महिलाएं संतान की चाहत व उसकी कुशलता के लिए यह व्रत करती हैं। बता दें कि छठ पर्व के दूसरे दिन जलार्पण के बाद छठव्रतियों ने गंगा घाटों पर रोटी व खीर से खरना का प्रसाद बना विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। सबसे पहले व्रतियों ने प्रसाद ग्रहण किया। फिर परिवार के लोगों व संबंधियों के बीच प्रसाद का वितरण हुआ। नदी में स्नान करने से पहले व्रतियों ने गंगा जल लाकर अपने घरों को धोकर पवित्र किया और खरना ले लिए खीर बनाकर सूर्य देव को भोग लगाया और प्रसाद ग्रहण किया।

तपस्या से कम नही है ये महापर्व : छठी मैया की उपासना का महापर्व शुक्रवार से शुरू हो गया है। इस त्योहार में भगवान सूर्य की पूरे विधि-विधान से पूजा की जाती है। सोमवार को नहाय खाय के साथ जिले में इस पर्व की शुरूआत हुई। किसी भी तपस्या से कम नही है। ये महापर्व जिसमे हर वक्त पूरे साफ सफाई और सादगी के साथ व्रतियों को रहना पड़ता है। बिहार, झारखंड के कुछ इलाकों और पूर्वी उत्तर प्रदेश में इस महापर्व को बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। छठ के दौरान व्रती लगभग 36 घंटे का व्रत रखते हैं और छठी मैया और सूर्यदेव की पूजा-अर्चना की जाती है। छठी मैया सूर्य देव की मानस बहन हैं। नहाय खाय की परंपरा को निभाते हुए सोमवार को महिलाएं स्नान करने के बाद सूर्य की उपासना करती हैं और व्रत का संकल्प करती हैं। इस परंपरा के अनुसार सबसे पहले घर की सफाई कर उसे शुद्ध किया जाता है। जिसके बाद छठ व्रती सदस्यों के भोजन करने के बाद ही भोजन ग्रहण करते हैं। भोजन में कद्दू, चने की दाल और चावल का सेवन किया जाता है।

36 घंटों तक निर्जल उपवास : चार दिनों तक चलने वाले इस पर्व में संतान प्राप्ति और अपने बच्चों की मंगलकामना के लिए महिला और पुरुष दोनों व्रत रखते हैं। हालांकि ज्यादातर महिलाएं ही इस व्रत को रखती हैं। व्रत में 36 घंटे तक निर्जल उपवास रखा जाता है। छठ पूजा की शुरूआत नहाय-खाय से होती है। यह त्योहार 11 नवंबर की सुबह सूर्य को अर्घ्य देने के साथ संपन्न होगा। यह एक ऐसा पर्व है, जो वैदिक काल से चला आ रहा है। छठ पर्व मुख्य रूप से ऋषियों द्वारा लिखी गई ऋग्वेद में सूर्य पूजन, उषा पूजन और आर्य परंपरा के अनुसार मनाया जाता है। छठ पूजा सूर्य, उषा, प्रकृति, वायु, जल और छठी मैया को समर्पित है। छठ में कोई मूर्ति पूजा शामिल नहीं होती है।

परशुराम सेना ने छठ को लेकर जारी किया आपातकाल नंबर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। राष्ट्रीय परशुराम सेना युवा वाहिनी के सदस्य शहर के सभी छठ पर आपातकाल के लिए तैनात रहेंगे । शनिवार को युवा वाहिनी के पदाधिकारी व सदस्य शहर के विभिन्न छठ घाट की निगरानी करने निकले और आपातकाल के लिए 7004918886,7762896467 दो नंबर जारी किया। छठ घाट भ्रमण के क्रम में छठ व्रतियों की सुविधा के मद्देनजर कई निर्णय लिया गया। युवा वाहिनी के द्वारा शहर के सभी छठ घाट पर चेंजिंग रुम की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी परशुराम सैनिक को तत्पर रहने का निर्देश दिया गया। घाट निरीक्षण के क्रम में अमानत छठ घाट व पंडित चंद्रशेखर आजाद चौक पर वृहद् स्तर पर फल व पूजन सामाग्री के वितरण की व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान युवा वाहिनी के प्रदेश कोर कमेटी के सदस्य नवीन तिवारी, प्रदेश संरक्षक आशीष भारद्वाज, प्रदेश अध्यक्ष सोनू मिश्रा, अनुशासन समिति के प्रदेशध्यक्ष संतोष तिवारी, प्रदेश कार्यालय प्रभारी ज्ञानेश तिवारी, प्रमंडलीय संगठन प्रभारी पंडित चंदन तिवारी, जिला प्रभारी मनीष तिवारी, जिलाध्यक्ष विकास दूबे, नगरध्यक्ष सीपी शुक्ल, राकेश पांडेय, अविनाश दूबे आनंद प्रकाश दूबे व विक्रांत त्रिपाठी सहित कई सदस्य मौजूद थे।

डीसी-एसपी ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। उपायुक्त आंजनेयुलू दोड्डे व पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार सिंहा ने शनिवार को लोक आस्था के महापर्व छठ के मद्देनजर कोयल नदी तट के टाउन हॉल व सिंगरा के अमानत नदी तट घाटों का निरीक्षण किया। अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के क्रम में साफ-सफाई, लाइटिंग व्यवस्था, पानी में बैरिकेडिंग, ट्रैफिक व्यवस्था, वाहन पार्किंग सहित छठ व्रतियों एवं श्रद्धालुओं के आवागमन आदि की सुविधाओं का जायजा लिया गया। इस दौरान उपायुक्त ने विभिन्न घाटों में पर्व के मद्देनजर स्वच्छता के व्यापक प्रबंध रखने का निर्देश अधिकारियों को दिया। वहीं पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार सिंहा ने पुलिस कर्मियों को सुरक्षा का व्यापक इंतजाम रखने हेतु निर्देशित किया। उपायुक्त ने मौके पर मौजूद अधिकारियों से छठ घाटों पर छठ व्रतधारियों की सहूलियत का ध्यान रखते हुए सभी जरूरी व्यवस्थाओं को समय पर पुख्ता करने की बात कही। छठ घाटों के निरीक्षण के क्रम में डीसी एवं एसपी के साथ सहायक समाहर्ता विसपुते श्रीकांत, सदर एसडीओ राजेश कुमार साह, सदर एसडीपीओ सुरजीत कुमार सिंह समेत अन्य उपस्थित रहे।

न्यूज गैलरी

मुख्यमंत्री बेरोजगारों व छात्रों पर मानवीय संवेदना दिखायें: किशोर

मेदिनीनगर। अभिभावक संघ के प्रदेश अध्यक्ष एवं सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता किशोर कुमार पांडेय ने कहा है कि 44 दिन से चल रही राजस्व उपनिरक्षकों की हड़ताल शीघ्र समाप्त कराने की आवश्यकता है। झारखंड सरकार इस और ध्यान देना जरूरी नहीं समझ रही है। जिस कारण आज राजस्व उप निरीक्षकों की हड़ताल से आय, आवासीय, जाति प्रमाण पत्र, ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र, वृद्धा पेंशन,विकलांग पेंशन, सीमांकन का कार्य व भूमि से संबंधित चेक स्लिप का कार्य बाधित है। उन्होंने कहा कि जाति प्रमाण पत्र और ईडब्ल्यूएस की समस्या के कारण छात्र और बेरोजगार भी परेशान हैं। अभी तक लगभग 48लाख आवेदन लंबित है, लेकिन राज्य की सरकार इस पर सोई हुई है और कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। लेकिन ऐसा कहीं नजर नहीं आ रहा। अंचल निरक्षक और वह भी राजस्व निरीक्षक का कार्य करने को तैयार नहीं है। छात्रों और बेरोजागर युआवों के साथ- साथ आम जनता भी इस समस्या से त्रस्त है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग किया है कि शीघ्र इस समस्या का निदान करने का प्रयास करें।

वार्ड प्रत्याशी ने कराई सड़क की मरम्मत

मेदिनीनगर। शहर के बैरिया- निमियां नगर निगम वार्ड 3 के प्रत्यशी राकेश कुमार सिंह ने लोक आस्था का महापर्व छठ को लेकर बैरिया निमियां मे स्थित सभी छठ घाट की सफाई एवं मरम्मत करवाया। टीवी टावर से लेकर सत्संग मंदिर सहित बैरिया के कई सड़कों की मरम्मत व बैरिया के कई स्ट्रीट लाइट की मरम्मत करवाया । यह सभी कार्य राकेश ने अपने निजी खर्च से किया है और बताया कि बैरिया मे कई सड़क बहुत ही ज्यादा जर्जर थी । रोजाना किसी न किसी प्रकार की दुर्घटना के लोग शिकार होते रहते थे। मै छठ महापर्व को लेकर बैरिया निमियां मे हर घर जाकर प्रसाद का भी वितरण करूँगा । पिछले कई दिनों से वार्ड 3 के ग्रामीणों के लिए मैं हर संभव समस्या का समाधान करने मे लगा हूं और आगे भी करते रहूंगा।

भाकपा जिला सचिव ने चोरी की घटना का किया निंदा

मेदिनीनगर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव सह राष्ट्रीय परिषद सदस्य रुचिर कुमार तिवारी ने रेड़मा बैरिया बाईपास रोड सड़क के किनारे ट्रक खड़ा कर 3 से 4 घंटे के बीच दुकान के सामान को चोरी कर लेने की घटना पर आश्चर्य व्यक्त किया है । उन्होंने जिला प्रशासन की भूमिका पर भी सवाल खड़ा किया है। जिस प्रकार से मेन शहर में 4 घंटा तक ट्रक खड़ा करके चोरी की घटना को अंजाम देता रह गया और पलामू जिला प्रशासन उस 4 घंटा के दरमियान चोर को नहीं पकड़ पाया। इससे शहर के व्यवसायियों में भी दहशत व्याप्त है एवं अपने सम्पति की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। पलामू जिला प्रशासन को पीसीआर वैन मिला हुआ है कि वह रात में 1 -1घंटे के दरमियान शहर के मुख्य मार्गो में प्रतिदिन गस्ती करें । परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि पीसीआर वैन केवल पलामू जिला प्रशासन के शोभा बढ़ाने के लिए रखा गया है । ऐसी स्थिति में प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त बनाने के लिए एवं मेदिनीनगर नगर निगम के व्यवसायियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए उनकी संपत्ति की सुरक्षा प्रदान करने के लिए पलामू एसपी विशेष रुप से बैठक कर गश्ती दल को दुरुस्त करें । ताकि छठ महापर्व के इस त्योहार में शहर के व्यवसायी एवं आम आदमी अमन चैन से सो सके, और अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें।

नाली निर्माण अनियमितता के कारण छठ में भी बनी है नारकीय स्थिति: प्रिन्स

मेदिनीनगर। तरहसी प्रखंड मुख्यालय के घनी आबादी वाली बस्ती में नाली निर्माण में अनियमत्ता के कारण नारकीय स्थिति हो गई है। इस नाली का निर्माण जो लाख की लागत से लगभग 6 वर्ष पूर्व विधायक बिटू सिंह जी के कोटे से हुआ था। कुछ समय मुखिया मध्यमा सिंह थे। संवेदक अनूप जायसवाल ने तरहसी के घनी आबादी वाले क्षेत्र में नाली निर्माण कराया था, ताकि जल-जमाव ना हो सके, लेकिन नाली कुछ ही महीनों में तरहसी के विकास की पोल खोल कर रख दी। मुखिया पंकज सिंह और पंचायत समिति सदस्य प्रिया कुमारी जो की प्रमुख हैं । इसमें से किसी का कोई पहल नही दिख रहा ,अगर वह चाहते तो इस नाले को दुरुस्त करा सकते थे,लेकिन उन्होंने नही कराये। लोक आस्था का महापर्व छठ है । छठ पूजा करने वाले लोग उस नाले के पानी को पार कर के ही जाना है। आईपीएल जिला उपाध्यक्ष प्रिन्स पाण्डेय ने कहा कि अगर इन लोगों से नही हो पा रहा हैं तो वो इस्तीफा दें।

रेल यूनियन ने छठ व्रतियों के बीच किया आम लकड़ी का वितरण

मेदिनीनगर। रेल यूनियन एवं टीटीई स्टाफ के द्वारा छठ महापर्व को लेकर शनिवार को रेलवे कॉलोनी के नजदीक टीओपी 2 थाना के सामने माता कमला देवी चिल्ड्रन शेड में छठ व्रतधारियों के बीच आम की लकड़ी का वितरण किया गया। एडमिरल कलेक्टर सुजीत कुमार सिंह, टीओपी 2 के प्रभारी रूद्रानंद सरस, ट्रैफिक प्रभारी रामजीत सिंह, टीटीई स्टाफ व रेल यूनियन के तमाम पदाधिकारी संयुक्त रूप से व्रतधारियों के बीच आम की लकड़ी का वितरण किया। मौके पर एडमिरल कलेक्टर सुजीत कुमार सिंह ने रेलवे यूनियन एवं टीटीई स्टाफ की ओर से पहल किए गए इस कार्य की सराहना करते हुए कहा कि छठ महान पर्व है । इस व्रत में आम की लकड़ी की विशेष आवश्यकता पड़ती है । व्रतियों के लिए आम की लकड़ी उपलब्ध कराना बड़ा पुण्य का काम है। उन्होंने खासतौर पर डीटीई इंस्पेक्टर बीएम पांडे को इस कार्य के लिए सराहना किया । उन्होंने लोगों से इस छठ महापर्व को मिल-जुलकर उत्साह के साथ मनाने को कहा। टीओपी टू के प्रभारी रूद्रानंद सरस ने कहा कि छठ काफी लोकप्रिय पर्व है।

डिप्टी मेयर ने किया रेस्टूरेंट का उद्घाटन

मेदिनीनगर। शहर के रेड़मा चौक के पास शनिवार को लाजवाब फैमली रेस्टुरेंट का उद्घाटन किया गया। रेस्टुरेंट का उद्घाटन नगर निगम के डिप्टी मेयर मंगल सिंह ने फीता काट कर किया। मौके पर उपस्थित रेस्टुरेंट के प्रोप्राइट रंजीत सोनी ने बताया कि उनके रेस्टुरेंट में बाहर से आये कारीगरों के द्वारा स्वादिष्ट व्यंजन बनाई जा रही है । ग्राहकों को बाजार से सस्ते दरों पर सभी तरह की स्वादिष्ट व्यंजन उपलब्ध कराया जायेगा।

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई)
विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक सांविधिक निकाय
चौथा तल, सेवा भवन, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110066 (भारत)
Website: www.beeindia.gov.in, फोन: 011-26766700

सार्वजनिक सूचना

कुछ विनिर्माता बीईई के अधिकृत स्टार लेबल के बिना एलईडी बल्ब बेच रहे हैं, जो ऊर्जा संरक्षण अधिनियम की धारा 14 का उल्लंघन है। इसलिए, यह सलाह दी जाती है कि खरीदारी करने से पहले हमेशा उत्पादों के स्टार लेबल की जाँच करें।

उत्पाद पर प्रदर्शित स्टार लेबल की प्रामाणिकता की जाँच करने के लिए, बीईई के पोर्टल पर जाएं।

अधिकृत लेबल

अनधिकृत लेबल

www.beestarlabel.com/SearchCompare

CBC 34106/12/0008/2223

ऊर्जा दक्षता के लिए हमेशा बीईई स्टार रेटेड उपकरणों को प्राथमिकता दें

न्यूज गैलरी

बांसडीह गांव में छठ व्रतियों को भिक्षा दे रही महिला की हुई मौत

केतार। केतार थाना क्षेत्र के बांसडीह गांव में शनिवार की सुबह अवध साह की 25 वर्षीय पत्नी नीलम देवी की मौत हो गई। मृतक के परिजनों ने बताया की नीलम घर के आंगन में छठ व्रतियों को भिक्षा दे रही थी। उसी वक्त अचानक आंगन में गीर पड़ी। परिजनों ने आनन फानन में इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया।इस घटना से एक ओर परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है वहीं गांव में मातम पसर गया है।छठ पर्व का उत्साह का माहौल अब गम में बदल गया। मृतक महिला का दो पुत्र हैं। मौके पर जिला परिषद सदस्य ज्वाला प्रसाद, समाजसेवी पंकज कुमार सिंह,मुखिया प्रतिनिधि कलेंदर पासवान, पुर्व मुखिया अनील पासवान, उप मुखिया प्रतिनिधि सतेन्द्र गुप्ता,प्रदीप गुप्ता मृतक के घर जाक कर शोक व्यक्त किया और परिजनों को ढांढस बढ़ाया। परिजनों ने बताया की महिला के मायके वालों के आने के बाद शव का अंतिम संस्कार किया जाएगा।

खरौंधी प्रखंड क्षेत्र में छठ महापर्व के दूसरे दिन छठ व्रतियों ने डूबते सूर्य को दिया अर्घ्य

खरौंधी(गढ़वा)। खरौंधी प्रखंड क्षेत्र के खरौंधी, मझिगावां, राजी, सुंडी, करिवाडीह चंदनी, सिसरी,अरंगी,कूपा पंचायत में लोक आस्था का छठ महापर्व हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। लोक आस्था का छठ महापर्व के दूसरे दिन छठ व्रतियों ने स्थानीय डोमनी नदी, पंडा नदी एवं तलाबों में स्नान कर डूबते भगवान भास्कर का अर्ध्य दिया। तत्पश्चात मान्यता के अनुसार छठ व्रतियों ने खीर, रोटी, फलहार ग्रहण कर करेंगी। इसके बाद निर्जला उपवास दो दिनों तक रहकर भगवान भास्कर की पूजा अर्चना करते हुए अर्ध्य प्रदान करेगी। प्रखंड क्षेत्र के समाजसेवीयों एवं जनप्रतिनिधियों के द्वारा छठ घाट पर साफ सफाई एवं सजावट की पूरी व्यवस्था की गई है। प्रशासन की ओर से पूरी मुस्तैदी से घाटों का निरीक्षण किया जा रहा है ताकि असामाजिक तत्वों से निपटा जा सके। सिसरी स्तिथ सूर्य मंदिर में छठ व्रतियों की काफी भीड़ देखी गयी।यहाँ हर बर्ष मेला का आयोजन किया जाता है।

छठ महापर्व के दूसरे दिन डूबते सूर्य को दिया अर्घ्य

मंझिआंव/गढ़वा। लोक आस्था का छठ महापर्व प्रखंड क्षेत्र एवं नगर पंचायत क्षेत्र में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। लोक आस्था का छठ महापर्व के दूसरे दिन छठ व्रतियों ने स्थानीय कोयल नदी में स्नान कर डूबते भगवान भास्कर का अर्ध्य दिया।तत्पश्चात मान्यता के अनुसार छठ व्रतियों ने खीर, रोटी,फलहार ग्रहण कर करेंगी। इसके बाद निर्जला उपवास दो दिनों तक रहेंगी। गौरतलब है कि वैश्विक महामारी कोविड-19 की वजह से दो वर्षों तक लोक आस्था का छठ महापर्व फीका रहा था परंतु वैश्विक महामारी से निजात मिलने के पश्चात 2 वर्षों के अनुरूप इस वर्ष छठ व्रत करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में अधिक वृद्धि हुई है लोग बड़े ही हर्षोल्लास से इस पर्व को शुद्धता एवं पवित्रता का ख्याल रखते हुए मना रहे हैं।

चिनिया में व्यवसायी अजीत प्रसाद ने 1000 नारियल का किया वितरण

चिनियां। प्रखंड मुख्यालय में लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा को लेकर दूसरे दिन शनिवार को चिनिया बाजार के व्यवसाय अजीत प्रसाद उर्फ पप्पू ने अपने दुकान के सामने छठ व्रतियों के बीच 1000 नारियल का वितरण किया है। उन्होंने बताया कि छठ महापर्व को लेकर लगभग 10 वर्षों से छठ व्रतियों के बीच पूजन सामग्री का वितरण करते आ रहे हैं। इससे हमें काफी शांति मिलती है। वही व्यवसाय महेंद्र प्रसाद, परवीन प्रसाद राहुल प्रसाद, बैजनाथ प्रसाद कल दुकान के राजू मंसूरी विश्वास प्रसाद अरविंद प्रसाद अजय कश्यप रुपेश प्रसाद केसरी ने छठ व्रतियों के बीच पूजन सामग्री का वितरण किया गया। छठ महापर्व को लेकर चिनियां के बाजारों में काफी चहल-पहल देखा जा रहा है पूजन सामग्री की सभी दुकानें सजे हुए हैं बाजार में काफी रौनक है। लोगों ने उत्साह पूर्वक अपनी अपनी खरीदारी करते दिख रहे हैं। चिनियां प्रखंड मुख्यालय सहित ग्रामीण इलाकों में भी आस्था का महापर्व छठ पूजा को लेकर चहल पहल है।

नगर पंचायत के अध्यक्ष पद भावी प्रत्याशी मारुतनंदन सोनी छठ व्रतियों के बीच आम का लकड़ी किया वितरण

मंझिआंव/गढ़वा। लोक आस्था के छठ महापर्व के पावन अवसर पर नगर पंचायत क्षेत्र के युवा ओबीसी गढ़वा जिला के प्रकोष्ठ अध्यक्ष युवा में नगर पंचायत के अध्यक्ष पद भावी प्रत्याशी मारुति नंदन सोनी के द्वारा निशुल्क आम का लकड़ी एवं छठ भर्तियों के लिए पूजा सामग्री किट्स वितरण किया गया। गौरतलब है कि पूजा सामग्री किट्स नगर पंचायत क्षेत्र के सभी वार्डों में डोर टू डोर युवा समाजसेवी मारुत नंदन सोनी के द्वारा स्वयं छठ ब्रतियों के बीच वितरण किया। पूजा सामग्री में पंचमेवा,नारियल अगरबत्ती धूप दीपक,माचिस तथा जरूरतमंद पूजा सामग्री शामिल है।

व्रतियों ने सुर्य नारायण वन छठ घाट पर स्नान कर भगवान भास्कर को दिया अर्घ्य

खरना के साथ 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू

सोमवार की सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य के साथ छठ महापर्व होगा सम्पन्न

नवीन मेल संवाददाता

केतार। सूर्या उपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा के दुसरे दिन शनिवार को छठ व्रतियों ने खरना का प्रसाद ग्रहण किया। छठ व्रतियों ने सूर्य नारायण वन छठ घाट पर स्नान कर भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर घर पहुंचकर परंपरा के अनुसार मिट्टी के चूल्हा पर आम के लकड़ी से खरना का प्रसाद बनाकर छठ व्रतियों ने प्रसाद ग्रहण किया। स्थानीय पंडा और सोन नदी, नारायण वन छठ घाट जलकुंड में छठ व्रतियों ने स्नान कर भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया। तीसरे दिन रविवार को छठ व्रती छठ घाट पर पहुंचकर विधी विधान से पुजा अर्चना कर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देंगे। वहीं पुरी रात सूर्य नारायण वन छठ घाट पर रहकर व्रत को पुरा करेंगें। और सोमवार की सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य के साथ छठ महापर्व सम्पन्न हो जायेगा। महापर्व को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों का माहौल पुरी तरह भक्ति मय हो गया है। चारों ओर छठ गीत से गांव घर गुंज रही है।

सूर्य नारायण वन छठ घाट पर सारी तैयारियां पूरी

लाईटिंग की व्यवस्था से जगमग कर रहा नारायण वन छठ घाट

सूर्य नारायण वन छठ घाट पर मंदिर कमिटी द्वारा सारी तैयारियां पूरी कर ली गई है। व्रतियों के स्नान के लिए तीन झारना लगाया गया है। नारायण वन छठ घाट परिसर को दुल्हन कि तरह सजाया गया है। लाईटिंग की व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरा, पेयजल, मेडिकल,सुरक्षा व्यवस्था सहित अन्य तैयारी पुरी कर लिया गया है।प्रखंड विकास पदाधिकारी मुकेश मछुआ ने सूर्य नारायण वन छठ घाट के लिए पंचायत राजीव पांच मजिस्ट्रेट प्रतिनियुक्त किया है।सूर्य नारायण वन में छठ व्रत करने के लिए झारखंड के अलावा बिहार उत्तरप्रदेश, छतिसगढ़,मध्यप्रदेश सहित अन्य राज्यों के लाखों छठ व्रती पहुंचते हैं। यहां पर स्थानीय लोगों की सहयोगी से करोड़ों रुपए की लागत से रथनुमा भगवान सूर्य का मंदिर बनाया जा रहा है।

युवा समाजसेवी ने चापाकल की करायी मरम्मती

श्री बंशीधर नगर। युवा समाजसेवी शोएब आलम उर्फ गुड्डू ने नगर पंचायत क्षेत्र के चेचरिया गांव (बनखेता मोड़) वार्ड संख्या तीन में जोखु खान के घर के पास खराब पड़े चापाकल का मरम्मती कराया। जानकारी के मुताबिक चापाकल काफी दिनों से खराब पड़ा हुआ था. चापाकल खराब होने की वजह से लोगों को पानी के लिए काफी दिक्कत होती थी.ग्रामीणों के द्वारा चापाकल मरम्मत के लिए समाजसेवी को जानकारी दिया। युवा समाजसेवी को जानकारी मिलने के बाद तत्काल रुप से चापाकल का मरम्मत कराया गया. चापाकल मरम्मत होने के बाद उस टोला के लोगों में काफी खुशी देखने को मिला। इस अवसर पर युवा समाजसेवी शोएब आलम उर्फ गुड्डू ने कहा कि ग्रामीणों के द्वारा चापाकल खराब होने की जानकारी हमें दिया गया था. जानकारी मिलने के बाद खराब पड़े चापाकल का मेरे द्वारा चापाकल मरम्मती कराया गया। मौके पर खुर्शीद खान, एहसान खान, शाहबाज खान,सद्दाम खान,इसराफिल खान,मंसूर खान, फुलटुन खान,सलाहुद्दीन खान सहित अन्य लोगों का नाम शामिल है।

मंत्री ने किया छठ घाटों का भ्रमण, दिया सहयोग राशि, कहा

लोगों के सहयोग के लिए हमेशा तत्पर हूं

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने शनिवार को विभिन्न छठ घाटों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न क्लबों को सहयोग राशि भी प्रदान किया। इस दौरान मंत्री ने दानरो नदी स्थित छठ घाट फ्रेंड्स क्लब, स्टूडेंट क्लब, टी ग्रुप, जागृति क्लब टंडवा, छठ सेवा समिति सहिजना, पुलिस लाइन स्थित छठ घाट आदि छठ घाटों का भ्रमण किया।

मौके पर मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि छठ महापर्व लोक आस्था का बड़ा महापर्व है। ग्उन्होंने कहा कि छठ महापर्व के लिए गढ़वा में विभिन्न क्लबों के पदाधिकारी एवं सदस्य सहित

प्रत्येक लोग पुरी लगन एवं परिश्रम का साथ जुड़कर कार्य करते हैं। सभी के अंदर इस महापर्व को अधिक से अधिक बेहतर आयोजन करने की लालसा होती है। लोग बढ़ चढ़ कर साफ, सफाई से लेकर प्रसाद वितरण आदि कार्यों में सहयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि छठी मैया का कृपा रहा तो लखनऊ गोमती रिवर फ्रंट के तर्ज पर दानरो नदी का विकास किया जाएगा। मंत्री ने छठी माता से गढ़वा की सुख, समृद्धि, शांति एवं खुशहाली की कामना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन में वे हमेशा गढ़वा वासियों के साथ खड़े हैं। अपनी क्षमता के अनुसार पुरी सहयोग करने को हमेशा तैयार हैं। मौके पर प्रवक्ता धीरज दुबे, अध्यक्ष तनवीर आलम, प्रतिनिधि कंचन साहू, जितेंद्र सिन्हा, मासूम रजा, उप विकास आयुक्त राजेश राय, सदर अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कार्यपालक पदाधिकारी अभियंता, विवेक सिंह, नवीन तिवारी, आयुष सिंह, टिंकू गुप्ता, फंटूश गुप्ता, विनोद जायसवाल सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

फोटो गैलरी

खरना से पूर्व घाट पर घाट पर अर्घ्य देते छठ व्रती

खरना का प्रसाद बनाती छठव्रती

बाजारों में सजी थी फलों की दुकानें, खुब हुई खरीदारी

शहर के कई छठ घाटों का डीसी ने किया भ्रमण

छठ पर्व के लिए गन्ना की दुकानों पर रही गहमागहमी

खरना संपन्न, अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य आज

नवीन मेल संवाददाता

विशुनपुरा/गढ़वा। लोक आस्था के महापर्व छठ के चार दिवसीय अनुष्ठान के दूसरे दिन शनिवार को छठ व्रतियों ने पूरी स्वच्छता व पवित्रता के साथ खरना किया। भगवान भास्कर की भक्ति में सराबोर श्रद्धालुओं ने सूर्यास्त के बाद विशेष प्रसाद बनाकर खरना पूजा किया। खरना के साथ ही व्रतियों का 36 घंटे तक का निर्जला उपवास शुरू हो गया है।

विशुनपुरा मुख्यालय के श्री विष्णु मंदिर स्थित तलाब, थाना स्थित बाकी नदी छठ घाट पर व्रती बड़ी संख्या में जुटे है। व्रती स्नान कर मिट्टी के बने चूल्हे में आम की लकड़ी जलाकर गुड़, दूध, चावल से बनी खीर बनाकर भगवान भास्कर की पूजा कर भोग लगाया और खुद भी प्रसाद ग्रहण किया। खरना के साथ ही पूरा माहौल भक्तिमय हो गया है। विशुनपुरा मुख्यालय सहित आस पास के गावो तक छठी मइया के प्रिय गीत गूंज रहे हैं।

अस्ताचलगामी सूर्य को आज अर्घ्य अर्पित करेंगे व्रती

रविवार को छठव्रती शाम को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित करेंगे। उसके बाद सोमवार को उदीयमान सूर्य के अर्घ्य देने के बाद ही श्रद्धालुओं का व्रत समाप्त हो जाएगा। छठ महापर्व को लेकर पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं. प्रखंड के सभी छठ घाटों को पूरी तरह सजाया संवारा गया है। पर्व को लेकर बाजार में काफी रौनक है। लोग पूजन सामग्री, फल अन्य सामान की खरीदारी करने में व्यस्त है।

आस्था का केंद्र चर्चित विष्णु मंदिर परिसर के छठ घाट पूरे प्रखंड में सबसे बड़ा घाट में जाना जाता है। यहां हजारो की संख्या में छठव्रती छठ करतें हैं। इस विष्णु मंदिर परिसर की छठ घाट जीवन ज्योति क्लब के द्वारा कराई जा रही है। क्लब के अध्यक्ष ललन गुप्ता ने जानकारी देते हुए कहा कि हजारो की संख्या में छठव्रती यहां छठ करने आते हैं उन सभी की सेवा में कई वर्षों से हमारा क्लब लाइटिंग, साफ सफाई, टेंट आदि व्यवस्था कराती आ रही है। इस वर्ष भगवान भास्कर की प्रतिमा नही बन पाने का दुख है। साथ ही कहा कि छठ पूजा मेला में जितने भी दुकानदार अपना ठेला चौपाल के इर्द गिर्द लागतें हैं उनसे आग्रह है कि आप सभी देवी धाम के पास अपना दुकान लगाएंगे ताकि छठव्रतियों को कोई दिक्कत ना हो सके।

ऑटो से टकरायी अनियंत्रित कार पीड़ित ने कार्रवाई की मांग की

नवीन मेल संवाददाता

भवनाथपुर। कपूरी चौक के समीप रिमझिम मोबाईल दुकान के सामने लगी दुकानदार संतोष कुमार का मालवाहक टेंपू में शुक्रवार की रात्रि में अनियंत्रित कार के जोरदार धक्का मारने से जहां टेंपू और कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गये। वहीं बिजली के पोल तथा राधेश्याम गुप्ता का मकान तथा दुकान के सामने लगे सीट को भी नुकसान हुआ है। हालांकि इस घटना को लेकर टेंपू मालिक संतोष कुमार ने इसकी सूचना स्थानीय थाने को दे दी है,लेकिन प्रशासन द्वारा अब तक कोई कारवाई नहीं किया गया है। जिसकारण से कार मालिक ने अपनी गाड़ी को खरवार टोला के गरीबा सिंह के घर के सामने ले जाकर छुपा दिया है।

घटना की जानकारी देते हुए कपूरी चौक के समीप संचालित रिमझिम मोबाईल दुकानदार संतोष कुमार ने बताया कि रोजाना की तरह दुकान के सामने अपना मालवाहन टेंपू जेएच 03 भी 7915 खड़ा किये थे। रात्रि में पलामू के पांकी निवासी बिरजु साह जो अपनी सेलेरियो कार जेएच 02 बीजी 5559 से ससुराल में आये हुए थे। जिसे भवनाथपुर निवासी अजय साह के नबालिग पुत्र प्रियतम कुमार चला रहा था। इसी दौरान कार अनियंत्रित होकर मालवाहक टेंपू में जोरदार धक्का मार दिया। इस दौरान टेंपू के पीछे तथा कार का आगे का हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। जबकि स्थानीय थाना प्रभारी सतीश कुमार महतो ने बताया कि घटना की सूचना मिली है,कारवाई के लिए घटनास्थल पर पुलिस पदाधिकारी को जाने का निर्देश दिया।

सड़क दुर्घटना में महिला घायल, अस्पताल में भर्ती

गढ़वा। गढ़वा-शाहपुर रोड में गढ़वा थाना क्षेत्र के तिलदाग गांव के समीप सड़क दुर्घटना में कौशल्या देवी पति श्याम सुंदर सिंह गंभीर रुप से घायल हो गई। वह पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के चांदोखुरा गांव की रहनेवाली है। सदर अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है। जानकारी के अनुसार कौशल्या देवी अपने भाई कुश कुमार सिंह पिता रामजन्म सिंह के साथ मोटरसाइकिल से डंडई थाना क्षेत्र के रारो गांव स्थित मायके में जा रही थी। इस दौरान तिलदाग गांव के समीप कौशल्या देवी चलते हुए मोटरसाइकिल से गिरकर घायल हो गई। इस घटना में उसके सिर में चोट लगी है।

डॉ राममनोहर लोहिया चेतना मंच के द्वारा संगोष्ठी सह सम्मान समारोह आयोजित, बोले वक्ता

देश मे गैर कांग्रेसी सरकार के प्रबल समर्थक डॉ लोहिया

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। डॉ राममनोहर लोहिया चेतना मंच के तत्वावधान में शनिवार को मंच के संरक्षक सह पूर्वमंत्री रामचन्द्र केशरी के चेचरिया स्थित आवासीय कार्यालय पर संगोष्ठी सह सम्मान समारोह का आयोजन मंच के अध्यक्ष अश्विनी कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुये वक्ताओं ने कहा कि डॉ लोहिया जन्म से ही प्रतिभा के धनी थे। डॉ लोहिया प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर समाजवादी नेता, देश मे गैर कांग्रेसी सरकार के प्रबल समर्थक और महान अर्थशास्त्री थे। वे 1929 में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद जर्मनी के बर्लिन विश्विद्यालय से 1932 में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त किया था। हिंदुस्तान आने के बाद वे गांधी जी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होकर स्वतंत्रता सेनानी बन

गये। कहा जाता है कि उनके व्यक्तित्व पर ढाई व्यक्तियों के जीवन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आजादी के बाद से ये जनता के सवालों पर लगातार संघर्ष करते रहे। 1963 में लोकसभा का मध्यावधि चुनाव जीतकर संसद पहुचे। ये देश मे सत्ता का विकेंद्रीकरण कर देश का विकास करना चाहते थे। डॉ लोहिया समता मूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। वक्ताओं ने उनके विचारों को आगे बढ़ाने, डॉ राममनोहर चेतना मंच को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी मंच के पदाधिकारियों को दिया। संगोष्ठी को मंच के संरक्षक सह पूर्वमंत्री रामचन्द्र केशरी ,सूरज प्रसाद गुप्ता,डॉ धर्मचन्द लाल अग्रवाल,कृष्णा विश्वकर्मा, सिधेश्वर लाल अग्रवाल, विजय कुमार केशरी,रघुराज पांडेय, मथुरा पासवान,मो0 नईम खलीफा सहित अन्य ने संबोधित किया। संगोष्ठी के अंत मे संरक्षक मंडल के सदस्य पूर्वमंत्री रामचन्द्र केशरी, विजय कुमार सिंह, सूरज प्रसाद गुप्ता ने संयुक्तरूप से डॉ राममनोहर लोहिया चेतना मंच के सभी पदाधिकारियों व मीडियाकर्मियों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। मौके पर मंच के संरक्षक विजय कुमार सिंह, राजकुमार प्रसाद, कमलेश बिहारी, नंदकिशोर प्रसाद, लाला पासवान, बसंत जायसवाल,अमर जायसवाल, सोबराती खां, सलीम अंसारी, उमाशंकर प्रसाद, प्रकाशचंद्र सेठी,विद्या सागर, प्रताप जायसवाल, अरुण कुमार, गरबांध पंचायत की मुखिया सबिश्टानी केरकेट्टा सहित बड़ी संख्या में मंच के सदस्य उपस्थित थे। संगोष्ठी का संचालन सीताराम जायसवाल ने किया।

आस्था व विश्वास का केंद्र है बांकी नदी तट पर स्थित प्राचीन सूर्य मंदिर

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। अनुमण्डल मुख्यालय में बाँकी नदी के तट पर अवस्थित अति प्राचीन सूर्य मंदिर छठ व्रतधारियों के लिए आस्था व विश्वास का केंद्र है.बाबा बंशीधर मंदिर सूर्य मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष युवराज राजेश प्रताप देव ने कहा कि सूर्यमन्दिर की स्थापना नगर गढ़ के भैया राज किशोर देव की धर्मपत्नी सीता देवी ने सम्वत 2000 में सन 1943ई0 में करवाया था। उसी समय से यहाँ छठ व्रत होता है। लोगो का मानना है कि जो भी व्रतधारी यहां छठ व्रत करती हैं, उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि यहां प्रत्येक वर्ष झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों सहित सीमावर्ती उतर प्रदेश, मध्यप्रदेश सहित बिहार राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से छठ व्रत करने के लिए बड़ी संख्या में व्रतधारी आते है। इस मंदिर की विशेषता है कि यह एक अष्टकोणीय

मंदिर है। मंदिर के चार कोणों पर विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित है तथा बीच मे भगवान सूर्य की मूर्ति स्थापित है। अतिप्राचीन मंदिर होने के कारण मंदिर जीर्णशीर्ण स्थिति में हो गया था। प्रभात क्लब के अध्यक्ष हजारी प्रसाद व सचिव जय प्रकाश नारायण सिंह, सह सचिव,कोषाध्यक्ष मनदीप प्रसाद के नेतृत्व में क्लब ने मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया। वर्ष 2005-06 में झारखण्ड सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा भी सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया था।

न्यूज गैलरी

आदर्श नगर में छठ घाट पर छठ्वर्तियों ने स्नान कर सूर्य नमन किया

बरवाडीह। छठ महापर्व की दूसरे दिन खरना पर्व की तैयारी को लेकर शनिवार को प्रखंड के विभिन्न छठ घाटों में छठ व्रतियों ने स्नान कर सूर्य नमन किया। आस्था महापर्व के दूसरे दिन खरना पर्व की तैयारी में प्रखंड के मुख्य आदर्श नगर छठ घाट में प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों के काफी संख्या में छठ व्रतियों ने स्नान कर सूर्य नमन किया। वही छठ व्रतियों द्वारा अपनी-अपनी पूजा अर्चना दाउरा रखने हेतु घाट का भी निर्माण किया गया। जिससे रविवार को सूर्य की पहली अर्ध दिया जा सके। छठ व्रतियों द्वारा नदी में स्नान के उपरांत खरना प्रसाद बनाने हेतु लोटा में जल भर अपने अपने घर प्रस्थान किया। इस दौरान छठ व्रतियों छठ की सामूहिक रूप सेछठ गीत भी गाया। खरना पर्व की तैयारी को लेकर आदर्श नगर में छठ घाट में काफी भीड़ भाड़ रही. वही छठ पूजा समिति के सदस्य छठ व्रतियों की सुविधा प्रदान करने हेतु तत्पर दिखे.फोटो

जानवर को धक्का मारने के बाद पुल से नीचे गिरा बाइक सवार, घायल

चंदवा। थाना क्षेत्र अंतर्गत चंदवा-मालहन-मैक्लुस्कीगंज मुख्य पथ पर काली गांव के समीप शनिवार दोपहर एक बाइक सवार सड़क पार कर रही गाय को धक्का मारते हुए पुल के नीचे जा गिरा पुल से गिरने की वजह से युवक काफी देर तक बेहोश पड़ा रहा। पुल के नीचे होने वजह से उस पर जल्दी किसी की नजर नहीं पड़ी। राहगीरों की नजर जब उसपर पड़ी तो उन्होंने इस बात की सूचना चंदवा प्रखंड उप प्रमुख अश्विनी मिश्रा,डुमारो पंसस संगीता देवी को दी गई जिसके बाद दोनों जनप्रतिनिधियों की पहल पर 108 एंबुलेंस के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा लाया गया जहां डॉ नीलिमा के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद युवक की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया। घायल व्यक्ति के सर पर गंभीर चोट लगी है जिससे वह बेहोशी की हालत में था। चंदवा से उसे ऑक्सीजन चढ़ाते हुए रिम्स भेज दिया गया। घायल व्यक्ति की पहचान डुमारो पंचायत के मोची निवासी संतोष मुंडा पिता सुरेंद्र मुंडा के रूप में हुई है। कुछ लोगों के द्वारा बताया जा रहा है की उसके साथ एक व्यक्ति और था जो गिरने के बाद उठकर कुछ दूर जाने के बाद फिर बेहोश हो गया था। जिसके चेहरे पर ग्रामीणों ने पानी का छींटा मारने पर होश आने पर आया फिर वह वहां से चला गया।

सड़क दुर्घटना में दो लोग घयाल

बालूमाथ। प्रखंड क्षेत्र अन्तर्गत बालू ग्राम से बालूमाथ आने के क्रम में बाइक अनियंत्रित हो गए जिससे दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए घटना के बारे में मिली जानकारी के अनुसार मो गुलाम रसूल (19 वर्ष) और मो सुहैल अंसारी (21 वर्ष) अपने बालू से बालूमाथ आ रहा थे कि इसी क्रम में बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई। जिससे दोनो युवक घयाल हो गए। जिसके बाद ग्रमीणों व परिजन ने अस्पताल लाया जहां पर डॉ सुरेश राम के द्वारा प्राथमिक उपचार की गई। दोनो युवक को आंतरिक गंभीर चोट लगी थी। जिसकी उचित इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया गया।

श्रम मंत्री, उपायुक्त व एसपी ने किया छठ घाट का निरीक्षण, सुरक्षा व्यवस्था को लेकर दिये कई दिशा निर्देश

चतरा/गिद्धौर। शनिवार को छठ पर्व को लेकर श्रम नियोजन कौशल विकास मंत्री सत्यांन्द भोक्ता, उपायुक्त अब इमरान व एसपी राकेश रंजन ने जिला मुख्यालय व गिद्धौश्र के लोटार डैम का निरीक्षण किया। गिद्धौर प्रखंड मुख्यालय स्थित लोटार डैम छठ घाट का निरीक्षण कर मंत्री, उपायुक्त व एसपी ने छठ घाट में साज सज्जा देख प्रसन्ता जाहिर करते हुए डैम में गहरे पानी को देखते हुए पूजा समिति अध्यक्ष प्रभात कुमार व मुकेश कुमार को कई अहम निर्देश दिया। उन्होंने डैम के बगल में ब्रेकेटिंग करने, अर्ध्य देते समय तैराक रखने व समिति सदस्यों को कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान बीडीओ संजीत कुमार, सीओ जयशंकर पाठक, थाना प्रभारी मनोज कुमार पाल, 20 सूत्री अध्यक्ष बिनोद पासवान, 20 सूत्री उपाध्यक्ष रामदेव यादव, मुखिया निर्मल देवी, राजेश कुशवाहा, मंटू कुमार, विकास कुमार, प्रकाश कुमार सहित अन्य शामिल थे।

बीडीओ ने किया मुख्यमंत्री औषधी सह मेडिकल स्टोर का उद्घाटन

मयूरहंड(चतरा)। शनिवार को मयूरहंड प्रखंड क्षेत्र के कदगावांकला पंचायत अंतर्गत सेवई में बाबा साहेब मेडिकल सह मुख्यमंत्री औषधि केंद्र का उद्घाटन बीडीओ साकेत कुमार सिन्हा तथा मुखिया अशोक कुमार ने विधिवत पूजा अर्चना व फीता काटकर किया। इससे पूर्व मेडिकल संचालक द्वारा बीडीओ तथा मुखिया के साथ अन्य अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। इस दौरान बीडीओ श्री सिन्हा ने कहा की इंसान को भोजन के बाद स्वास्थ्य और शिक्षा की जरुरत होती है। इस क्षेत्र में औषधि केंद्र खुलने से आम जनमानस को लाभ मिलेगा। मुखिया ने कहा कदगांवाकला अति पिछड़ा पंचायत होने के बावजूद यहां के युवाओ में बेहतर करने का जजबा है। आज औषधि केंद्र खुलने से पंचायत वासियों के साथ प्रखंड क्षेत्र के लोगों को लाभ मिलेगा। वहीं संचालक रामाशिश कुमार दास ने कहा कि क्षेत्र में स्वास्थ्य की बेहतर व्यवास्था सुलभ कराना मेरा लक्ष्य है। अभी मेडिकल स्टोर का उद्घाटन हुआ है, आगे प्रक्षित डॉक्टर बैठाने की मेरी प्राथमिकता होगी। इस अवसर पर समाजसेवी बलम कुमार, वार्ड सदस्य सुभाष कुमार दास, रामजीवन रविदास, रमेश कुमार के अलावा दर्जनों लोग उपस्थित थे।

विधि-विधान के साथ व्रतियों ने ग्रहण किया खरना का प्रसाद

अस्ताचलगामी सूर्य को आज अर्घ्य देंगे छठव्रती

नवीन मेल संवाददाता

चतरा/पत्थलगड़ा/मयूरहंड/कुंदा। नेम निष्ठा के महापर्व छठ के दुसरे चरण में शनिवार के शाम व्रतियों ने विधि-विधान पूर्वक भगवान भास्कर की पूजा अर्चना कर दूध और नये अरवा चावल से बने खीर और अन्य पूजा सामग्री अर्पित कर खरना किया। इसके साथ व्रतियों का 36 घंटे का निरजला उपवास प्रारंभ हो गया। वहीं खरना का प्रसाद ग्रहण करने के लिए लोग देर रात तक व्रतियों के घर पहुंचते रहे। रविवार को भगवान भास्कर के अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाएगा। जबकी शनिवार को उदीयमान स्वरूप सूर्य को अर्घ्य अर्पण के साथ व्रत संपन्न हो जाएगा और प्रसाद का वितरण किया जाएगा। दुसरी ओर सभी छठ घाटों एवं विभिन्न जलाशयों की साफ-सफाई पूर्ण कर ली गई है। जिला मुख्यालय से लेकर विभिन्न प्रखंड़ों में विद्युत साज सज्जा का काम भी अंतिम चरण में है। व्रतियों के सुरक्षा को लेकर कई छठ घाटों की घेराबंदी की गई है।जिले के पत्थलगड़ा, गिद्धौर, मयूरहंड, कुंदा, टंडवा व इटखोरी आदि प्रखंड़ों में संबंधित पदाधिकारियों ने क्षेत्र का भ्रमण कर घाटों की सुरक्षा व सफाई व्यवस्था का जायजा लिया।

बीडीओ व पुलिस इंस्पेक्टर ने छठ घाट का किया निरीक्षण

टंडवा (चतरा)। शनिवार को टंडवा थाना क्षेत्र के विभिन्न छठ घाटों का सुरक्षा के दृष्टिकोण से बीडीओ रंथु महतो एवं इंस्पेक्टर सह थाना प्रभारी विजय कुमार सिंह ने निरीक्षण किया। इस दौरान सुदूरवर्ती सिदपा, हेसातु के साथ मिश्रौल, तेलियाडीह एवं टंडवा के छठ घाटों के निरीक्षण के क्रम में गहरे जलाशयों में बैरिकेडिंग करने के निर्देश दिए गए। बताया गया कि सर्वाधिक भीड़ लगने वाले एवं संवेदनशील जगहों को चिन्हित किया जा चुका है, जहां एहतियातन पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। इसके साथ हीं चौबीसों घंटे आम लोगों की सेवा के लिए प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है। ज्ञात हो कि रविवार को सांध्यकालीन अर्घ्य स्थानीय समयानुसार सूर्यास्त 5:09 से पहले तथा सोमवार को सूर्योदय 5:55 के पश्चात अर्घ्य दिए जाएंगे। इसके उपरांत व्रत के पारण के साथ हीं लोक आस्था का चार दिवसीय महापर्व का समापन हो जाएगा।

विवेकानंद किशोर संस्था के द्वारा छठ घाट में होगी विशेष व्यवस्था

नवीन मेल संवाददाता

चंदवा। चंदवा में छठ महापर्व की शुरूआत नहाए खाए के साथ शुरू हो गई है। चंदवा के घाटो की सफाई जोर शोर से की जा रही है। चंदवा के मुख्य बाजार में देवनद नदी और भुषाड़ छठ घाटो की सफाई में कई स्वयंसेवी संस्था जुट गए हैं। इस बार चंदवा के देवनद छठ घाट में विवेका नंद किशोर संस्था के द्वारा विशेष व्यवस्था व्रतियों के लिए की जा रही है। वही विवेकानंद की सोच संस्था भी अपने 52 वें वर्ष पूरा होने पर गोल्डन जुबली वर्ष मना रही है। विवेकानंद संस्था के अध्यक्ष सत्येंद्र प्रसाद साहू ने बतलाया कि हम सभी मित्रों के द्वारा छठ व्रतियों को छठ महापर्व के अवसर पर मिलजुल कर घाट पर विशेष व्यवस्था करते आ रहे हैं। जिससे हमें बहुत खुशी है कि आज हम लोग 52 वें गोल्डन जुबली वार्षिक उत्सव मनाया हम लोग के साथ-साथ चंदवा के तमाम लोग इस संस्थान से जुड़े हुए हैं तो आज भी सेवा में तत्पर है। गोल्डन जुबली बस में छठ घाट में और व्रतियों को इस बार संस्थान की तरफ से दउरा में एक, एक कलश पीतल के दिया जाएगा। घाट पर लाइट आने जाने वाले नदी के बीच सेतु निर्माण और कई स्वयंसेवी संस्था के द्वारा पूजा सामग्री ईख फल और विशेष कर सभी क्षेत्रों में सफाई की व्यवस्था संस्थान के द्वारा की जा रही है। इस छठ महापर्व में सभी समाजसेवियों राजनीतिक दलों यहां तक की मुस्लिम धर्मावलंबियों ईसाई धर्मवलबियो की भी सहयोग रखती है। अभी देखा गया कि चंदवा के एनएच 99 स्थिति बहुत ही खराब थी जिससे चंदवा के ठेकेदारों के सड़क निर्माण किया गया जो यह भी सराहनीय है घाट की सफाई में हिंडालको के ऑपरेटर और हिंडाल्को कंपनी की भी विशेष ध्यान रहती है।

बरवाडीह प्रखंड के विभिन्न छठ घाटों का बीडीओ ने किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

बरवाडीह। पदाधिकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी राकेश सहाय शनिवार को प्रखंड के कई छठ घाटों का निरीक्षण कर छठ पूजा समिति के सदस्यों को कई निर्देश दिए। प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल निरीक्षक रमेश प्रसाद के साथ सर्वप्रथम छिपादोहर छठ घाट का निरीक्षण किया. इस दौरान छठ घाट के साफ सफाई एवम सजावट की व्यवस्था देखकर प्रसन्नता जाहिर किया। बीडीओ ने छिपादोहर छठ पूजा समिति के राजू प्रसाद उन लोगों से मिलकर अन्य व्यवस्था की जानकारी लिया। इसके बाद प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रखंड के गाड़ी केड़ पंचायत का छठ घाट का निरीक्षण किया। इसके उपरांत बीडीओ ने प्रखंड मुख्यालय का आदर्श नगर मुख्य छठ घाट का निरीक्षण किया। यहां पर छठ पूजा सहायतार्थ समिति व छठ पूजा समिति द्वारा छठ घाट

की पूरी तरह साफ सफाई, सजावट की उत्तम व्यवस्था देखकर पूजा समिति सदस्यों को इसके लिए धन्यवाद दिया। जानकारी हो की प्रखंड के आदर्श नगर मुख्य छठ घाट में प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों के छठ व्रतियों छठ पर्व मनाने पहुंचते है। यहां पर काफी भीड़ भाड़ होती है। प्रखंड विकास पदाधिकारी इसके अलावा प्रखंड के अन्य छठ घाटों कानिरीक्षण कर छठ पूजा समिति के सदस्य मुलाकात किया।

तुबेद नदी में अवैध उत्खनन करने के दौरान एक नाबालिग की हुई मौत

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। सदर थाना क्षेत्र के तुबेद नदी में अवैध कोयला उत्खनन करने के दौरान एक नाबालिक की मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। जानकारी के अनुसार पतरातू गांव निवासी नाबालिग सोनू खान उम्र 14 वर्ष पिता सिधन खान के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि सोनू खान कुछ लोगों के साथ मोटरसाइकिल से तुबेद नदी में अवैध कोयला उत्खनन कर रहा था। इसी दौरान कोयला का कुछ अंश उसके ऊपर गिर गया और उसके नीचे दब गया। कुछ लोगों की मदद से उसे बाहर निकाला गया और उसे सदर अस्पताल लातेहार में लाने के दौरान रास्ते में ही मौत हो गई।

मृतक पतरातू गांव निवासी नाबालिग सोनू खान उम्र 14 वर्ष है

मौत हो जाने के बाद स्वजनों ने अस्पताल में इनकी इंट्री नहीं कराई और ना ही इसकी सूचना पुलिस को दी। इस संबंध में लातेहार पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी अमित कुमार गुप्ता ने बताया कि इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

गांव में छाया मातम

तुबेद नदी में अवैध कोयला उत्खनन करने के दौरान नाबालिक की मौत के बाद गांव में मातम छा गया है। गांव के ग्रामीणों ने कहा कि नाबालिक के मौत के बाद अवैध उत्खनन बंद हो गया है।

रोजाना मोटरसाइकिल व साइकिल से होता था कोयला की ढुलाई :

तुबेद गांव में अवैध कोयला उत्खनन में रोजाना मोटरसाइकिल एवं साइकिल सवार पहुंचकर कोयला का उत्खनन कर चोरी छिपे लाते थे। कोयला उत्खनन के दौरान मलबे में दबने से नाबालिक की मौत के बाद गांव के लोग मीडिया के सामने कुछ बोलने से परहेज कर रहे हैं। लेकिन गांव में अवैध उत्खनन रोकने को लेकर प्रशासन नाकाम साबित हो रही है।

टंडवा-सिमरिया मुख्य पथ पर सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल, रेफर

टंडवा (चतरा)। क्षेत्र में रफ्तार का कहर थमने का नाम नहीं ले रहे है। इसी कड़ी में टंडवा थाना क्षेत्र अंतर्गत टंडवा-सिमरिया मुख्य पथ पर वृंदा पुल में हुए सड़क दुर्घटना में खैलहा निवासी पदुम महतो गंभर रुप से घायल हो गए। मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार देर शाम वृंदा पुल में बने बड़े गढ्ढों से बचने के दौरान स्वीफ्ट डिजायर कार जेएच 01 बीके 1989 अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसके चपेट में आए पदुम महतो गंभीर रुप से घायल हो गए तो पुलिस की मदद से प्राथमिक चिकित्सा के पश्चात गंभीर स्थिति देखते हुए चिकित्सकों ने रिम्स रेफर कर दिया।

शिव व हनुमान मंदिर निर्माण को लेकर हुआ भूमि पूजन

चतरा/इटखोरी। शनिवार को इटखोरी प्रखंड क्षेत्र के करनी पंचायत अंतर्गत जगदीशपुर गांव में शिव व हनुमान मंदिर निर्माण को लेकर भूमि पूजन विधि विधान से किया गया। भूमि पूजन कार्यक्रम में जिप उपाध्यक्ष बिरजू तिवारी व सिमरिया विधायक किशुन कुमार दास मुख्या रुप से शामिल थे। जिप उपाध्यक्ष ने इस अवसर पर हर व्यक्ति को धर्म का ज्ञान होना चाहिए। साथ ही अतिथियों ने मंदिर निर्माण के लिए लोगों की सराहना की। मौके पर देव कुमार सिंह, सीताराम सिंह, सुरेश सिंह, डोमन राणा, रामस्वरूप सिंह, राम लखन सिंह, रणधीर सिंह, गोपाल सिंह, लवकुमार सिंह, सरयू भुइयां समेत भारी संख्या में लोग शामिल थे।

अवैध गांजा के साथ एक तस्कर व चोरी के सामान के साथ चार चोर गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। एसपी राकेश रंजन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस को अपराधियों और तस्करों के खिलाफ लगातार बड़ी सफलता चतरा जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से मिल रही है। पुलिस ने एक गांजा तस्कर के साथ ही चार शातिर चोर और 2 अपराधियों को हथियार के साथ गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया। गिरफ्तार अपराधियों के पास से अवैध गांजा, चोरी के सामान और हथियार बरामद किए गए हैं। एसडीपीओ अविनाश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि एसपी के निर्देश पर सदर थाना क्षेत्र से पुलिस टीम ने 25.500 केजी अवैध गांजा पौधा के साथ सोनबिघा निवासी प्रमोद कुमार सिंह को गिरफ्तार किया। वह अपने घर में गांजा की खेती कर रहा था। वहीं सदर थाना क्षेत्र में छिपकर रह रहे चार शातिर चोरों बिंदु कुमार

राय, विक्रम कुमार चन्द्रावंशी, अभिषेक कुमार चन्द्रावंशी और मिड्डु कुमार भुईंया को चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से चोरी के कई सामान भी बरामद किए गए हैं। वहीं हंटरगंज थाना क्षेत्र से गिरफ्तार दो अपराधी में एक नगीना मांझी बिहार के गया जिला अंतर्गत धनगाई थाना क्षेत्र का रहने वाला है, जबकि दूसरा विक्रम कुमार हंटरगंज थाना क्षेत्र के उरेली का रहने वाला है। इनके पास से दो रिवाल्वर समेत चार जिंदा कारतूस बरामद किया गया है।

आरपीएफ ने चोरी के सामान के साथ दो को दबोचा

चंदवा। पूर्व मध्य रेलखंड के टोरी जंक्शन में पदस्थापित आरपीएफ ने मिली सूचना कार्रवाई करते दो व्यक्तियों को रेल के चोरी माल के साथ गिरफ्तार किया। टोरी आरपीएफ पोस्ट पर आवश्यक कार्रवाई के बाद उसे रेलवे न्यायालय डालटनगंज अग्रसारित कर दिया। इस संबंध में टोरी आरपीएफ निरीक्षक प्रभारी दीपक कुमार ने बताया कि प्राप्त सूचना के सत्यापन के लिए छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान अनिल उरांव (लुकूइया, पिपरवार, चतरा) को रेल की चोरित माल के साथ पकड़ा गया। उसकी निशानेदेही पर माल खरीददार के गांव स्थित ठिकाने पर छापेमारी की गई। वहां मो. एनामुल (पिता मो मुस्लिम, शेरेगडा, बालूमाथ) को गिरफ्तार किया गया जबकि दूसरा मौके पर फरार होने में सफल रहा। धराए एनामुल ने फरार साथी का नाम पता जगदेव महतो (पिता डोमन महतो, दहु, टंडवा, चतरा) बताया। आरपीएफ ने कार्रवाई करते चोरित संपत्ति को जब्त कर माल व गिरफ्तार दोनों अभियुक्तो को टोरी पोस्ट पर लाया। आवश्यक प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद धराए चोरों को रेलवे न्यायालय डालटनगंज अग्रसारित किया गया। टोरी आरपीएफ निरीक्षक प्रभारी दीपक कुमार ने रेलवे संपति की नुकसान पहुंचाने अथवा चोरी करनेवाले को चेताते हुए कहा है कि वो सुधर जाएं अन्यथा उनपर कानूनी कार्रवाई तय है।

अन्नपूर्णा बीज भंडार के मालिक ने किया निःशुल्क गन्ना का वितरण, कहा

किसान हित मे 12 वर्षो से कार्य कर रही प्रतिष्ठान

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। जिले के चंदवा प्रखंड अंतर्गत बुध बाजार चंदवा स्थित अन्नपूर्णा बीज भंडार के मालिक अंकित कुमार व मोनी कुमारी गुप्ता द्वारा छठ कर रहे लोगों के लिए निशुल्क केतारी वितरण शनिवार को सुबह 8:00 बजे से किया गया। जिसका शुभारंभ चंदवा निवासी राजकुमार अग्रवाल, राजकुमार साहू, महेंद्र प्रसाद अग्रवाल, अंकित कुमार ने सामूहिक रूप से उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात ही निशुल्क केतारी लेने वालों की कतार लग गई और देखते ही देखते महज कुछ मिनटों में ही हजारों की संख्या में केतारी का वितरण हो गया। अन्नपूर्णा बीज भंडार के मालिक अंकित कुमार व मोनी कुमारी गुप्ता ने कहा कि हिंदू धर्म मे छठ पूजा का बड़ा महत्व है इस पर्व के माध्यम से सूर्य देवता की पूजा की जाती है। हिंदू धर्म के हर एक वर्ग के लोग इस पूजा को करना चाहते हैं। जिस कारण सर्वाधिक

घरों में यह पूजा की जाती है। वही बाजार में सब्जी, दूध, केतारी की मांग बढ़ जाती है। जिसे कारण मूल्य मे अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। जिसे देखते हुए हमारी और से निशुल्क केतारी वितरण के रूप में एक छोटा सा पहल किया गया। इसके साथ उन्होंने जानकारी दिया की इस वर्ष चंदवा प्रखंड अंतर्गत नगर नदी, कुजरी नदी व बुध बाजार मे निशुल्क केतारी वितरण किया गया है। वही परिस्थिति के अनुकूल अगले वर्ष भी हमारे और से छठ कर रहे लोगों को विभिन्न सेवा प्रदान किया जाएगा। इसके पश्चात मोनी कुमारी गुप्ता ने बताया कि अन्नपूर्णा बीज भंडार लातेहार जिला भर मे एकमात्र ऐसा दुकान है जो 100 से अधिक कंपनियों का सामग्री होलसेलर रेट मे ही किसानों को उपलब्ध कराया जाता है। इसके साथ ही जो किसान बीज लेने में सक्षम नहीं है उसे निशुल्क बीज उपलब्ध कराया जाता है। वही बुध बाजार निवासी राजकुमार अग्रवाल ने बताया कि यह दुकान बुध बाजार चंदवा मे 12 वर्षों से है और यह एकमात्र ऐसा दुकान है जो किसानों के हित मे निछावर है।

कार्यालय नगर पंचायत मझिआँव

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या– 10/2022–23

1. विज्ञापन दाता का नाम :– कार्यपालक पदाधिकारी, नगर पंचायत मझिआँव।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय :– दिनांक 07.11.2022 अपराह्न 4:00 बजे तक।
3. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– कार्यालय नगर पंचायत मझिआँव।
4. निविदा प्राप्ति का स्थान, तिथि एवं समय :– कार्यालय नगर पंचायत मझिआँव में दिनांक 10.11.2022 का अपराह्न 2:00 बजे तक।
5. निविदा खोलने का स्थान, तिथि एवं समय :– कार्यालय नगर पंचायत मझिआँव में दिनांक 10.11.2022 का अपराह्न 02:30 बजे से।
6. कार्य विवरणी :–

क्र0 सं0	वार्ड सं0	मद	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र का मुल्य	अग्रधन की राशि	अवधि
01	04	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Mahuwa tree to Binod Singh house at ward no 4. Part 1	822500	5000	16500	60 दिन
02	02	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Govt. School to Dohar at Khura ward no 02	370500	1000	7450	45 दिन
03	11	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Anil Pathak house to Mahuwa tree at ward no 11. Part 1	673935	5000	13500	60 दिन
04	11	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Anil Pathak house to Mahuwa tree at ward no 11. Part 2	673935	5000	13500	60 दिन
05	12	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Main road Khajuri to Gumti of Chandrika Mahto at ward no 12.	691052	5000	13850	60 दिन
06	08	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from House of Munna Khan to PCC Main road at ward no 08	293860	1000	5900	45 दिन
07	11	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Main road khajuri to Ramjit Pal house at ward no 11 Part 01	613005	5000	12650	60 दिन
08	11	नागरिक सुविधा	Construction of RCC drain from Main road khajuri to Ramjit Pal house at ward no 11 Part 02	613005	5000	12650	60 दिन
09	08	शहरी परिवहन	Construction of RCC guardwall & repairing of PCC from house of Bhola Paswan to house of Matuki Paswan house and repair of PCC road from Shiv Bhagat house to Anuj Pathak House at ward no 08	829464	5000	16600	60 दिन
10	07	शहरी परिवहन	Construction of PCC road upon Grade-I from main road via house of Altamas Khan to house of Madhusudan Vishwkarma at ward no 07	775113	5000	15550	60 दिन
11	04	शहरी परिवहन	Construction of PCC road from Mahuwa Tree to Vinod Singh house at ward no 04 Part 2	492000	1000	9850	45 दिन
12	08	शहरी परिवहन	Repair of PCC road from main road bakoeya to Brahmdev Paswan house at ward no 08 part 1	699058	5000	14000	60 दिन
13	06	शहरी परिवहन	Construction of PCC road from Nandu Prajapati House to Aditya Sharma house Via Dukhan Chaudharu House At ward no 06 Part 2	607800	5000	12200	60 दिन

नोटः– विस्तृत सूचना एवं शर्ते अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय के सूचना पटट् पर कार्यालय अवधि में देखा जा सकता है।

कार्यपालक पदाधिकारी,
नगर पंचायत मझिआँव।

PR.NO.281076 Urban Development(22-23):D

न्यूज गैलरी

तालाब में नहाने के दौरान 56 वर्षीय व्यक्ति की डूबने से हुई मौत

सिमडेगा। सिमडेगा शहर क्षेत्र के हरिजन टोली ढेबर ग्राम में तालाब नहाने के दौरान 56 वर्षीय व्यक्ति की डूबने से मौत हो गई ।घटना की सूचना परिवार वालों ने तत्काल पुलिस को दी जिसके बाद पुलिस शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सिमडेगा भेजा ।घटना के संदर्भ में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी इंस्पेक्टर दयानंद कुमार ने बताया कि देवर ग्राम हरिजन टोली निवासी सुरेश सिंह शनिवार को 11:00 बजे अपने घर से नहाने के लिए गया था इसी दौरान तालाब में छलांग लगाई और गहरे पानी में चला गया आसपास कोई मदद नहीं मिली जिसके बाद वह बेहोश हो गया जिसे अस्पताल आने के बाद डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वह इधर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद यूडी केस दर्ज करते हुए परिजनों को सौंप दिया।

खेलने के दौरान गर्म पानी में गिरने से 3 वर्षीय बच्ची झुलसी

सिमडेगा। सदर प्रखंड के बंगरू पहाड़ टोली निवासी मुकेश बिरहोर की 3 वर्षीय परी बिरहोर पुत्री खेलने के दौरान गर्म पानी से झुलस कर गंभीर हो गई ।परिवार वालों ने उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल सिमडेगा में भर्ती कराया है जहां इलाज चल रही है। वही पिता मुकेश बिरहोर ने बताया कि घर में मुर्गा बनाने के लिए गर्म पानी कर उसे आंगन में रखा था और किसी काम में व्यस्त थे इस दौरान खेलते हुए उसकी 3 वर्षीय पुत्री परी वहां पहुंची और वह गर्म पानी में गिर कर झुलस गई इधर सदर अस्पताल सिमडेगा में उसकी इलाज चल रही है।

खेलने के दौरान आग से झुलसी 5 वर्षीय बच्ची

जलडेगा। जलडेगा थाना क्षेत्र के कुटुंगिया डुडिंग टोली निवासी बिराजू प्रधान की 5 वर्षीय प्रिया प्रधान नामक बच्ची आग की चपेट में आने से गर्दन से नीचे पूरा शरीर बुरी तरह से जल गया। घटना के दौरान मां जंगल लकड़ी लाने गई थी पिताजी गेनमेर इंद मेला गया हुए था। पंचायत की मुखिया जानकी देवी के द्वारा 108 एंबुलेंस की मदद से स्वास्थ्य उप केंद्र जलडेगा लाया गया है। जहां डाक्टर अमित तिर्की के द्वारा बच्ची का प्राथमिक ईलाज किया गया और बेहतर चिकत्सा को ध्यान में रखते हुए सीधे रिम्स रांची रेफर किया गया। बच्ची घर से सौ मीटर दूर अकेली खेल रही थी। क्या से जली कैसे जली पता नहीं चल रहा है। प्रत्यक्ष दर्शी के अनुसार ग्रामीणों ने बताया कि बची जैसे जलने लगी आग की लपटों के साथ घर की ओर दौड़ पडी, बच्ची को आग लपटों में देखकर अगल बगल के लोग अचंभित रह गए अनन फानन में लोगों ने आग को बुझाया और मुखिया को जानकारी दी गई। मुखिया बच्ची को अपने गोद में लेकर हास्पीटल पहुंची। मुखिया ने बताया कि पीड़िता को खटिया में लाद कर मुख्य सड़क तक लाया गया जहां पर से उसे एंबुलेंस के सहारे अस्पताल लाया गया। घटना दोपहर 3 .30 बजे की बताई गई। पीड़िता के साथ उसकी मां, पिताजी और मामा भी अस्पताल में मौजूद थे।

प्रमुख ने किया प्रस्तावित उच्च विद्यालय कोनसोदे का निरीक्षण

बानो। प्रमुख सुधीर डांग ने प्रखंड के प्रस्तावित उच्च विद्यालय कोंनसौदे का निरीक्षण कर विद्यालय प्रबंधन को कई निर्देश दिया ।प्रमुख सुधीर डांग ने स्कूल जाकर विद्यालय के बच्चों के लिये पेयजल व्यवस्था करने तथा शौचालय की निर्माण करने का निर्देश दिया विद्यालय इस समय काफी संख्या में विद्यार्थी पढ़ाई करते हैं मालूम हो आस पास कोई उच्च विद्यालय नही रहने के कारण विद्यार्थी इस विद्यालय में पढ़ाई करते है जलडेगा, कुरुडेगा ,बीरता ,छोट केतुङ्गा आदि गाँव के बच्चे इसी विद्यालय में पढ़ाई करते है ।प्रमुख सुधीर डांग ने बच्चों से मन लगा कर पढ़ाई करने की बात कहा प्रमुख ने विद्यालय प्रबंधन की विभिन्न मांगों को उच्च अधिकारियों के पास बात रखने की आश्वासन दिया ।मौके पर विद्यालय प्रधानाध्यापक जितेंद्र बड़ाईक व अन्य शिक्षक उपस्थित थे।

पूजा सामग्रियों से पटा दुकान, खरीददारों की उमड़ी भीड़

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। छठ बाजार को लेकर स्थानीय दुकान व बाजार सजकर तैयार हो गए है। पूजा के सूप 120 से 200 रुपये पीस बिक रहे हैं। वही बांस पंखा 30 से 50 रुपये पीस, झाड़ू 40 से 80 रुपये, दउरा 150 से 500 रुपये पीस, बांस पंखा 30 से 60 रुपये, शुद्ध घी 480 से 565 रुपये किलो, जटा वाला नारियल 20 से 30 रुपए पीस, गड़ी गोला 215 से 225 रुपए किलो, छोटी इलायची 1500 से 3000 रुपए किलो, बड़ी इलायची 700 से 900 रुपए किलो, छुहाड़ा 170 से 250 रुपए किलो, काजू 640 से 700 रुपए किलो, किशमिश 200 से 250 रुपए किलो, नया चावल 30 से 35 रुपए किलो, सौंफ 130 से 150 रुपए किलो, वनस्पति घी 155 से 165 रुपए किलो, चना 60 से 68 रुपए किलो, सुपाड़ी 700 से 800 किग्रा, मौली धागा 5 से 10 रुपये, जनेऊ 2 से 5 रुपये, बादाम गिरी 400 किग्रा से 600 किग्रा, आरत 5 रुपये, अखरोट 600 किग्रा, बादाम गोटा 40 रुपये, मौली धागा 10 रुपये, पिला सिन्दूर 50 रुपये, लाल सिन्दूर 50 रुपये, जनेउ सुता 5 रुपये, अगरबती 10 रुपये, कपुर 60 रुपये पैकेट, रोड़ी 5 रुपये, चना 60 से 70 किग्रा, सेंधा नमक 5 से 10 रुपये 100 ग्राम, गुड़ 48 किग्रा, रुई बती 10 रुपये, हवन सामग्री 100 रुपये किग्रा, अखरोट 400 रुपये किलो, रिफाइन 150 से 170 रुपये, चीनी 43 किग्रा, लांग 100 रुपये 100 ग्राम, तिल जौ 120 रुपये 100 ग्राम, कटिंग पंचमेवा 20 रुपये, दोना 20 रुपये, पतल 30 रुपये, मटर 45 रुपये किलो, धुवन 80 रुपये, आलता 10 रुपये बिक रहे है। वहीं मिटटी के दीएं 100 रुपये प्रति सैकड़ा, बड़ा दीया 5 रु0 से 10 रु0 पीस, धुपदानी 10 रु0 पीस, ढ़कनी 20 रु0 पीस, ढ़कनी जिसमें पांच दीएं लगे हो 35 रुपये प्रति पीस बिक रहे है।

फल दुकानों में छठव्रतियों की लगी भीड़

लोहरदगा। लोक आस्था का महापर्व छठ को लेकर स्थानीय फल दुकान भी सज गए है। फल की दुकानो में लोगों की भीड़ सुबह से ही देखी जा रही है। स्थानीय बड़ा तालाब, महावीर चौक, बरवाटोली, गुदरी बाजार, सोमार बाजार समेत अन्य जगहो की फल की दुकाने व ठेलो पर भीड़ उमड़ना शुरू हो गया है। बाजारो में केला कांधी 450 से 600 रुपये बिक रहे है। वहीं सेव 80 रुपये से 120 रुपये किलो, संतरा 50 रुपये से 80 रुपये किलो, अगूर 120 रुपये से 140 रुपये किलो, अनार 150 रुपये से 200 रुपये किलो, मौसमी 60 रुपये से 80 रुपये किलो, खजूर 100 से 120 रुपये, गन्ना 15 रुपये से 20 रुपये पीस, पानीफल 40 रुपये से 60 रुपये किलो, अनानास 20 से 30 पीस बिक रहे है।

शहर के तीन छठ घाटों में पूजा-अर्चना के लिए सबसे अधिक पहुंचती है छठव्रती

छठ महापर्व को लेकर तैयारियां शुरू पूरी हो चुकी हैं। श्रद्धालुओं में उत्साह भी नजर आ रहा है। पूजा आयोजन को लेकर श्रद्धालु अपनी-अपनी ओर से तैयारियों में जुट गए हैं। लोग छठ सामग्रियों का वितरण करते हुए पुण्य में सहभागी बन रहा है। शहर के तीन छठ घाटों में सबसे अधिक छठव्रती पूजा-अर्चना के लिए पहुंचते हैं। शहरी क्षेत्र के बड़ा तालाब, श्री राम मंदिर तालाब और ठकुराइन तालाब की स्थिति पर काफी हद तक पूजा के लिए भीड़ निर्भर करती है। हाल के समय में तालाबों की बदहाली ने श्रद्धालुओं को कोयल और शंख नदी की ओर आकर्षित किया है। लोहरदगा शहरी क्षेत्र के ठकुराइन तालाब में छठ महापर्व के आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में सबसे अधिक उत्साह होता है। आसपास के लोग बड़ी संख्या में यहां पर पूजा-अर्चना के लिए पहुंचते हैं। यहां पर पूजा-अर्चना में आकर्षक ढंग से छठ घाट को सजाया जाता है। प्रकाश की व्यवस्था की जाती है। स्थानीय लोगों की सहभागिता भी होती है। छठ महापर्व का आयोजन यहां पर काफी ज्यादा आकर्षक होता है। वहीं शहर का बड़ा तालाब इस बार काफी मनमोहक नजर आ रहा है। हजारों की संख्या में यहां पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। पूजा-अर्चना के लिए छठ घाट को तैयार किया गया है। यहां का पानी बाकी दो तालाबों के मुकाबले सबसे अधिक स्वच्छ नजर आ रहा है। सड़क किनारे स्थित होने की वजह से छठ घाट में काफी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है।

समस्त संसार के शिशुओं की रक्षा करती है षष्ठी देवी

लोहरदगा। षष्ठी देवी (छठी माता) शक्ति है जो समस्त संसार के छोटे बालकों व शिशुओं की रक्षा करती है। इस महापर्व में पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है। छठ व्रत करने की परंपरा ऋग्वैदिक काल से ही चली आ रही है। परिवार की सुख-समृद्धि तथा कष्टों के निवारण के लिए किये जाने वाले इस व्रत की एक खासियत यह भी है कि इस पर्व को करने के लिए किसी पुरोहित(पंडित) की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी मान्यता है कि भगवान श्री राम ने राज्याभिषेक के बाद सीता जी के साथ यह व्रत किया था। दंपति ने अज्ञातवास के दौरान राजपाट की पुनः प्राप्ति की कामना से संकल्प से यह व्रत किया था। षष्ठी माता एवं सूर्यदेव की कृपा से घर में समस्त वैभव एवं सुख शांति की प्राप्ति होती है। भगवान सूर्य परमात्मा के प्रत्यक्ष स्वरूप हैं। ये आरोग्य के अधिष्ठात्री देवता हैं। वैदिक मान्यताओं के अनुसार नहाय खाय से छठ के पारण सप्तमी तिथि तक उन भक्तों पर षष्ठी माता की कृपा बरसती है जो श्रद्धापूर्वक व्रत उपासना करते हैं। उन्हें किसी भी जन्म में किए गए पापों से मुक्ति मिलती है। खासकर शरीर, मन तथा आत्मा की शुद्धि हो जाती है व सूर्य जैसा तेजस्वी पुत्र प्राप्त करने की कामना की पूर्ति होती है। सर्वप्रथम षष्ठी देवी की पूजा सूर्य ने की थी। पुराणों में उल्लेख है कि राजा प्रियंवद के कोई सन्तान नहीं थी। तब महर्षि कश्यप ने पुत्रोष्टि यज्ञ करवाया। उसके प्रभाव से राजा की पत्नी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ परंतु वह मृतावस्था में उत्पन्न हुआ। प्रियवंद पुत्र के वियोग में अत्यंत व्याकुल हुए और प्राण त्यागने को उद्धत हुए उसी समय षष्ठी देवी प्रकट हुई। उन्होंने कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृति छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूँ, राजन! तुम मेरा पूजन करो, तब राजा ने कार्तिक शुक्ल षष्ठी को पुत्रेच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उनकी पूजा की। उसके प्रभाव से उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई।

खरना प्रसाद के लिए उमड़ी भीड़

लोहरदगा। नहाय खाय के साथ शुक्रवार को प्रारंभ हुआ छठ महापर्व के दूसरे दिन शनिवार को व्रतियों ने विधिवत सूर्य उपासना कर संध्या खरना पूजा की। खरना पूजा के बाद व्रतियों के यहां प्रसाद के लिए श्रद्धालुओं का भीड़ उमड़ पड़ी। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने देर रात्रि तक व्रतियों के घरो में पहुचकर महाप्रसाद ग्रहण किए। व्रतियों के घरो में छठ का उत्सव छाया हुआ है। खरना को लेकर उत्साह के साथ श्रद्धालू छठ पूजा में भागीदारी निभा रहे है। छठ पर आधारित भक्तिमय गीतों की स्वर लहरियां सभी ओर सुनाई पड़ रही है। इससे वातावरण भक्तिमय बन गया है। रविवार को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्ध्य देने की तैयारियां जोर शोर से व्रतियों और श्रद्धालुओ द्वारा की जा रही है। खरना के दिन सुबह से खिर भोजन का प्रसाद बनाने के लिए दूध की खोज में श्रद्धालू निकले। शहरी क्षेत्र समेत आसपास के गांवो से दूध की व्यवस्था कर व्रतियों के यहां पहुचाया गया। महिलाएं खिर भोजन मे उपयोग मे आनेवाली चावल और वर्तनों को पवित्रता के साथ साफ सफाई की। बाजार में लाल गेहू, चावल, फल, दोना, पत्तल, मिटटी के वर्तन, कपड़ा, पूजा सामग्री की खरीददारी की गई। शहर के बाजार छठ के सामानों से सजे है। सूप दौरा, फल व कपड़ा दुकान में छठ की खरीददारी की जा रही है। स्थानीय छठ बाजार में सूप दौरा समेत अन्य पूजा के उपयोग में आने वाले सामानो के दाम आसमान छू रहे है। सामानो की बढ़ती कीमत के बावजूद छठ की खरीददारी का उत्साह देखते बन रहा है।

छठ व्रतियों के लिए तैयार है छठ तालाब

लोहरदगा । रविवार को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्ध्य देने के लिए स्थानीय छठ तालाब व घाटो की साफ सफाई पूरी कर ली गई है। तालाबो में ब्लिचिंग पाउडर, चूना, पोटाश आदि डालकर तालाब का पानी को साफ किया जा चुका है। अब छठ व्रतियो को किसी प्रकार की असहुलियत नहीं होगी। स्थानीय छठ तालाब की साफ सफाई को लेकर नगर परिषद प्रशासन व छठ पूजा समिति के जागरुक युवाओ ने योगदान दिया। तालाबो का जलशोधन करने के लिए कर्मियो को काफी माक्कत करनी पड़ी। स्थानीय बड़ा तालाब, ठकुराईन तालाब, बौली बगीचा तालाब, बौली तालाब समेत षंख व सिठियो कोयल नदी में श्रद्धालु बड़ी संख्या में जाते है। छठ घाटो में उचित प्रकाश व्यवस्था के लिए छठ पूजा समिति के युवाओं ने काफी योगदान दिया। श्रद्धालुओ की सुविधा के लिए नदी व तालाबो के किनारे चारो ओर प्रकाश की व्यवस्था किया गया है। इधर सेन्हा प्रखंड स्थित सेरेंगहातू तोड़ार स्थित कोयल नदी में छठ पूजा समिति सेरेंगहातू तोड़ार के युवाओं द्वारा छठ व्रतियों की सुविधा के लिए तैयारियां किया गया है। छठ व्रतियो की सुविधा के लिए पूजन सामग्री, दूध, फल के अलावे चिकित्सा सुविधा की भी व्यवस्था रहेगी।

लोहरदगा नगर परिषद प्रशासन की प्रतिबद्धता ने दिखाया रंग

शहर के सभी छठ घाट छट व्रतियों के अनुकूल तैयार

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा । छठ महापर्व को लेकर शहरी क्षेत्र के जलाशय की साफ सफाई करने और व्रतियों , श्रद्धालुओं को घाट में समुचित प्रबंध देने को लेकर नगर परिषद प्रशासन ने प्रतिबद्धता के साथ काम किया है। नगर परिषद प्रशासन ने विशेष कार्ययोजना बनाकर शहरी क्षेत्र के गुदरी बाजार स्थित ठकुराइन तालाब, बड़ा तालाब समेत विभिन्न छठ घाटों का साफ सफाई का कार्य पूरा करा दिया। फलतः स्थानीय छठ घाट खरना की पूर्व संध्या तक सजावट और सफाई से जगमगा रहे हैं। लोक आस्था से जुड़े छठ महापर्व पर नगर परिषद प्रशासन की प्रतिबद्धता और कार्य की स्थानीय नागरिकों ने सराहना कर रहे हैं। इस संदर्भ में नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी देवेंद्र कुमार ने कहा कि शहरी क्षेत्र के छठ घाट और तालाब बदहाल स्थिति में थे। छठ महापर्व तक इसे पूरी तरह साफ सफाई कर श्रद्धालुओं के अनुकूल बनाने के लिए कार्य योजना बनाकर काम किया गया। दशहरे के बाद से ही नगर परिषद की विशेष टीम और सफाई कर्मी इसमें लग गए। लगातार मेहनत का परिणाम रहा कि छठ महापर्व से पूर्व स्थानीय सभी छठ घाट पूरी तरह स्वच्छ सुंदर और व्रतियों के आने-जाने के अनुकूल हो गए। इस कार्य में शहर के जागरूक युवाओं की टोली भी भरपूर योगदान दिया है।

केंद्रीय सरना समिति द्वारा मनाया गया स्वर्गीय कार्तिक उरांव जयंती समारोह

सिमडेगा। शनिवार को सरना स्थल सिमडेगा में केंद्रीय सरना समिति के तत्वधान में स्वर्गीय कार्तिक उरांव के जयंती समारोह का आयोजन किया गया ।सर्वप्रथम केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष हरीशचंद्र भगत द्वारा स्वर्गीय कार्तिक उरांव के तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धांजलि दी इस मौके पर उनके जीवनी पर विस्तृत जानकारी दी उन्होंने कहा कि स्वर्गीय कार्तिक उरांव का जन्म 29 अक्टूबर 1924 को गुमला जिले के करौंदी में एक किसान परिवार के यहां हुआ था उनका पिता जोरा उरांव एवं माता बिरसा उरांव थी जिनकी प्रारंभिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय जामटोली एसएस उच्च विद्यालय गुमला तथा इंटरमीडिएट साइंस की पढ़ाई पटना इसके अलावा कई ऐसे डिग्री हासिल की जो हर किसी के लिए गरीबी की स्थिति में संभव नहीं था।

शंख नदी संगम तट पर छठ पूजा की भव्य तैयारी हुई पूर्ण, आज होगा संध्याकालीन अर्घ्य

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। लोक आस्था के महापर्व को लेकर सभी छठ घाटों में साफ-सफाई का काम युद्ध स्तर पर जारी है। अनुमण्डल पदाधिकारी सह नगर परिषद के कार्यपालक अभियंता महेंद्र कुमार के निर्देश पर नगर परिषद की ओर से शहरी क्षेत्र के सभी डैम और तालाबों में बने छठ घाटों में साफ-सफाई के काम को युद्धस्तर पर अंतिम रूप दिया जा रहा है ।इधर केलघाघ छठ घाट के तट में वार्ड पार्षद एवं स्थानीय युवाओं के सौजन्य से छठ घाट पर सीढ़ियों के निर्माण हेतु मापी की गई ।साथ ही घाट की साफ सफाई की गई।आज सजावट का काम शुरू हो जाएगा। प्रशासनिक स्तर पर घाटों की सफाई, बैरिकेडिंग, बिजली आपूर्ति के साथ सुरक्षा की व्यवस्था की जा रही है ।इसके लिए नगर परिषद की ओर से सभी घाटों पर साफ सफाई के साथ ही बिजली की आपूर्ति, पहुंच पथ आदि की व्यवस्था दुरुस्त की जा रही है ।समय समय पर इसका जिला प्रशासन और नगर परिषद के अधिकारी जायजा भी ले रहे हैं। लगभग सभी घाटों पर सुरक्षा के ख्याल से बैरिकेडिंग करने के साथ ही अधिक पानी वाले जगह पर खतरे का सूचक लगा दिया गया है। इसके साथ ही घाटों की सफाई करने के साथ समतल भी कर दिया गया है ताकि व्रतियों को व्रत का डाला रखने और खड़ा होने में किसी तरह की परेशानी नहीं हो। इसके अलावा मुख्य सड़क से घाट तक जाने वाले रास्तों की भी सफाई करने के साथ उबड़ खाबड़ रास्तों को समतल कर दिया गया है।

भारत जोड़ो पदयात्रा को लेकर कोलेबिरा कांग्रेस के द्वारा हुई बैठक

कोलेबिरा। कोलेबिरा कांग्रेस द्वारा शनिवार प्रखंड अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि सुलभ नेल्सन डुंगडुंग के अगुवाई में भारत जोड़ो पदयात्रा के संबंध में बैठक की गई ।मौके पर बताया गया कि राहुल गांधी के नेतृत्व में देश में हो रही भारत जोड़ो यात्रा के तहत झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निदेर्शानुसार आगामी 19 नवंबर को सिमडेगा जिले में भी भारत जोड़ो पदयात्रा की जाएगी इसी के तहत कोलेबिरा प्रखंड में भी भारत जोड़ो पदयात्रा निकाली जाएगी कोलेबिरा प्रखंड के सभी पंचायत अध्यक्ष तथा बूथ कमेटी सभी विंग के पदाधिकारी तथा कमेटी को निर्देश दी गई। मौके पर ज़िला परिषद अध्यक्षा रोस प्रतिमा सोरेंग, विधायक प्रतिनिधि समी आलम , अध्यक्ष रावेल लकड़ा, श्याम लाल प्रसाद, फुल केरिया डांग, सुरेश द्विवेदी, विलियम समद,जमीर हसन,कंदरु नायक, अमृत डुंगडुंग, बदरुद्दीन मिया, तथा अन्य पंचायत अध्यक्ष उपस्थित रहे।

9 नवंबर को जलडेगा में लगेगा ऐतिहासिक रास मेला

जलडेगा। जलडेगा दुर्गा मंदिर परिसर में राधा कृष्ण रास मेला आयोजन समिति सदस्यों का समिति अध्यक्ष महाप्रसाद सिंह की अध्यक्षता में विचारार्थ बैठक का आयोजन किया गया। 9 नवम्बर बुधवार की रात आयोजित होने वाली एतेहासिक राधा कृष्ण रास मेला के सफल संचालन के लिए सदस्यों के बीच अलग अलग कार्यो की जिम्मेवारी दी गई। प्रति वर्ष की तरह वर्तमान वर्ष भी नागपुरी कवि सम्मेलन एवं छऊ नृत्य आयोजन करने का निर्णय लिया गया। सुरक्षा ब्यवस्था को देखते हुए आयोजन समिति रोड कालीकरण निर्माण कार्य को मेला आयोजन से पहले पुर्ण करने की मांग किया गया है। सभी सदस्यों को मेला सहयोग राशि के रूप में एक हजार रूपए देना तय किया गया है। महाप्रसाद सिंह, सुभाष साहू, मोतिलाल ओहदार, त्रिलोक साहू, रामेश्वर सिंह, जोगेश्वर बिंझिया को सदस्य चंदा की जिम्मेवारी दी गई है। एवं जगदीश बडाईक को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, व रामेश्वर सिंह को छऊ नृत्य आयोजन ब्यवस्था की जिम्मेवारी दी गई है, बुधराम बडाईक के मेले में लाईटिंग ब्यवस्था की जिम्मेवारी दी गई है। एवं 1 नवम्बर की पुनः बैठक करने का निर्णय लिया गया। मौके पर हेमशरण सिंह, अघना खडिया, बालमुनी लुगून, जयंती देवी, देवनारायण नायक, सहीत कई उपस्थित थे।

आस्था का महापर्व छठः खरना संझवत के बाद 36 घंटे का निराजल व्रत शुरू

राहुल कौशल

लोहरदगा। सूर्य उपासना का महापर्व छठ पूजा की उमंग लोहरदगा में चारो ओर दिखाई दे रही है। चार दिवसीय पर्व के दूसरे दिन शनिवार को खरना संझवत की रस्म व्रती महिलाओं ने पूरा किया। पूरे दिन भर निर्जला उपवास रखकर छठी मइया का ध्यान किया। व्रती महिलाओ ने संध्या समय में स्नान कर छठी मइया की पूजन विधि विधान से करने के बाद उन्हे रसियाव, खीर, घी लगी रोटी, केला का भोग लगाया। फिर इस भोग को स्वयं ग्रहण किया। खरना के बाद सुहागिनो की मांग भरकर उन्हे सदा सुहागन रहने का आशीर्वाद भी दिया। फिर परिजनो और आसपास के लोगों के बीच खरना का प्रसाद वितरित किया गया। खरना के बाद से ही 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो गया। छठ पूजा के दौरान पूरे घर की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है। छठ पूजा के तीसरे दिन दिन में छठ का प्रसाद बनाया जाएगा। प्रसाद के रूप में ठेकुआ, जिसे कुछ क्षेत्रों में टिकरी भी कहते हैं, के अलावा चावल के लड्डू, जिसे लड्डुआ भी कहा जाता है, बनाते हैं। इसके अलावा चढ़ावा के रूप में लाया गया साँचा और फल भी छठ प्रसाद के रूप में शामिल होता है। शाम को पूरी तैयारी और व्यवस्था कर बाँस की टोकरी में अर्घ्य का सूप सजाया जाता है और व्रति के साथ परिवार तथा पड़ोस के सारे लोग अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने घाट की ओर चल पड़ते हैं। महिलाएं छठी मइयां की गीत गाते हुए सिर पर पूजा की देउरी रख गाजे बाजे के साथ स्थानीय नदी, तालाब व जलाायो में इकट्ठा होकर सामूहिक रूप से अर्घ्य दान संपन्न करते हैं। नदी किनारे जा कर नदी से मिट्टी निकाल कर छठ माता का चैरा बनाते हैं वहीं पर पूजा का सारा सामान रख कर नारियल चढ़ाते हैं और दीप जलाते हैं। उसके बाद टखने भर पानी में जा कर खड़े होते हैं और सूर्य देव की पूजा के लिए सूप में सारा सामान लेकर पानी से अर्घ्य देते हैं और पाँच बार परिक्रमा करते हैं। सूर्य को जल और दूध का अर्घ्य दिया जाता है तथा छठी मैया की प्रसाद भरे सूप से पूजा की जाती है। इस दौरान कुछ घंटे के लिए मेले का दृश्य बन जाता है। उदयगामी सूर्य को अर्घ्य देने को लेकर व्रती वहीं पुनः इक्ट्ठा होते हैं जहाँ उन्होंने शाम को अर्घ्य दिया था। पुनः पिछले शाम की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति होती है। सूर्य देव की प्रतीक्षा में महिलाएँ हाथ में सामान से भरा सूप लेकर सूर्य देव की आराधना व पूजा नदी में खड़े हो कर करती हैं। जैसे ही सूर्य की पहली किरण दिखाई देती है सब लोगों के चेहरे पर एक खुशी दिखाई देती है और महिलाएँ अर्घ्य देना शुरू कर देती हैं। शाम को पानी से अर्घ्य देते हैं लेकिन सुबह दूध से अर्घ्य दिया जाता है। इस समय सभी नदी में नहाते हैं तथा गीत गाते हुए पूजा का सामान ले कर घर आ जाते हैं। अंत में व्रति कच्चे दूध का शरबत पीकर तथा थोड़ा प्रसाद खाकर व्रत पूर्ण करते हैं।

लोहरदगा में गूंज रही गीत लहरियां

इधर छठ पर्व को लेकर मारबउ रे सुगवा धनुष से, सुगा गिर मुरझाए, महिमा बा अगम अपार, उगहु सुरूजदेव भईल अरगीया के बेर, के कईली छठ बरतिया, दर्शन देहुं न अपार, मोरा भईया जाएल, छोटी मोटी हमरी, हे छठ मईया पटना के घाट पर, कोपी-कोपी बोले-ल सुरूजदेव, हाजीपुर के केलवा भईल महंग, केरवा जे फरेला गवद से ओह पर सुगा मंडराय, उ जे खबरी जनइबो अदिक से सुगा देले जुठियाए, उ जे मरबो रे सुगवा धनुक से सुगा गिरे मुरझाय, उ जे सुगनी जे रोवे ले वियोग से आदित होइ ना सहाय आदि गीत से हर घर और गली गूंज रही हैं।

छठव्रती महिलाएं लगातार उपवास के साथ सुखद शैय्या का करती है त्याग

छठ उत्सव के केंद्र में छठ व्रत है जो एक कठिन तपस्या की तरह है। यह प्रायः महिलाओं द्वारा किया जाता है किंतु कुछ पुरुष भी यह व्रत रखते हैं। व्रत रखने वाली महिला को परवैतिन भी कहा जाता है। चार दिनों के इस व्रत में व्रती को लगातार उपवास करना होता है। भोजन के साथ ही सुखद शैय्या का भी त्याग किया जाता है। पर्व के लिए बनाए गए कमरे में व्रती फर्श पर एक कंबल या चादर के सहारे ही रात बिताई जाती है। इस उत्सव में शामिल होने वाले लोग नए कपड़े पहनते हैं। पर व्रती ऐसे कपड़े पहनते हैं, जिनमें किसी प्रकार की सिलाई नहीं की होती है। महिलाएं साड़ी और पुरुष धोती पहनकर छठ करते हैं।

न्यूज गैलरी

सेल करेगी राउरकेला में हवाई अड्डे का परिचालन

नयी दिल्ली (एजेंसी)। सरकारी क्षेत्र की इस्पात कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) अब वाणिज्यिक हवाई अड्डा परिचालन का भी काम करेगी। सेल और एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एएआई) लिमिटेड ने ओडिशा राज्य में राउरकेला से वाणिज्यिक उड़ान के लिए शुक्रवार को नई दिल्ली में एक परिचालन एवं प्रबंध (ओ एंड एम) समझौता किया है। सेल ने आज एक विज्ञप्ति में यह जानकारी दी। सेल ने 2018 में उड़ान योजना के तहत, वाणिज्यिक उड़ानों के संचालन हेतु अपने निजी हवाई अड्डे के उपयोग के लिए एक समझौता किया था। बयान में कहा गया है कि अब उसने राउरकेला से वाणिज्यिक उड़ान शुरू करने के लिए राउरकेला स्टील प्लांट के जरिये एएआई के साथ ओ एंड एम अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने इस हवाई अड्डे के उन्नयन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। ओडिशा सरकार अन्य स्थानीय विलएरेन्सेज प्राप्ति के अलावा सुरक्षा, फायर और एम्बुलेंस सेवाएं प्रदान करेगी। सेल – राउरकेला स्टील प्लांट की ओर से एएआई हवाई अड्डे का संचालन और प्रबंधन करेगा। यह हवाई अड्डा औद्योगिक शहर राउरकेला और आसपास के सभी हवाई यात्रियों को हवाई कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करेगा। आगामी हॉकी विश्व कप के लिहाज से भी हवाई सेवा की यह शुरूआत महत्वपूर्ण है, जहां जनवरी 2023 के दौरान विश्वकप के कुल 44 हॉकी मैचों में से 20 मैच आयोजित किए जा रहे हैं। इस वैश्विक आयोजन के दौरान राउरकेला में लोगों का भारी संख्या में आवागमन होगा। इस लिहाज से आवागमन की जरूरतों को पूरा करने के लिए यह हवाई संपर्क एक प्रमुख आवश्यकता बनकर उभरेगी।

माउंट फैबर ने सिंगापुर में शुरू की भारतीय सैलानियों पर केंद्रित सुविधा

सिंगापुर (एजेंसी)। सिंगापुर में आने वाले भारतीय पर्यटकों की अभिरुचि और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए भ्रमण और लाइफस्टाइल सेवाओं का परिचालन करने वाली कंपनी माउंट फैबर लेजर ग्रुप (एमएफएलजी) ने यहां सेंट्रल बीच बाजार नामक से एक नया आकर्षक केंद्र प्रस्तुत किया है। कंपनी ने एक बयान में बताया कि यह सुविधा भारत और उसके पड़ोसी देशों के पर्यटकों को आकर्षित करेगी। यह सुविधा दिन-रात खुली होगी, जहां हमेशा मेले और उत्सव का वातावरण होगा। इस केंद्र पर भारत के लजीज भोजन के लिए विशेष फूड कोर्ट और रेस्त्रां के प्रबंध किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि सिंगापुर भारत के सबसे अधिक सैलानियों के आकर्षक पर्यटन केंद्रों में एक है। एमएफएलजी ने कहा है कि सेंट्रल बीच बाजार इस तरह बनाया गया है कि यहां कम बजट पर सभी को सुखद अनुभव मिल सके। एमएफएलजी के कहा है कि वह इस नए आकर्षण केंद्र के साथ भारत के पड़ोसी देशों के पर्यटकों और यात्रियों को भी लुभाएगी। कार्निवाल बीच पर दक्षिण-पूर्व एशिया के सबसे ऊंचे फाउंटेन सेंटोसा स्काईजेट के अलावा रोमांचक सिमुलेशन राइड्स और कार्निवाल गेम्स हैं और संगीतमय फौव्वारा और पानी के खेल जैसी सुविधाएं हैं।

वोडा-आइडिया की ईजीएम 21 नवंबर को, ऑनलाइन वोटिंग 17 नवंबर से

नयी दिल्ली। वोडाफोन आइडिया लिमिटेड के शेयरधारकों की एक असाधारण आम बैठक (ईजीएम) 21 नवंबर (सोमवार) को शाम पांच बजे आयोजित की जाएगी। कंपनी ने शेयरधारकों को भेजी गए सूचना में यह जानकारी दी है। यह बैठक सेबी के नियमों के अनुसार वीडियो कॉन्फ्रेंस / अन्य दृश्य-श्रव्य माध्यमों से होगी। कंपनी ने प्रस्तावों पर 17 नवंबर से ऑनलाइन मतदान (ई-वोटिंग) संबंदी दिशानिर्देश भी संलग्न किए हैं। कंपनी ने कहा है , सदस्यों के लिए ई-वोटिंग प्रणाली के माध्यम से ईजीएम की सूचना में निर्धारित व्यवसाय के अंतर्गत दूरस्थ रूप से (रिमोट ई-वोटिंग) वोट डालने का अवसर होगा।ह्व ई-वोटिंग की शुरूआत 17 नवंबर, 2022 सुबह 9:00 बजे से शुरू हो कर 20 नवंबर, 2022 शाम पांच बजे तक चलेगी। कंपनी ने कहा कि वे सदस्य, जो वीसी/ओएवीएम सुविधा के माध्यम से ईजीएम में उपस्थित होंगे और रिमोट ई-वोटिंग के माध्यम से संकल्पों पर अपना वोट नहीं डाला है और जो किसी अन्य कारण से वोट डालने से प्रतिबंधित नहीं किए गए हैं, वे ईजीएम दौरान ई-वोटिंग प्रणाली के माध्यम से मतदान करने के पात्र होंगे।

क्रूड स्टील के उत्पादन की क्षमता बढ़कर हो जाएगी डेढ़ करोड़ टन : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

सूरत (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के सूरत में आर्सेलर मित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया (एएम/एनएस इंडिया) हजीरा प्लांट के विस्तार के अवसर पर शुक्रवार को कहा कि इस एक्सपान्शन के बाद हजीरा स्टील प्लांट में क्रूड स्टील के उत्पादन की क्षमता नौ मिलियन टन से बढ़कर 1.5 करोड़ टन हो जाएगी। श्री मोदी ने अपने वीडियो संदेश के माध्यम से आज इस अवसर पर कहा कि इस स्टील प्लांट के माध्यम से सिर्फ इन्वेस्टमेंट ही नहीं हो रहा है बल्कि भविष्य के लिए नई संभावनाओं के अनेक द्वार भी खुल रहे हैं। उन्होंने कहा कि 60 हजार करोड़ से ज्यादा का निवेश गुजरात और देश के युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर बनाएगा। इस एक्सपान्शन के बाद हजीरा स्टील प्लांट में क्रूड स्टील के उत्पादन की क्षमता नौ मिलियन टन से बढ़कर डेढ़ करोड़ टन हो जाएगी। उन्होंने कहा कि मैं लक्ष्मी मित्तल जी को, भाई आदित्य को, और उनकी पूरी टीम को बहुत बधाई देता हूं। आप सभी को दिवाली और नव वर्ष की अनेक-अनेक शुभकामनाएँ। नव वर्ष में आज टेक्नोलॉजी के द्वारा आप सभी से मिलना हुआ है, नव वर्ष आपके लिए सुख शांति और समृद्धि लेकर आए ऐसी सभी गुजरात के मेरे प्यारे भाइयों-बहनों के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ। आप सभी को आर्सेलर मित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया के हजीरा प्लांट का विस्तार होने पर बहुत-बहुत बधाई। प्रधानमंत्री ने कहा कि अमृतकाल में प्रवेश कर चुका हमारा देश अब 2047 के विकसित भारत के लक्ष्यों की ओर बढ़ने को आतुर है। देश की इस विकास यात्रा में स्टील इंडस्ट्री की भूमिका और सशक्त होने वाली है। क्योंकि जब देश में स्टील सेक्टर मजबूत होता है तो इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर मजबूत होता है। जब स्टील सेक्टर का विस्तार होता है तो रोड, रेलवे, एयरपोर्ट और बंदरगाह का विस्तार होता है। जब स्टील सेक्टर आगे बढ़ता है तो कंस्ट्रक्शन, ऑटोमोटिव सेक्टर में नए आयाम जुड़ जाते हैं। जब स्टील सेक्टर की क्षमता बढ़ती है तो डिफेंस, कैपिटल गुड्स और इंजीनियरिंग प्रोडक्ट्स के विकास को भी नई ऊर्जा मिलती है। इतना नहीं अब तक हम आयरन ऑर एक्सपोर्ट करके ही संतोष मान लेते थे। आर्थिक विकास के लिए हमारी जो भू सम्पदाएं हैं उसका वैल्यूएशन होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा इस प्रकार के स्टील प्लांट के विस्तार के कारण हमारे आयरन ऑर का सही इस्तेमाल हमारे देश में होगा। देश के नौजवानों को बहुत रोजगार मिलेंगे और विश्व के बाजार में भारत का स्टील एक जगह भी बनाएगा। मुझे बताया गया है कि ये सिर्फ प्लांट के विस्तार की ही बात नहीं है बल्कि इसके साथ भारत में पूरी नई टेक्नोलॉजी भी आ रही है।

गरीबों को बांटने के लिए भारत को सालाना 10.8 करोड़ टन खाद्यान्न की जरूरत : गोयल

हैदराबाद (एजेंसी)। केंद्रीय खाद्य मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को कहा कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत 80 करोड़ गरीबों को हर साल 10 किलो चावल या गेहूं देने के लिए भारत को सालाना 10.8 करोड़ टन खाद्यान्न की जरूरत है। गोयल ने फेडरेशन ऑफ तेलंगाना चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के एक संवाद सत्र में आशंका जताई कि उत्तर प्रदेश और बिहार में खाद्यान्न उत्पादन घट सकता है, हालांकि अभी तक इसकी पुष्टि नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि 80 करोड़ लोगों को पहले ही प्रति व्यक्ति पांच किलो खाद्यान्न मिल रहा है। इसके अलावा अंत्योदय परिवारों को 35 किलो खाद्यान्न दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत यह कोटा बढ़ा दिया गया है। उन्होंने कहा, ह्यहमुझे अतिरिक्त खाद्यान्न के लिए हर महीने 40 लाख टन की जरूरत है। इसके अलावा हमें पहले से ही 50 लाख टन की जरूरत है। इसका मतलब है कि हमें हर महीने 90 लाख टन अनाज-गेहूं और चावल की जरूरत है यानी एक साल में करीब 10.80 करोड़ टन। यह गरीब लोगों को लगभग मुफ्त मिलता है।" उन्होंने कहा कि पिछले महीने तक भारत ने जिंसों के निर्यात को प्रोत्साहित किया लेकिन सरकार को अपने लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करनी है। गोयल ने चावल के निर्यात पर लगाए गए 20 प्रतिशत के कर को भी सही ठहराया।

दिल्ली में ऑटो-टैक्सी की सवारी हुई मंहगी, किराया बढ़ाने को मंजूरी

नयी दिल्ली। सीएनजी की बढ़ती कीमतों को देखते हुए दिल्ली सरकार ने ऑटो रिक्शा और टैक्सी के किराये में वृद्धि के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह घोषणा दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) चुनावों से पहले की गई है, जिसकी तारीखों की घोषणा की जानी है। ऑटोरिक्शा चालकर यहां सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी का एक बड़ा वोटबैंक है। संशोधित किराया ढांचे के मुताबिक, ऑटो-रिक्शा के लिए शुरूआती 1.5 किलोमीटर दूरी के लिए न्यूनतम किराया (मीटर डाउन चार्ज) 25 रुपये से बढ़ाकर 30 रुपये कर दिया गया है। इस सीमा के बाद हरेक किलोमीटर पर किराया 9.50 रुपये से बढ़ाकर 11 रुपये कर दिया गया है। प्रतीक्षा शुल्क और रात के शुल्क में कोई वृद्धि नहीं की गई है, जबकि अतिरिक्त सामान के लिए शुल्क 7.50 रुपये से बढ़ाकर 10 रुपये कर दिया गया है।

यूएस फेड की मीटिंग के पहले वाल स्ट्रीट में दिखी जोरदार तेजी

नई दिल्ली। विगत शुक्रवार को वाल स्ट्रीट पर एक बड़े आधार वाली शानदार रैली देखने को मिली। अच्छे आर्थिक आंकड़ों और बेहतर अर्निंग आउटलुक ने अगले हफ्ते होने वाली यूएस फेड की पॉलीसी मीट के पहले निवेशकों की जोखिम उठाने की क्षमता को बढ़ा दिया है। शुक्रवार को सभी बड़े अमेरिकी इंडेक्स 2.5 फीसदी या इससे ज्यादा की बढ़त के साथ बंद हुए। एस एंड पी नाशक में लगातार दूसरे हफ्ते बढ़त देखने को मिली। वहीं, ब्लूचिप डॉओ में लगातार चौथे हफ्ते तेजी देखने को मिली थी। इस शुक्रवार को डॉओ में मई के बाद की सबसे बड़ी सप्ताहिक बढ़त देखने को मिली। कर्सन ग्रुप के रयान डेट्रिक का कहना है कि अक्टूबर का महीना डॉओ के लिए अब तक का सबसे बेहतर महीना रहा है। इससे ये संकेत मिलता है कि बीयर मार्केट अब अपने अंत के कगार पर है। उन्होंने आगे कहा कि आमतौर पर बीयर मार्केट के अंतिम दौर में बाजार में एक बड़ी मासिक तेजी देखने को मिलती है। उन्होंने आगे कहा कि ये 28 अक्टूबर की शुक्रवार लगातार दूसरा ऐसा शुक्रवार था जिसमें हमें काफी एग्रेसिव खरीदारी देखने को मिली। ये इस बात का संकेत है कि निवेशक अपनी पोजीशन बनाए रखने को लिए ज्यादा अनुकूल रुख अपना रहे हैं। शुक्रवार के कारोबार में एप्पल इंस में आई 7 फीसदी की तेजी ने एमजोन कॉम में आई 6.8 फीसदी की गिरावट की भरपाई कर दी।

विदेशी मुद्रा भंडार 3.85 अरब डॉलर घटकर 524.5 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में कमी आने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार 21 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में 3.85 अरब डॉलर कम होकर 524.5 अरब डॉलर रह गया जबकि इसके पिछले सप्ताह यह 4.5 अरब डॉलर घटकर 528.4 अरब डॉलर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 21 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 3.6 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 465.1 अरब डॉलर रह गयी। इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 24.7 करोड़ डॉलर की कमी आई और यह घटकर 37.21 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) में 70 लाख डॉलर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 17.44 अरब डॉलर पर पहुंच गया। हालांकि इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि 1.4 करोड़ डॉलर कम होकर 4.79 अरब डॉलर पर आ गई।

सेबी ने 2 संस्थाओं पर लगाया 27 लाख रुपए का जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। मार्केट रेग्युलेटर सेबी ने विगत शुक्रवार को आरएफएल इंटरनेशनल लिमिटेड के मामले में नियामक मानदंडों का उल्लंघन करने के लिए दो संस्थाओं पर 27 लाख रुपए का जुमार्ना लगाया। अपने आदेश में सेबी ने आरएफएल इंटरनेशनल लिमिटेड पर 17 लाख और इसके प्रबंध निदेशक अनीश शाह पर 7 लाख का जुमार्ना लगाया। रेग्युलेटरी नियमों का पालन किए बिना कुछ संस्थाओं को अप्रैल 2011 की तारीख वाले नकली शेयर प्रमाण पत्र जारी करने के लिए ये जुमार्ना लगाया गया। सेबी को कुछ संस्थाओं से आरएफएल इंटरनेशनल लिमिटेड के अप्रैल 2011 की तिथि वाले शेयर प्रमाणपत्रों की प्रतियां प्राप्त हुई थीं। ये शेयर उन्हें आरएफएल द्वारा जारी किए गए थे। इसके बावजूद ये पाया गया था कि मार्च 2011 से जून 2011 को समाप्त तिमाही के लिए आरएफएल के शेयरहोल्डिंग स्ट्रक्चर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। इसके बाद सेबी ने जनवरी 2011 से जून 2011 की अवधि के लिए आरएफएल इंटरनेशनल के मामले में जांच की। रेग्युलेटर ने जांच ने पाया कि आरएफएल इंटरनेशनल ने कुछ संस्थाओं से धन प्राप्त किया। इस धन के बदले में उसने उन्हें शेयर प्रमाणपत्र जारी किया था। जिसके लिए उनके पास लिस्टिंग और ट्रेडिंग की अनुमति नहीं थी। इसके अलावा, आरएफएल इंटरनेशनल ने इस बारे में न तो बीएसई को सूचित किया और न ही उक्त शेयरों को बीएसई पर लिस्ट किया। इसने अपने पेड अप शेयर कैपिटल में वृद्धि भी नहीं की। सेबी ने अपनी जांच में पाया था कि आरएफएल इंटरनेशनल और उसके प्रबंध निदेशक अनीश शाह रेग्युलेटरी नियमों का उल्लंघन करके कुछ संस्थाओं को अप्रैल, 2011 के नकली शेयर प्रमाणपत्रों को जारी करने में शामिल थे। इसके अलावा रेग्युलेटर ने आरएफएल इंटरनेशनल पर 3 लाख का जुमार्ना लगाया है। हालांकि ये जुमार्ना सुप्रीम कोर्ट के समक्ष लंबित सेबी की अपील के परिणाम के अधीन होगा। ये मामला एसरा में धारा 23ई लिस्टिंग की शर्तों से संबंधित है।

> रेग्युलेटर ने जांच ने पाया कि आरएफएल इंटरनेशनल ने कुछ संस्थाओं से धन प्राप्त किया। इस धन के बदले में उसने उन्हें शेयर प्रमाणपत्र जारी किया था। जिसके लिए उनके पास लिस्टिंग और ट्रेडिंग की अनुमति नहीं थी।

आर्थिक मंदी की चपेट में आएगा चीन, आईएमएफ ने एशिया की विकास दर को घटाया

नई दिल्ली। यूरोप और यूएस में आर्थिक मंदी की आशंका के बीच एशियाई देशों के लिए चिंता बढ़ गई है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने एशिया की आर्थिक विकास दर भी धीमी रहने की संभावना जताई है। आईएमएफ ने कहा यदि वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रतिद्वंद्वी व्यापारिक ब्लॉकों में बंट जाती है, तो एशिया विशेष रूप से बड़े नुकसान की चपेट में आ जाएगा। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड ने चीन की अर्थव्यवस्था में बड़ी गिरावट का अनुमान लगाया है। वहीं, कमजोर वैश्विक संकेतों के चलते एशिया की आर्थिक विकास दर में कटौती की है। आईएमएफ ने एशिया की संभावित विकास दर को कम करते हुए 2022 में इसे 4 फीसदी कर दिया है। 2021 में यह दर 6.5 फीसदी थी जबकि 2023 में इसके 4.3 फीसदी रहने की संभावना है। यह पिछले 20 वर्षों में देखी गई 5.5% की औसत दर से काफी कम है।

जिला प्रशासन, पलामू
आम सूचना

"आपकी योजना–आपकी सरकार–आपके द्वार"
(जिला जनसम्पर्क कार्यालय)

सरकार के तीन वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में " आपकी योजना–आपकी सरकार–आपके द्वार" कार्यक्रम के द्वितीय चरण में शिविर का आयोजन ग्राम पंचायतों के **पंचायत भवनों में** दिनांक 01–14 नवम्बर 2022 तक आयोजित किया जाना हैं। द्वितीय चरण अन्तर्गत कार्यक्रमों की विवरणी निम्नवत है:–

क्रमांक	प्रखण्ड का नाम	दिनांक	क्रमांक	पंचायत का नाम
1	2	3	5	6
1	मोहम्मदगंज समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	भजनिया
		05-11-2022	2	गोड़ाडीह
		09-11-2022	3	मोहम्मदगंज
		14-11-2022	4	कादल कुरमी
2	हैदरनगर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	बरडण्डा
		04-11-2022	2	मोकहरकला
		07-11-2022	3	ईमामनगर बरेवा
		09-11-2022	4	सड़ेया
		11-11-2022	5	विलासपुर
		14-11-2022	6	कुकही
3	हुसैनाबाद समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	बेनीकला
		02-11-2022	2	पथरा
		03-11-2022	3	पोलडीह
		04-11-2022	4	उर्दवार (मंजूराहा)
		05-11-2022	5	झरगड़ा
		07-11-2022	6	पतराखुर्द
		09-11-2022	7	कोरसी
		10-11-2022	8	कुर्मीपुर
		11-11-2022	9	बैरांव
		12-11-2022	10	जमूआ
		13-11-2022	11	डंडीला
		14-11-2022	12	महुडंड
4	पीपरा समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	पीपरा
		05-11-2022	2	दलपतपुर
		12-11-2022	3	बभन्डी
5	हरिहरगंज समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	खडगपुर
		05-11-2022	2	सरसोत
		09-11-2022	3	सलैया
		14-11-2022	4	ढकचा
6	नौडीहा बाजार समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	खैरादोहर
		03-11-2022	2	सरईडीह
		05-11-2022	3	शाहपुर
		07-11-2022	4	करकट्टा
		09-11-2022	5	डगरा
		11-11-2022	6	ललगड़ा
7	छत्तरपुर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	सिलदाग
		02-11-2022	2	डाली
		03-11-2022	3	मुरूमदाग
		04-11-2022	4	हुलसम
		05-11-2022	5	चेराई –1
		07-11-2022	6	हुटुकदाग
		09-11-2022	7	बगैया
		10-11-2022	8	मड़वा
		11-11-2022	9	मुनकेरी
		12-11-2022	10	चिरू
8	पाण्डू समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	महुगाँवा
		03-11-2022	2	सिलदिली
		05-11-2022	3	मुसीखाप
		09-11-2022	4	कजरू कला
		12-11-2022	5	रतनाग
9	उँटारी रोड समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	करकट्टा
		03-11-2022	2	जोगा
10	विश्रामपुर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	तोलरा
		03-11-2022	2	लालगढ़
		05-11-2022	3	गुरी
		09-11-2022	4	भंडार
		12-11-2022	5	पंजरी कला
11	नावाबाजार समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	तुकबेरा
		05-11-2022	2	रबदा
		09-11-2022	3	कन्डा
		14-11-2022	4	ईटको
12	पण्डवा समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	पंडवा
		05-11-2022	2	लोहड़ा
		09-11-2022	3	गाड़ीखास
		14-11-2022	4	कजरी
13	चैनपुर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	पतरिया खुर्द
		02-11-2022	2	पूर्वडीहा
		03-11-2022	3	मझीगाँवा
		04-11-2022	4	तलेया बभन्डी
		05-11-2022	5	महूगांवा
		06-11-2022	6	बन्दुआ
		07-11-2022	7	सेमरा
		08-11-2022	8	नेउरा
		09-11-2022	9	झरिया
		10-11-2022	10	भड़गांवा
		11-11-2022	11	कंकारी
		12-11-2022	12	बसरियाकला
		13-11-2022	13	चान्दो
		14-11-2022	14	अवसाने
14	रामगढ़ समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	उलडन्डा
		03-11-2022	2	हुटार
		05-11-2022	3	बांसडीह खुर्द
15	सदर मेदिनीनगर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	कौड़िया
		03-11-2022	2	सरजा
		05-11-2022	3	झाबर
		09-11-2022	4	लहलहे
		12-11-2022	5	पोलपोल कला
16	पाटन समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	शोले
		02-11-2022	2	रजहारा
		03-11-2022	3	सिरमा
		04-11-2022	4	किसुनपुर
		05-11-2022	5	जंघासी
		07-11-2022	6	पचकेडिया
		09-11-2022	7	रूदीडीह
		10-11-2022	8	कसवाखाड़
		11-11-2022	9	महुलिया
		12-11-2022	10	नावाखास
		13-11-2022	11	सूठा
		14-11-2022	12	लोईगा
17	मनातू समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	पदमा
		03-11-2022	2	बंशीखुर्द
		05-11-2022	3	डुमरी
18	तरहसी समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	पाठक पगार
		03-11-2022	2	सोनपुरा
		05-11-2022	3	नवगढ़
		07-11-2022	4	कसमार
		09-11-2022	5	उदयपुरा–2
		11-11-2022	6	गोईन्दी
19	नीलाम्बर– पीताम्बरपुर समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	ओरियाकला
		03-11-2022	2	कुन्दरी
		05-11-2022	3	नौडीहा
		07-11-2022	4	राजहरा
		09-11-2022	5	पीपरा खुर्द
		11-11-2022	6	जामुनडीह
		12-11-2022	7	चौरा
		14-11-2022	8	डबरा
20	सतबरवा समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	रबदा
		03-11-2022	2	सतबरवा
		05-11-2022	3	दुलसुलमा
		09-11-2022	4	घुटुवा
		12-11-2022	5	बकोरिया
25	पांकी समय– पूर्वाहन 10:00 बजे से	01-11-2022	1	करार
		02-11-2022	2	डंडारकला
		03-11-2022	3	पांकी पश्चिम भाग
		04-11-2022	4	पांकी पूर्वी भाग
		05-11-2022	5	दुब
		06-11-2022	6	पगार खुर्द
		07-11-2022	7	नौडीहा
		08-11-2022	8	लोहरसी
		09-11-2022	9	अम्बावार
		10-11-2022	10	नुरू
		11-11-2022	11	केल्हवा
		12-11-2022	12	नवडीहा
		13-11-2022	13	ताल
		14-11-2022	14	केकरगढ

कृपया अपने निकटतम पंचायत शिविर में निर्धारित तिथि को आकर सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लें।

PR.NO. 281066 Palamu(22-23):D

उपायुक्त, पलामू।

एक नजर इधर भी

'जैसी करनी वैसी भरनी'

जिंताओ के साथ चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महाधिवेशन में जो अमानवीय व्यवहार हुआ, वह शायद उन लोगों को शायद ही परेशान कर पाए, जिन्होंने तिब्बत के आंदोलन और उसे चीनी सेना द्वारा निर्ममतापूर्वक कुचले जाने की जानकारी है। राजनीति व इतिहास की दुनिया में एक कहावत बार-बार दोहराई जाती है। कहा जाता है कि इतिहास खुद को दोहराता है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि 22 अक्टूबर 2002 की तारीख को हिमालय के दूसरी तरफ, द ग्रेट चाइना वाल के उस पार जो कुछ हुआ, क्या उसे 14 मार्च 1998 की पुनरावृत्ति कहेंगे? चौबीस साल पहले का मार्च का महीना हर साल की ही तरह था। जैसा कि मार्च के महीने में होता है, दिल्ली से सर्दी की विदाई हो रही थी, गर्मियों की आहट सुनाई देने लगी थी। देश की सबसे पुरानी पार्टी के अध्यक्ष रोजाना की तरह अपनी शाम की चौपाल लगाते थे। खाता न बही, जो केसरी कहें वहीं सही का मुहावरा रच चुके सीताराम केसरी भांप नहीं पाए कि जिस कांग्रेस के वे अरसे बाद निर्वाचित अध्यक्ष चुने गये हैं, उसी कांग्रेस के कुछ लोगों ने उनके तख्ता पलट की तैयारी कर ली है। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के बीच सीताराम केसरी की धोती खींच दी गई। उन्हें तकरीबन जबरदस्ती कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। केसरी कहते रह गये कि कार्यसमिति की बैठक, उसमें सोनिया गांधी को अध्यक्ष बनाने के लिए रखे गये प्रस्ताव, सभी पार्टी संविधान के मुताबिक असंवैधानिक हैं। लेकिन उनकी नहीं सुनी गई और उन्हें बेइजत करके बाहर निकाल दिया गया। कुछ ऐसा ही नजारा दिल्ली से करीब आठ हजार एक सौ पचास किलोमीटर दूर बीजिंग में भी 22 अक्टूबर 2022 को दिखा। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीसवें महाधिवेशन के आखिरी दिन चीन के दस साल राष्ट्रपति रहे हू जिंताओं को बीच बैठक से सुरक्षाकर्मियों ने जबरिया उठाकर बाहर निकाल दिया। तब वे राष्ट्रपति शी जिनफिंग और प्रधानमंत्री ली खेचियांग के बीच पहली ही कतार में बैठे हुए थे। जब उन्हें जबरिया निकाला जा रहा था, तब उन्होंने संभवतः विरोध किया। उन्होंने राष्ट्रपति और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख शी जिनफिंग से कुछ कहा भी, लेकिन उन्होंने क्या कहा, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। उन्होंने अपने चेले प्रधानमंत्री ली खेचियांग के कंधे पर भी हाथ रखा। लेकिन खेचियांग भी कुछ नहीं कर पाए। उन्हें तकरीबन लाचारी हालत में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महाधिवेशन के आखिरी सत्र से निकलना पड़ा। चीन के लिए यह घटना अप्रत्याशित नहीं मानी जा सकती। कम्युनिस्ट पार्टियों का जो चलन रहा है, जिस तरह वे सर्वहारा के अधिनायकत्व का समर्थन करती हैं, वहां मानवीय मूल्य और विचार कोई मायने नहीं रखते। सर्वहारा को ताकत और अधिकार देने की हिमायत करने वाले मार्क्सवादी दर्शन पर चलने वाली कम्युनिस्ट पार्टियों से मानवीयता की उम्मीद करना बेमानी है। दुनिया में मार्क्सवाद की बुनियाद पर पहली क्रांति 1917 में रूस में हुई और वहां के राजा जार के शासन का खात्मा हुआ। इसके बाद लेनिन के खूंखार नेतृत्व में जारशाही के एक प्रतीक को खत्म किया गया। इस दौरान जार के परिवार के एक-एक सदस्य को चुन-चुनकर मारा गया। सर्वहारा को अधिकार देने वाली विचारधारा के नाम पहले लेनिन और बाद में स्टालिन ने अपने विरोधियों को चुन-चुनकर निबटाया। उनकी हत्याएं की गईं, विरोधियों के समूल सफाए के लिए परिवार के परिवार को खत्म किया गया। चीन में आज जिस कम्युनिस्ट पार्टी का एकाधिकारवादी शासन है, उसकी वैचारिक बुनियाद मार्क्स से भी एक कदम आगे माओ की वैचारिकी है। माओ कहते थे कि सत्ता बंदूक की गोली से निकलती है। उन्होंने भी अपने तीस साल के शासनकाल में अपने वैचारिक और राजनीतिक विरोधियों को चुन-चुनकर निबटाया। खूंखार कदम उठाने में उनका भी सानी नहीं रहा।

■ उमेश चतुर्वेदी

देश में बढ़ती लागत, घटती आमद

बेशक पिछले छह वर्षों में फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में पहले से वृद्धि हुई है। कृषि बजट में वृद्धि की गई है, जो अब 1.23 लाख करोड़ रुपए का है। कृषि में निवेश भी बढ़ा है। मगर इन सब के विपरीत खेती में काम आने वाले बीज, उर्वरक, कीटनाशक, डीजल सहित मजदूरी भी इन छह वर्षों में दोगुनी हो चुकी है। इस लागत में किसान ने सरकार से मिलने वाली सम्मान निधि को भी खपा दिया है, मगर उसके हाथ पहले से ज्यादा खाली हैं। लगातार प्राकृतिक आपदाओं और तेजी से हो रहे जलवायु परिवर्तन ने कृषि की उत्पादकता और उसकी गुणवत्ता को प्रभावित किया है। एक बार फिर खेती घाटे के सौदे में तब्दील होने लगी है। सरकार की कृषि व्यापार नीति व कृषि आय बढ़ाने के लिए लागू किये जा रहे उपायों के परिणाम अभी तक बहुत उत्साहजनक साबित नहीं हुए हैं। यह रबी फसलों की बुआई का समय है, लेकिन किसानों के पास अच्छी गुणवत्ता के बीज नहीं हैं। अधिकांश राज्य सरकारों के पास अभी तक पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध नहीं हैं। यूरिया का उपयोग कम करने के लिए इसके उत्पादन और आयात को कम किया जा रहा है, लेकिन इसके बेहतर विकल्प और किसानों को उनके उपयोग के प्रति सचेत करने में सरकारी प्रयास अधूरे हैं। किसान उर्वरकों के किफायती उपयोग के बजाय, नकली उर्वरक और कालाबजारियों की लूट का शिकार हो रहे हैं। खरीफ फसलों में किसानों का रुझान धान की फसल की तरफ तेजी से बढ़ा है। इसकी वजह सोयाबीन जैसी तिलहनी और अरहर, मूंग, उड़द जैसी दलहनी फसलों में लागत अधिक होने और अनिश्चितता की परिस्थितियां, लगातार नुकसान के कारण धान के रकबे में बिगत तीन वर्षों में वृद्धि हुई है। मगर सरकार की नीतियां अब धान उत्पादक किसानों को विचलित कर रही हैं। वर्ष 2019-20 के मुकाबले 2021-22 में भारत के गैर-बासमती चावल के निर्यात में 11.17 फीसद और बासमती चावल के निर्यात में 19.69 फीसद की गिरावट दर्ज हुई है। इसकी वजह सरकार की नीतियां और प्रशासनिक लापरवाही रही है। मार्च-अप्रैल 2022 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय सिर्फ गेहूं के निर्यात पर ध्यान लगाये हुआ था। बंदरगाहों पर चावल उतारने का स्थान उपलब्ध नहीं था। कंटेनर नहीं थे। बाद में सरकार ने गेहूं के निर्यात को प्रतिबंधित किया, लेकिन तब तक व्यापारियों के चावल निर्यात के करार की समय सीमा खत्म हो गई थी। चालू खरीफ सीजन में मौसमी अनिश्चितता ने तिलहन और दलहन के घरेलू उत्पादन को निचले पायदान पर ला दिया है। पिछले साल की तुलना में तिलहन की बुआई एक लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कम हुई है। दलहन की बुआई में सात लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल की कमी आई है। दूसरी तरफ, पूंजी का बड़ा हिस्सा दलहन व तिलहन के आयात पर खर्च हो रहा है। मगर परंपरागत फसलों के विकल्प देने और मौसम की मार सहन करने वाले बीजों को विकसित करने में हमारे अनुसंधान केंद्र बहुत पिछड़े हुए हैं। बीज और उर्वरकों की उचित मात्रा का सटीक ज्ञान देश के सत्तर फीसद किसानों को अब भी नहीं है। मगर केंद्र सहित राज्य सरकारें इन व्यवस्थाओं पर अपने संसाधन खर्च नहीं कर पा रही हैं। इन हालात में नवीन

> **खरीफ फसलों में किसानों का रुझान धान की फसल की तरफ तेजी से बढ़ा है। इसकी वजह सोयाबीन जैसी तिलहनी और अरहर, मूंग, उड़द जैसी दलहनी फसलों में लागत अधिक होने और अनिश्चितता की परिस्थितियां, लगातार नुकसान के कारण धान के रकबे में बिगत तीन वर्षों में वृद्धि हुई है। मगर सरकार की नीतियां अब धान उत्पादक किसानों को विचलित कर रही हैं। वर्ष 2019-20 के मुकाबले 2021-22 में भारत के गैर-बासमती चावल के निर्यात में 11.17 फीसद और बासमती चावल के निर्यात में 19.69 फीसद की गिरावट दर्ज हुई है। इसकी वजह सरकार की नीतियां और प्रशासनिक लापरवाही रही है। मार्च-अप्रैल 2022 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय सिर्फ गेहूं के निर्यात पर ध्यान लगाये हुआ था। बंदरगाहों पर चावल उतारने का स्थान उपलब्ध नहीं था। कंटेनर नहीं थे। बाद में सरकार ने गेहूं के निर्यात को प्रतिबंधित किया, लेकिन तब तक व्यापारियों के चावल निर्यात के करार की समय सीमा खत्म हो गई थी। चालू खरीफ सीजन में मौसमी अनिश्चितता ने तिलहन और दलहन के घरेलू उत्पादन को निचले पायदान पर ला दिया है।**

कटाई के दौरान बंगाल की खाड़ी में कम दबाव के कारण दलहन व तिलहन की फसलें बर्बाद हो चुकी हैं। सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादक राज्य मध्यप्रदेश और राजस्थान में सोयाबीन की खेती अधिक लागात पर पर्याप्त उत्पादन न देने वाली फसल बन चुकी है। मध्य प्रदेश में सोयाबीन के खेतों पर अन्य राज्यों की तुलना में कर अधिक है। राज्य के व्यापारी वर्षों से कर कम करने की मांग करते आ रहे हैं। मगर राज्य सरकार ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। दूसरे देशों में जहां प्रतिवर्ष औसत उत्पादन बढ़ रहा है, हमारा किसान सोयाबीन की बिगड़ी फसलें देखकर आत्मघात जैसे कदम भी उठा रहा है। इन्हीं वजहों से पिछले वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में सोयाबीन की बुआई डेढ़ लाख हेक्टेयर कम हुई है। गुजरात में भी मूंगफली का रकबा घटा है। देश की कृषि खोजें कभी पूरी न हो पाने वाली कल्पना साबित होने लगी हैं। देश में दलहनी और तिलहनी फसलों के घटते रकबे की वजह इन फसलों की कटाई के लिए संसाधन न मिल पाना भी है। सोयाबीन, उड़द और मूंग की सत्तर फीसद कटाई मजदूरों पर निर्भर है। पहले की तुलना में अब मजदूर दो से तीन गुना अधिक मजदूरी मांगने लगे हैं। देश के बड़े हिस्से में मानसून देर से सक्रिय होने से धान की फसल प्रभावित हुई है। उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में वर्षा की कमी से धान का उत्पादन कम होने के आसार हैं। धान के उत्पादन में पचास लाख टन कमी का अनुमान है। सोयाबीन का उत्पादन पिछले साल की तुलना में पांच फीसद कम होने का अनुमान है। धान उत्पादन में अनुमानित कमी के आधार पर केंद्र सरकार ने चावल के निर्यात पर रोक लगाने के साथ चावल की चूरी पर बीस फीसद शुल्क लगा दिया है। देश में चावल चूरी की खपत बहुत कम होती है। चीन, बांग्लादेश में इस चूरी चावल का उपयोग पशु आहार, नूडल्स और शराब बनाने में होता है। इससे देश के किसानों को न केवल अच्छे भाव मिलते हैं, बल्कि उनका अनुपयोगी दाना-दाना ठिकाने लग जाता है। वर्ष 2021-22 में चावाल चूरी का निर्यात 213 लाख टन रहा, लेकिन नये कर की वजह से चालू वर्ष में देश के चूरी चावल के निर्यात में चालीस से पचास लाख टन की कमी आना माना जा रहा है। सरकार की निर्यात नीतियां किसानों में मूल्य घाटा और उत्पादन के प्रति भय पैदा करने वाली हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से रबी फसलें अब फरवरी और मार्च माह की तेज गर्मी के चलते पकने से पहले ही सूखने लगी हैं। पिछले साल मौसम में हुए इस परिवर्तन से देश में गेहूं का उत्पादन लगभग तेईस लाख टन कम हुआ था। आने वाले समय में मौसम के सटीक पूवार्नुमान के लिए भारत के पास अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इजराइल जैसा विकसित तंत्र नहीं है। आगामी रबी फसल को लेकर किसानों के सामने फसल चयन की चुनौती है। अगर वह गेहूं की बुआई करता है तो पिछले साल की तरह अत्यधिक गर्मी से समय पूर्व फसल पकने का खतरा है। चना, मसूर का चयन करता है तो इस वर्ष की अत्यधिक वर्षा अनेक रोगों को जन्म दे सकती है। वहीं इस वर्ष दलहनी फसलों में तुषार और पाले का संभावित खतरा किसानों को असमंजस में डाले हुए है। मगर देश के कृषि वैज्ञानिकों की सलाह किसान हित में जारी करने का दायित्व राज्य सरकारें नहीं निभा रही हैं। उत्पादन बढ़ाने के लिए देश के कृषि अनुसंधान केंद्रों ने जो गेहूं का बीज विकसित किया, वह चार से पांच सिंचाई वाला है। ठंड में हर सिंचाई पर किसान यूरिया और अन्य उर्वरकों का छिडकाव आवश्यक मानता है, जिससे न सिर्फ लागत बढ़ती, बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति भी कमजोर होती है। देश के चालीस फीसद हिस्से की खेती बगैर सिंचाई वाली है, जहां कम पानी की फसलों के बीज की आवश्यकता रहती है। मगर सरकारी प्रयास किसानों की आवश्यकताओं से मीलों दूर है।

■ विनोद के. शाह

जीवन साथी चुनने की राह में अब भी रोड़ा बनते लोग

अपनी पसंद का जीवन साथी चुनने के अधिकार पर न्यायालय ने फिर अपनी मुहर लगा दी है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने मंगलवार को अपने निर्णय में एक बार फिर साफ कर दिया कि अपनी पसंद से शादी करना संविधान के अनुच्छेद 21 में दी गई निजी आजादी का मूल तत्व है। मौजूदा मामला लड़की की सुरक्षा से सम्बंधित था। शिकायतकर्ता ने अदालत को बताया था कि उसकी पत्नी के परिजनों ने लड़की का अपहरण करके उसकी बेरहमी से पिटाई की थी, क्योंकि उसने घर वालों की मर्जी के खिलाफ जाकर शादी की थी। लड़की के घरवालों ने उन पर धारदार हथियार से हमला किया था और उससे जुड़े जमानत के मुकदमे में सुनवाई के दौरान अदालत की यह टिप्पणी आई है। न्यायमूर्ति मेंदीरता की पीठ ने कहा कि वयस्क व्यक्ति का अपनी पसंद से विवाह करने का अधिकार हमारे मूल अधिकार का हिस्सा है और ऐसे मामलों में पुलिस से अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसे लोगों को सुरक्षा दे। यह सच है, हमारे देश में सांविधानिक अधिकार व सामाजिक मान्यताओं के बीच अभी भी लंबा फासला है। एक ओर, संविधान और कानून का एक औपचारिक ढांचा है, जो विवाह योग्य लोगों को अपने पसंद का जीवन साथी चुनने का अधिकार देता है, तो दूसरी ओर, उसके विरोधी भी हैं। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत निजता का अधिकार हमारा मूल अधिकार है। निजता के अधिकार में अपनी पसंद का जीवनसाथी चुनने का भी अधिकार है। वैसे पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी इसकी स्पष्ट विवेचना की है। शक्तिवाहिनी बनाम भारत संघ (2018) शाफीन जहां बनाम अशोक (2018) तथा अमित राज बनाम बिहार राज्य (2022) जैसे असंख्य मामले मिसाल हैं। इसके बावजूद अभी भी जनमानस इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पा रहा है। प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वे के मुताबिक, तीन में से तकरीबन दो लोग अपने धर्म से बाहर शादी करने के खिलाफ हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के मामलों में लोग कुछ ज्यादा ही सामन्ती सोच के हैं। सर्वे के मुताबिक, जवाब देने वाले 67 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनके समुदाय की महिलाओं के अन्तर-धार्मिक विवाह को रोका जाए। भारत में कुछ समुदायों में दूसरे समुदाय के लोगों से विवाह को मान्यता नहीं दी जाती है। वैसे इससे निपटने के लिए हमारे यहां कानूनी ढांचा उपलब्ध है। हमारी संसद ने 1954 में स्पेशल मैरिज ऐक्ट बनाया था। यह कानून किसी व्यक्ति को उसकी आस्था के मुताबिक नहीं, अपितु एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में मान्यता देता है। इसके अंतर्गत अलग-अलग समुदाय के लोग बिना धर्म परिवर्तन किये विवाह कर सकते हैं। इस तरह के वैवाहिक संबंधों के विरोधियों का पहला तर्क यह होता है कि उनके बच्चे अनुभवहीनता के कारण भावनाओं में बहकर विवाह कर लेते हैं और उन्हें अपने भविष्य की चिंता नहीं होती है। अच्छे-बुरे निर्णय लेने के मापदंड पर परिजनों और कानून के बीच की खाई बहुत चौड़ी है। कई माता-पिता अपनी बालिग संतानों को भी समझदार मानने को तैयार नहीं होते हैं, लेकिन कानून उम्र को समझदारी का मापदंड मानता है। जैसे हमारे देश में मतदान के मामले में 18 वर्ष की उम्र हो जाने पर हर नागरिक समझदार मान लिया जाता है। लड़कों को 21 वर्ष तथा लड़कियों को 18 की उम्र में शादी लायक या शादी का फैसला लेने लायक मान लिया जाता है, लेकिन समाज का एक बड़ा हिस्सा अभी इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है। कई बार सामंती सोच हावी होकर प्रेमी या विवाहित जोड़ों की हत्या का कारण बन जाती है। तो इस समाज में युवाओं के लिए रास्ता क्या है? ध्यान रहे, सामंती सोच या हिंसा से वही युवा या युगल बच पाते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वयं को सक्षम बना लेते हैं। कानून हमें बुनियादी आधार देता है, लेकिन उसका लाभ लेने के लिए हमें खुद सामर्थ्यवान बनना पड़ता है। अब जो समर्थ हैं, जो कानून का लाभ ले रहे हैं, उनकी भी जिम्मेदारी है कि असमर्थ या अक्षम लोगों को भी कानून का पूरा लाभ मिले।

> **संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत निजता का अधिकार हमारा मूल अधिकार है। निजता के अधिकार में अपनी पसंद का जीवनसाथी चुनने का भी अधिकार है। वैसे पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी इसकी स्पष्ट विवेचना की है। शक्तिवाहिनी बनाम भारत संघ (2018) शाफीन जहां बनाम अशोक (2018) तथा अमित राज बनाम बिहार राज्य (2022) जैसे असंख्य मामले मिसाल हैं। इसके बावजूद अभी भी जनमानस इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पा रहा है। प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वे के मुताबिक, तीन में से तकरीबन दो लोग अपने धर्म से बाहर शादी करने के खिलाफ हैं।**

■ हरबंश दीक्षित

है न विचित्र बात !

हाशिए पर रहने की पीड़ा

कचरा कुंडी में हजारों की संख्या में मास्क पड़े हुए हैं। सबकी हालत नोटबंदी से भी बदतर है। नोटबंदी के दिनों में कम से कम पुराने नोटों को निश्चित समय के भीतर बैंक में लौटाने पर उसके बदले नये नोट तो मिल जाते थे। किंतु इन्हें लेने वाला कौन है? राजनीति में 'उतरन' का इस्तेमाल जितना श्रेष्ठ माना जाता है, भौतिक वस्तुओं का इस्तेमाल उतना ही निकृष्ट माना जाता है। हजारों की संख्या में पड़े मास्को की पीड़ा अंतहीन है। वे भी जनता की तरह चुपचाप सहने के लिए विवश हैं। उन्हीं में से तीन मास्क ऐसे हैं जो नेता बनने के सभी गुण रखते हैं। नेता बनने के लिए मुद्दों की तलाश से ज्यादा जिद्दी होना जरूरी होता है। मौन और मंदस्वर की भेंट चढ़ने वाले तर्कसंगत मुद्दे जिद्दी नेता की कमी के चलते प्राण त्याग देते हैं। जबकि तर्कहीन और हास्यास्पद से लगने वाले मुद्दे उक्त नेताओं के चलते बड़ी सुर्खियां बटोर लेते हैं। यही कारण है कि रोटी, कपड़ा और मकान जैसे मुद्दे जमीन के भीतर दफना दिये जाते हैं और किसी रईसी औलाद की जमानत देश के लिए जीने-मरने का सवाल बन जाता है। कचरा कुंडी में मास्को की एक चर्चा चल रही है। नइका मास्क, टुटनका मास्क और ललका मास्क अपनी पीड़ा व्यक्त कर रहे हैं। बाकी मास्क उनकी चर्चा बड़ी ध्यान से सुन रहे हैं। नइका मास्कः काहो टुटनका भैया! का हाल चाल बा? एहर-केहर आइगएला? टुटनका मास्कः हाल-चाल का बताई बच्ची! देखत हौआ न एहर पड़ल हई भूइयाँ लोटे खातिर। ससुरा पता न चलत है कि हमार जनमवा काहे बाटि भयल? नइका मास्कः ऐसन मुंहवा लटकैले से का होई। तनी ठीक-ठीक बतावा। टुटनका मास्कः का बताई बच्ची! जे ससुरा हमके दुकनिया से खरीदले रहल, ऊ हमके जिनगी भर कबो मुंहवा-नकुरा पर न रखले। होकरे नकुरा पर त चौबीसन घंटा गुस्सा बैठल रहत और मुंहवा त गुटखा-खैनी, पान-तंबाकू का कंपनी लागत बाटी। कबो हमके कदर न करलै ऊ ससुरा! जब देखा तब हमके ठुड्डिया पर चढ़ैले रहल। परिणाम ई भयल कि हमार एकठो टंगनी टूट गयल। एही खातिर ससुरा हमके एहर फेंक गयल है। कौनो कदर नहीं हमार। नइका मास्कः ए भैया! रोवा मत! सबकर ऊव हालत बा। कम से कम तोहके ठुड्डिया पर बैठे क सुख मिलल बाटी। हमरे जोग में ऊहो नाही। अब देखा न ससुरा जे हमके खरीदले ऊकर बिटिया ऐह खातिर फेंक देहले कि हमरा पर मकड़ापुरुष (स्पाइडरमैन) का डिजाइन न रहल। (तभी अचानक दोनों की बात सुन लाल रंग का मास्क सुबक-सुबकर रोने लगता है।) नइका मास्कः का भएल तू काहे रोवत हउआ? ललका मास्कः ऊ ससुरा के हमार रंग अच्छा न लगल। दे देहले उठाइके अपने संगी-साथिन के। ऊ हमके एहर फेंक देह न। हमके अबही तक ई समझ में न आवत ह कि ससुरा सबकर चाल-ढाल कौनो ठीक बाटी जे हमरे में दोस निकालत है।

■ डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
मो. नं. 73 8657 8657

सरकारी नौकरियों का इंतजार भारी

पिछले सप्ताह उत्तर प्रदेश प्रारंभिक पात्रता परीक्षा (यूपीपीईटी) के लिए यात्रा करने वाले युवाओं की तस्वीरें व वीडियो वायरल हुए थे। ऐसा अनुमान है कि लगभग 8 लाख उम्मीदवारों ने इस परीक्षा के लिए पंजीकरण कराया था, जिनमें से कुछ सचमुच अपने परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने के लिए जान की बाजी लगाकर ट्रेन से सफर कर रहे थे। रेलवे स्टेशन खचाखच भरे थे और रेलों की बोगियां भी। आमतौर पर सरकारी नौकरियों के लिए होने वाली परीक्षाएं उम्मीदवारों को उनके घर, गांव या कस्बे, शहर में परीक्षा देने की मंजूरी नहीं देती हैं, जिसके चलते उन्हें अपने उन परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने के लिए यात्राएं करनी पड़ती हैं, जो अक्सर दूर होते हैं। 1990 के दशक में बिहार सरकार द्वारा संचालित इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए परीक्षा देने के दौरान मुझे इसी तरह के हालात का सामना करना पड़ा था। जब मैं रांची में रहता था, जो उस समय दक्षिण बिहार (और अब झारखंड) में था, मेरा परीक्षा केंद्र उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर में था। मुजफ्फरपुर जाने वाली बसें और ट्रेनें खचाखच भर गई थीं। शहर में होटल और लॉज थे, लेकिन कई छात्रों को रेलवे स्टेशन पर परीक्षा से पहले रात बितानी पड़ी थी। छात्रों की इस अचानक पहुंची भारी भीड़ को संभालने की क्षमता न तो मुजफ्फरपुर और न ही भारतीय रेलवे के पास थी। बहरहाल, आखिर सरकारी नौकरियों के प्रति इतना आकर्षण क्यों है? वास्तव में निचले और मध्यम स्तर की सरकारी नौकरियां अधिकांश निजी नौकरियों की तुलना में बहुत बेहतर कमाई का जरिया होती हैं। नवंबर 2015 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करने वाले सातवें वेतन आयोग ने अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान को इस मुद्दे का अध्ययन करने के लिए कहा था। संस्थान की रिपोर्ट में एक अध्ययन के हवाले से कहा गया था कि एक सामान्य हेल्पर, जो सरकार में सबसे कम रैंक वाला कर्मचारी होता है, का कुल वेतन-भत्ता 22,579 रुपये है, जो निजी क्षेत्र के उपक्रमों के एक सामान्य हेल्पर के वेतन-लाभ से दोगुना है। निजी क्षेत्र में इसी रैंक के हेल्पर 8,000 से 9,500 रुपये तक पाते हैं। यह परिदृश्य साफ तौर पर नहीं बदल रहा है। इसके अलावा, एक सरकारी नौकरी पक्की नौकरी की सुरक्षा के साथ आती है, यह कुछ ऐसा है, जो महामारी के बाद की दुनिया में और भी महत्वपूर्ण हो गया है। इससे पता चलता है कि क्यों हम नियमित रूप से निम्न स्तर की सरकारी नौकरियों के लिए भी इंजीनियरों, पीएचडी और एमबीए धारकों को आवेदन करते देखते हैं। दिलचस्प बात है कि सरकारी नौकरियों के प्रति आकर्षण अन्य विकासशील देशों में भी खूब दिखाई देता है। जैसा कि अभिजीत बनर्जी और एस्थर डुफ्लो गुड इकोनॉमिक्स फॉर हार्ड टाइम्स में इन देशों के संदर्भ में लिखते हैं : सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारी निजी क्षेत्र के औसत वेतन से दोगुने से अधिक कमाते हैं और इसमें उदार स्वास्थ्य सुविधा तथा पेंशन लाभों की गिनती नहीं हो रही है। यह लोगों की धारणा को उस ओर ले जाता है, जहां सरकारी क्षेत्र की नौकरियां निजी क्षेत्र की नौकरियों की तुलना में बहुत अधिक मूल्यवान लगने लगती हैं। लगभग हर किसी को इनका इंतजार रहता है। अक्सर होता यह है कि एक युवा के कामकाजी जीवन का एक ' छा-खास हिस्सा इंतजार में ही खर्च हो जाता है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी द्वारा प्रकाशित बेरोजगारी के आंकड़ों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सितंबर 2022 में 20-24 वर्ष की आयु वर्ग के लिए बेरोजगारी दर 41.9 प्रतिशत थी। 25-29 वर्ष के आयु वर्ग में बेरोजगारी दर 9.8 प्रतिशत थी। इसके अलावा, बेरोजगारी लगभग न के बराबर थी। अब यह हमें क्या बताता है? यह हमें बताता है कि जैसे ही किसी व्यक्ति की उम्र &0 वर्ष होती है, बेरोजगारी एक घटना के रूप में लगभग लुप्त हो जाती है। इस समय तक उम्र बढ़ जाती है और कई युवा 'यादातर सरकारी नौकरियों के अयोग्य हो जाते हैं या परीक्षा लिखने के लिए जितने मौके मिलते हैं, वो समाप्त हो जाते हैं। यह स्थिति उन्हें निजी क्षेत्र में अनौपचारिक नौकरी करने या वैकल्पिक रूप से स्वरोजगार के लिए मजबूर करती है और इससे भारतीयों के लिए बेरोजगारी दर घट जाती है। एक अर्थशास्त्री ने इसके लिए समाधान बताया है कि सरकारी नौकरियों में वेतन की कटौती की जाए और सरकारी वेतन को असंगठित निजी क्षेत्र के अनुरूप लाया जाए, लेकिन यह व्यावहारिक नहीं है। जैसा कि बनर्जी और डुफ्लो बताते हैं, 'कई विकासशील देशों के श्रम बाजारों में यह द्वंद्व विशेषता है, बिना किसी सुरक्षा के एक बड़ा असंगठित क्षेत्र है, जिसमें कई लोग बेहतर विकल्पों की कमी के चलते स्व-रोजगार करने लगते हैं, या संगठित क्षेत्र में नौकरी मिलने का इंतजार ही करते रहते हैं। संगठित क्षेत्र में कर्मचारियों से न केवल लाड़- प्यार किया जाता है, बल्कि उन्हें दृढ़ता से संरक्षित भी किया जाता है।' इसके कई दुष्परिणाम हैं। अव्वल तो कई युवा एक सरकारी नौकरी का पीछा किये बिना अपनी जिंदगी के सबसे अच्छे वर्ष बिताते हैं। दूसरा, निष्क्रिय युवा सामाजिक स्थिरता के लिए हानिकारक हैं। तीसरा, सरकारी नौकरी के प्रति अत्यधिक मोह की यह प्रवृत्ति अर्थव्यवस्था में समग्र निजी खपत को नुकसान पहुंचाती है। पीटर जीहान द एंड ऑफ द वर्ल्ड इज जस्ट द बिगिनिंग : मैपिंग द कोलैप्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन में लिखते हैं, 'एक व्यक्ति अपना अधिकांश खर्च 15 और 45 की उम्र के बीच करता है, यही जीवन की खिडकी है, जब लोग कार खरीद रहे होते हैं (भारतीय संदर्भ में दोपहिया वाहन), घर खरीद रहे होते हैं, इस तरह की खपत वाली गतिविधि ही अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाती है।' अतः &0 वर्ष की आयु तक पहुंचने तक कई युवा जब बेरोजगार रहते हैं, तो अर्थव्यवस्था को वैसी गतिशीलता या तेजी नहीं मिल पाती है, जैसी मिलनी चाहिए।

> **अक्सर होता यह है कि एक युवा के कामकाजी जीवन का एक ' छा-खास हिस्सा इंतजार में ही खर्च हो जाता है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी द्वारा प्रकाशित बेरोजगारी के आंकड़ों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सितंबर 2022 में 20-24 वर्ष की आयु वर्ग के लिए बेरोजगारी दर 41.9 प्रतिशत थी। 25-29 वर्ष के आयु वर्ग में बेरोजगारी दर 9.8 प्रतिशत थी। इसके अलावा, बेरोजगारी लगभग न के बराबर थी। अब यह हमें क्या बताता है? यह हमें बताता है कि जैसे ही किसी व्यक्ति की उम्र &0 वर्ष होती है, बेरोजगारी एक घटना के रूप में लगभग लुप्त हो जाती है।**

■ विवेक कौल

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पब्लिकेशन डिवीजन रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं-13। प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, स्थानीय संपादक : ओम प्रकाश अमरेन्द्र*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-834001, Ph. 0651-2283384/Fax 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25-LF, तानसेन मार्ग, नयी दिल्ली-1, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लातेहार कार्यालय : रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार-829206, फोन : 9128656020, 7763034341, लोहरदगा कार्यालय : रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा-फोन : 7903891779, 8271983099, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

"Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट

Facilities

- आरसीटी
- पायरिया का ईलाज
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- स्माईल डिजाइन
- इनविजिवल क्लिप
- दंत रोपण
- फिक्स दाँत लगाना
- अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi

Contact No. : 9199533383, 7903835453

Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm

Sunday : 9 am to 2 pm

E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

न्यूज गैलरी

स्कूल से बंक मार 120 किमी. दूर इंदौर पहुंची 12वीं की तीन छात्राएं, तीनों ने किया सुसाइड

इंदौर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के इंदौर से दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है। जहां तीन नाबालिग सहेलियों ने सल्फास की गोलियां खा ली। जिसमे दो की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं तीसरी की हालत गंभीर बनी हुई है। तीनों लड़कियां एक ही स्कूल और एक क्लास में पढ़ती थीं। वह स्कूल से बंक मारकर आष्टा से एक दोस्त से मिलने इंदौर पहुंची थीं। लेकिन जब लड़के ने मिलने से मना कर दिया तो यह खौफनाक कदम उठा लिया। दरअसल, यह शॉकिंग घटना शुक्रवार शाम इंदौर शहर के एप्पल हॉस्पिटल के पास एक गॉर्डन की है। जहां आष्टा के गायत्री मंदिर स्थित मॉर्डन स्कूल में पढ़ाई करती थीं। तीनों पलक (16), पूजा और आरती 12वीं कक्षा में पढ़ती थीं। पलक अपने दोस्त रोहित से मिलने के लिए दोनों सहेलियों को लेकर इंदौर आई थी। वह सबसे पहले बस से तीन इमली चौराहे पर उतरीं और भंवरकुआं पहुंच गयीं। इसके बाद उन्होंने रोहित को फोन कर मिलने के लिए बुलाया। लेकिन रोहित ने आने से मना कर दिया तो पलक ने सल्फास की गोली खा ली। इसके बाद पूजा ने घर के टेंशन में गोली खा ली। फिर दोनों के इस कदम उठाने के बाद तीसरी दोस्त ने सोचा दोनों मर जाएंगी तो वह किसके लिए जिंदा रहेगी। आखिरी में आरती ने भी सुसाइड करने के लिए गोली खा ली।

अमेरिका में मध्यावधि चुनाव से पहले अतिवादी हिंसा भड़कने की चेतावनी

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में मध्यावधि चुनाव के मात्र एक सप्ताह पहले निचले सदन की स्पीकर नैंसी पेलोसी के पति पर शुक्रवार को हुए हमले के बाद चुनाव से पहले अतिवादियों की ओर से हिंसा भड़काने जैसी आशंकाएं बढ़ने लगी हैं। बीबीसी की रिपोर्ट में बताया गया कि पॉल पेलोसी पर हमले के बाद कुछ घंटों बाद अमेरिकी सरकार की ओर से सुरक्षा बलों को एक चेतावनी जारी करते हुए सतर्क रहने को कहा गया। चेतावनी में यह भी कहा गया कि चुनाव में उतरने वाले उम्मीदवारों के खिलाफ हिंसा होने का खतरा है। अमेरिका के जस्टिस्ट डिपार्टमेंट की ओर से शुक्रवार को बताया कि पेंसिलवेनिया से किसी व्यक्ति ने उच्च सदन कांग्रेस के किसी अनाम सदस्य की हत्या किये जाने की फोन पर कई बार धमकी दी। इतना ही नहीं एक अन्य धमकी में कहा गया कि वाशिंगटन स्थित कार्यालय में कांग्रेस के स्टाफ का ही कोई व्यक्ति हथियार लेकर आ रहा है।

नयी टेक्नालेजी के दुरुपयोग की चुनौती से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास जरूरी : गुटारेस

नयी दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुटारेस ने आतंकवादी समूहों द्वारा दुष्प्रचार के लिए नयी तकनीकों का इस्तेमाल करने की चुनौती से निपटने के लिए ठोस वैश्विक प्रयासों का शनिवार को आह्वान किया। दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की आतंकवाद रोधी समिति की बैठक को दिए एक संदेश में गुटारेस ने विभिन्न आतंकवादी समूहों द्वारा दुष्प्रचार करने, संघर्ष भड़काने और युवाओं को कट्टर बनाने के लिए नयी तकनीकों का दुरुपयोग किए जाने पर चिंता जतायी। दिल्ली में आतंकवाद रोधी बैठक में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सभी 15 सदस्य देशों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। गुटारेस के संदेश को वैश्विक निकाय के एक अधिकारी ने पढ़ा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा कि नयी और उभरती प्रौद्योगिकियों में हर जगह मानवीय स्थितियों में सुधार करने की बेजोड़ क्षमता है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि विद्वेषपूर्ण उद्देश्य रखने वाले व्यक्तियों

सहित कई लोगों द्वारा इनका दुरुपयोग भी किया गया है। उन्होंने कहा कि घृणास्पद विचारधारा वाले आतंकवादी और अन्य लोग नयी और उभरती प्रौद्योगिकियों का दुरुपयोग करके दुष्प्रचार कर रहे हैं, संघर्ष भड़का रहे हैं, युवाओं को भर्ती कर रहे हैं और कट्टरपंथी बना रहे हैं, संसाधन जुटा रहे हैं और हमले कर रहे हैं। गुटारेस ने कहा कि कोविड-19 महामारी ने इस तरह के दुरुपयोग के कई जोखिमों को उजागर किया है। उन्होंने कहा कि डिजिटल क्षेत्र में सभी मानवाधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहते हुए हमें इन जोखिमों को कम करने के लिए ठोस उपाय करने चाहिए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा कि यह केवल प्रभावी बहुपक्षवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर के मूल्यों और दायित्वों और मानवाधिकारों संबंधी सार्वभौमिक घोषणा के अनुरूप है। संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने कहा कि नयी और उभरती प्रौद्योगिकियों ने आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद की है।

आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए तकनीक का बढ़ रहा इस्तेमाल

उन्होंने कहा कि आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए नयी तकनीक का इस्तेमाल बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आतंकवादी उद्देश्यों के लिए नयी और उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग बढ़ रहा है, उनका विविधीकरण हो रहा है और नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं, क्योंकि विभिन्न प्रौद्योगिकियां सस्ती और अधिक आसानी से उपलब्ध हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों के प्रतिनिधियों के अलावा दुनियाभर के विशेषज्ञ और प्रमुख एजेंसियां बैठक में हिस्सा ले रही हैं। इस बैठक का मकसद आतंकवादी उद्देश्यों के लिए प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल से उत्पन्न खतरों पर चर्चा करना है। पहले दिन की बैठक शुक्रवार को मुंबई में हुई थी। यह पहली बार है, जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की ओर से भारत में किसी भी प्रारूप में बैठक की जा रही है।

आतंकवाद मानवता के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक : जयशंकर

दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद रोधी समिति की बैठक

नयी दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को स्पष्ट रूप से पाकिस्तान की तरफ इशारा करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र की आतंकवाद रोधी प्रतिबंध व्यवस्था उन देशों को आगाह करने के लिए प्रभावी है, जिन्होंने आतंकवाद को राज्य द्वारा वित्त पोषित उद्यम बना लिया है। दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की आतंकवाद रोधी समिति की बैठक को संबोधित करते हुए जयशंकर ने आतंकवाद को मानवता के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक बताया। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों के बावजूद आतंकवाद का खतरा बढ़ रहा

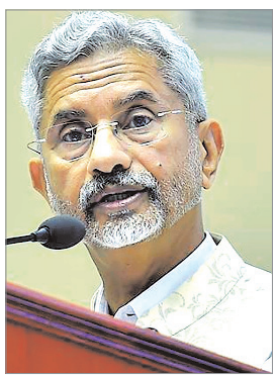

है, खासतौर से एशिया और अफ्रीका में।

विदेश मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पिछले दो दशकों में आतंकवाद से निपटने के लिए मुख्य रूप से आतंकवाद रोधी प्रतिबंध व्यवस्था के आसपास निर्मित महत्वपूर्ण संरचना विकसित की है। उन्होंने कहा कि यह उन देशों को आगाह करने के लिए बहुत प्रभावी रही है, जिन्होंने आतंकवाद को राज्य द्वारा वित्त पोषित उद्यम बना लिया है। जयशंकर ने कहा कि इसके बावजूद आतंकवाद का खतरा बढ़ रहा है, खासतौर से एशिया और अफ्रीका में, जैसा कि 1267 प्रतिबंध समिति निगरानी रिपोर्टों में बार-बार उल्लेख किया गया है। उन्होंने कहा कि खुले समाज के लोकाचार का इस्तेमाल आजादी, सहिष्णुता और प्रगति पर हमला करने के लिए किया जा रहा है। विदेश मंत्री ने आतंकवादी समूहों द्वारा नयी प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग का भी जिक्र किया।

इंटरनेट और सोशल मीडिया मंच आतंकवादियों के लिए बना प्रभावशाली

उन्होंने कहा कि इंटरनेट और सोशल मीडिया मंच आतंकवादियों और आतंकवादी समूहों की टूलकिट में प्रभावशाली उपकरण बनकर उभरे हैं। जयशंकर ने कहा कि हाल के वर्षों में, खासतौर से खुले और उदार समाज में आतंकवादी समूहों, उनके वैचारिक अनुयायियों और अकेले हमला करनेवाले लोगों ने इन प्रौद्योगिकियों तक पहुंच हासिल करके अपनी क्षमताएं बढ़ा ली हैं। उन्होंने कहा कि वे आजादी, सहिष्णुता और प्रगति पर हमला करने के लिए प्रौद्योगिकी और पैसा तथा सबसे जरूरी खुले समाज के लोकाचार का इस्तेमाल करते हैं। जयशंकर ने कहा कि आतंकवादी समूहों और संगठित आपराधिक नेटवर्कों द्वारा मानवरहित हवाई प्रणालियों के इस्तेमाल ने दुनियाभर में सरकारों की चिंताओं को और बढ़ा दिया है। विदेश मंत्री ने कहा कि रणनीतिक, बुनियादी और वाणिज्यिक संपत्तियों के खिलाफ आतंकवादी उद्देश्यों के लिए हथियारबंद ड्रोन के इस्तेमाल की आशंकाओं पर सदस्य देशों को गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है।

यूक्रेन ने ईरान से की रूस को हथियार आपूर्ति रोकने की मांग

कीव (एजेंसी)। यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने अपने ईरानी समकक्ष होसैन अमीरबदोल्लाहियन से रूस को हथियारों की आपूर्ति रोकने का अनुरोध किया है। बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार यूक्रेन और उसके सहयोगी पश्चिमी देशों ने ईरान पर रूस को कथित तौर पर कामिकेज ड्रोन उपलब्ध कराने का आरोप लगाया है, जिसका इस्तेमाल रूसी सेना ने यूक्रेन के बुनियादी ढांचे को तहस नहस करने में किया। ईरान ने हालांकि आरोप का खंडन करते हुए यह सफाई दी कि उसने रूस को ड्रोन समेत कोई हथियार नहीं भेजा है। कुलेबा ने शुक्रवार देर रात एक ट्वीट में कहा कि आज मुझे ईरानी विदेश मंत्री हुसैन अमीर अब्दुल्लाहियन का फोन आया। मैंने ईरान से यूक्रेनी नागरिकों को मारने और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले हथियारों की आपूर्ति तुरंत रोकने की मांग की। रूस ने हाल के हफ्तों में यूक्रेन पर मिसाइल और ड्रोन हमले एक बार फिर तेज कर दिये है। ताजा हमलों से यूक्रेन के ऊर्जा बुनियादी ढांचा बुरी तरह प्रभावित हुआ है और कीव समेत देश के अन्य शहरों और कस्बों को अभूतपूर्व बिजली कटौती का सामना करना पड रहा है।

यूक्रेन का आरोप है कि रूस ने हमलों में ईरान में निर्मित ड्रोन का इस्तेमाल किया है, जो अपने लक्ष्य पर सटीक निशाना साध कर विस्फोट करने में सक्षम हैं। ईरान की न्यूज एजेंसी आईआरएनए ने बताया कि श्री अमीरबदोल्लाहियन ने रूस को यूक्रेन में इस्तेमाल के लिए ड्रोन मुहैया कराने के आरोपों को खारिज किया है। ईरानी विदेश मंत्री ने कहा कि अतीत में हमने रूस से हथियार लिए हैं और उसे हथियार भी दिए हैं, लेकिन यूक्रेन युद्ध के दौरान हथियारों का आदान प्रदान नहीं हुआ। यूक्रेन ने शुक्रवार को कहा कि उसके सुरक्षा बलों ने सितंबर के मध्य से तीन हजार से अधिक रूसी ड्रोन को मार गिराया है, जिनकी पहचान ईरान में निर्मित ड्रोन शहीद-136 मॉडल के तौर पर की गयी है।

अमेरिका ने सलमान रुश्दी मामले में ईरानी समूह पर लगाया प्रतिबंध

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने ब्रिटेन-अमेरिकी लेखक सलमान रुश्दी को लेकर अरबों डॉलर का इनाम रखने के आरोपी ईरानी फाउंडेशन के खिलाफ प्रतिबंधों की घोषणा की है। श्री रुश्दी पर इस वर्ष अगस्त में न्यूयॉर्क में एक साहित्यिक कार्यक्रम में चाकू से हमला हुआ था। अल जजीरा ने बताया कि अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने शुक्रवार को 15 खोरदाद फाउंडेशन के खिलाफ प्रतिबंधों की घोषणा की। प्रतिबंधों ने फाउंडेशन की किसी भी अमेरिका-आधारित संपत्ति को जब्त कर दिया है और यह आम तौर पर यहां के नागरिकों को इसके साथ लेनदेन करने से रोकता है। विभाग ने एक विज्ञप्ति में कहा कि अयातुल्ला रूहोल्लाह खुमैनी के आदेश के फरवरी 1989 में श्री रुश्दी को मौत की सजा सुनाने के बाद से 15 खोरदाद फाउंडेशन ने इस घटना को अंजाम देने के इच्छुक लोगों को लाखों डॉलर दिये हैं। इसमें कहा गया है कि रुश्दी पर इनाम रखने के बाद से 15 खोरदाद फाउंडेशन ने लेखक को निशाना बनाने के लिए इनाम बढ़ाया है। अल जजीरा ने अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के हवाले से कहा कि फतवे का उद्देश्य आतंकवाद और हिंसा को भड़काना, रुश्दी और उनके सहयोगियों की हत्या करना और अन्यों को डराना था। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका इस तरह के उकसावे और श्री रुश्दी पर हमले की कड़े शब्दों में निंदा करता है और इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक जबरदस्त हमला बताता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि उस वक्त ईरान के सर्वोच्च नेता खुमैनी ने श्री रुश्दी की पुस्तक 'द सैटेनिक वर्सेज' के प्रकाशन पर 1989 में एक फतवा जारी किया था। इस पुस्तक को कुछ मुस्लिम ईशनिंदा मानते थे। ईरानी सरकार ने श्री रुश्दी को मारने के आह्वान से खुद को दूर कर लिया था। श्री रुश्दी ने अपनी जान पर खतरे को लेकर वर्षों तक छिपे रहे लेकिन तेहरान ने उनकी हत्या के लिए दिए गए आदेश को कभी नहीं हटाया।

एक नवम्बर के लगभग हो सकती है गुजरात व दिल्ली नगर निगम के चुनावों की घोषणा

- कृष्णमोहन सिंह

नयी दिल्ली। गुजरात व दिल्ली के सत्ताधारी दलों के नेताओं का आपसी बातचीत में कहना है कि लगभग सब घोषणायें, बड़ी रैली व तैयारी हो ही गयी हैं। ऐसे में चुनाव आयोग एक नवम्बर के लगभग गुजरात विधानसभा चुनाव व दिल्ली नगर निगम चुनाव की घोषणा कर देगा। बीते एक सप्ताह में गुजरात व दिल्ली के कई नेताओं से बातचीत के दौरान जब भी सवाल किया तो सभी का लगभग एक ही जैसे जवाब था- एक नवम्बर के लगभग हो जाना चाहिए। उनने यह भी कहा कि गुजरात विधानसभा चुनाव के साथ ही दिल्ली नगर निगम चुनाव की भी घोषणा हो सकती है। क्योंकि, दिल्ली के तीनों नगर निगमों को एकीकृत करने के बाद भी हालत सुधरने के बजाय और गड़बड़ हुई है। इसके चलते 2007 से नगर निगमों पर काबिज भाजपा के हुक्मरानों को लगता है कि यदि गुजरात के साथ दिल्ली के तीनों नगर निगमों के 250 एमसीडी वार्ड के चुनाव भी हो जाये, तो गुजरात लहर में दिल्ली नगर निगम का चुनाव भी जीता जा सकता है। क्योंकि आम आदमी पार्टी के नेताओं ने दिल्ली में समय नहीं देकर गुजरात में विधानसभा चुनाव पर अपना पूरा जोर लगा रखा है। ऐसे में भाजपा दिल्ली नगर निगम चुनाव फिर से जीत सकती है। यदि यह नगर निगम चुनाव अभी नहीं होकर तय समय से बाद में हुआ, तब आम आदमी पार्टी अपनी पूरी ताकत लगाकर, जनता की नाराजगी को भुना कर, तीनों नहीं तो दो नगर निगमों पर जीत दर्ज कर

- आंतरिक सर्वे में गुजरात में भाजपा की 105 से 115 के लगभग सीटें आने की संभावना
- गुजरात के साथ चुनाव कराने पर दिल्ली नगर निगम है जीतने की संभावना

सकती है। सूत्रों का कहना है कि इसी आशंका के चलते भाजपा के प्रबंधक व हुक्मरान चाहते हैं कि गुजरात चुनाव के साथ ही दिल्ली नगर निगम के चुनाव की भी घोषणा हो जाये। इसके मद्देनजर भाजपा के नेता दिल्ली नगर निगमों में बीते एक माह से कुछ ज्यादा ही सक्रिय हो गये हैं। छठ पर्व के अवसर पर यमुना के किनारे भी उनकी सक्रियता व फोटो सेशन सोशल मीडिया पर देखने को मिल रही है। इसमें कईजगह वे सफाई कर्मचारियों, अधिकारियों को डांटते, हड़काते दिख रहे हैं। जहां तक चुनाव तिथि की बात है तो कुछ का कहना है कि गुजरात विधान सभा चुनाव दो चरण में होगा। और ये दोनों चरण 15 नवंबर से 30 नवंबर के बीच हो जायेगा, चुनाव परिणाम आठ दिसम्बर को आयेगा। जबकि कुछ का कहना है कि पहला चरण नवंबर के अंतिम सप्ताह के लगभग होगा, दूसरा चरण 4 या 5 दिसंबर के लगभग होगा और परिणाम 8 दिसंबर को आयेगा। इस बारे में गुजरात के एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि राज्य में संभावित उम्मीदवारों व संबंधित विधान सभा के हालात, माहौल पर एजेंसी द्वारा करायी गयी और अन्य मशीनरी द्वारा कराये गये सर्वे की दो रिपोर्ट आ गयी है। इन दोनों के आधार पर सत्ताधारी पार्टी सीट पर प्रत्याशी तय करेगी।

इसके अलावा जिन अफसरों को सटीक जगह तैनाती करानी है, उनकी भी तबादला व पोस्टिंग कर दी जानी है। इस बार इन तबादलों की सूची 2017 की अपेक्षा बहुत बड़ी हो गयी है। सूत्रों का कहना है कि इनमें ज्यादातर की पोस्टिंग महत्त्वपूर्ण जगहों पर हो रही है। विशेष निगाह उन विधानसभा सीटों पर है जहां भाजपा हारी थी और जहां बहुत कम मतों से जीती थी। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि जहां से भाजपा जीती थी उस पर ढील पड़ रही है। नहीं, वहां भी कोई लापरवाही नहीं हो रही है। क्योंकि, इस बार डर यह हो गया है कि थोड़ी भी लापरवाही हुई, तो भाजपा की सीटें 2017 विधानसभा चुनाव से भी कम आ सकती है। वह 99 से कम होकर 92 से 95 आ सकती है। किसी भी हालत में यह नहीं हो, इसके लिये पूरा जोर लगाकर कोशिश 100 सीटों से ज्यादे लाने का है।

आठ अलग-अलग मर्दों से महिला ने पैदा किये 11 बच्चे

टेनेसी (एजेंसी)। अमेरिका के टेनेसी राज्य के मेम्फिस में रहनेवाली फाई नाम की महिला इन दिनों सोशल मीडिया पर

- मोहतरमा का अजीब तर्क सुनकर आप भी हंसेंगे

चर्चा में है। उसके 11 बच्चे हैं। उसने 11 बच्चे आठ अलग-अलग मर्दों से पैदा किये हैं। अपने इस अनोखे फैसले के बारे में महिला जो वजह बताती है उसे जानकर बहुत से लोग हंस पड़ते हैं। उसका कहना है कि आठ पिता होने से उसके बच्चों को कभी बिना पिता के नहीं रहना पड़ेगा। एक-दो अगर चला भी गया तो 6-7 फिर भी बचे रहेंगे। फाई सोशल मीडिया पर एक्टिव रहती हैं। वह टिकटॉक पर काफी फेमस हैं। उसके 90 हजार से अधिक फॉलोअर हैं।

टिकटॉक पर वह अपने रुटीन लाइफ से जुड़े वीडियो शेयर करती हैं। हालांकि 11 बच्चे पैदा करने के लिए सोशल मीडिया पर उन्हें आलोचना का सामना भी करना पड़ता है। सोशल मीडिया पर लोगों ने कहा है कि फाई ने

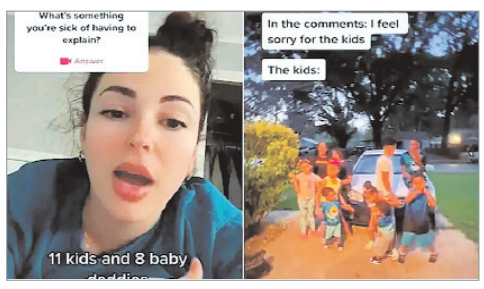

सरकार से बच्चों के लालन-पालन के लिए मिलने वाली वित्तीय मदद के लिए इतने अधिक बच्चे पैदा किए हैं। कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा है कि उसने 11 बच्चे इसलिए पैदा किए ताकि कोई काम नहीं करना पड़े और चाइल्ड सपोर्ट के रूप में मिलने वाले पैसे से आसानी से गुजारा हो सके। फाई सोशल मीडिया पर मिलने वाले कमेंट्स का जवाब भी देती हैं। उन्होंने कोर्ट पेपर दिखाते हुए एक वीडियो शेयर किया और बताया कि चाइल्ड सपोर्ट के रूप में उन्हें 10 डॉलर प्रति महीने ही मिलते हैं। एक यूजर ने कहा कि एक साथ इतने बच्चे घर में रहें तो वे परेशान हो जाते होंगे। इसके जवाब में फाई ने एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह बच्चों के साथ डांस करती दिख रही हैं। उसने वीडियो के माध्यम से बताने की कोशिश की कि उसके बच्चे किस तरह खुशी-खुशी एक साथ रह रहे हैं।

बच्चों को बिना पिता के कभी नहीं रहना पड़े : एक वीडियो में उसने कहा कि वह 19 और बच्चे पैदा करना चाहती हैं ताकि बच्चों की संख्या 30 हो सके। हालांकि, बाद में उन्होंने कहा कि वह मजाक कर रहीं थी। अलग-अलग मर्दों से बच्चे पैदा करने के अपने फैसले के बारे में फाई ने कहा था कि मुझे यह समझाने में परेशानी होती है कि मेरे बच्चों के आठ पिता क्यों हैं। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि मेरे बच्चों को बिना पिता के कभी नहीं रहना पड़े। अगर आपके पास कोई एक सामान है और उसे कोई दूसरा ले लेता है तो आपके पास शून्य बचता है, लेकिन अगर आपके पास आठ हैं और कोई उनमें से तीन ले लेता है तब भी आपके पास पांच बचते हैं।

न्यूज गैलरी

जिम्बॉब्वे से हार के बाद रोते दिखे शादाब खान

सिडनी (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप में ग्रुप-2 के सुपर 12 मुकाबले में गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में जिम्बॉब्वे ने पाकिस्तान को एक रन से हरा दिया था। इस हार से पाकिस्तान का क्रिकेट महकमा और वहां के प्रशंसक खासे नाराज हैं। जिम्बॉब्वे को पाकिस्तान की तुलना में कमजोर टीम के तौर पर देखा जा रहा था लेकिन इस हार ने पाकिस्तान को सकते में ला दिया है। इससे पहले पाकिस्तान को भारत ने चार विकेट से हरा दिया था। लगातार दो हार के बाद टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल की राह पाकिस्तान के लिए मुश्किल हो गयी है। जिम्बॉब्वे ने पाकिस्तान को 131 रनों का टारगेट दिया था और इसे बहुत मुश्किल लक्ष्य नहीं माना जा रहा था। इस हार के बाद से पाकिस्तानी क्रिकेटर अपने ही लोगों की आलोचना झेल रहे हैं। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम और विकेट कीपर मोहम्मद रिजवान जल्दी ही आउट हो गए थे। इनके आउट होने के बाद पाकिस्तान का मध्य क्रम एक बार फिर से बिखर गया था।

भारत ने सुलतान जोहोर कप में ब्रिटेन से 5-5 से ड्रा खेला

जोहोर (एजेंसी)। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने शुक्रवार को यहां सुल्तान जोहोर कप हॉकी टूर्नामेंट के अपने आखिरी राउंड रोबिन लीग मैच में ग्रेट ब्रिटेन से 5-5 से ड्रॉ खेला और खुद को फाइनल की दौड़ में बनाये रखा। भारत की तरफ से पूवन्ना सीबी (7वें मिनट), अमनदीप (50वें मिनट), अरिजीत सिंह हुंदल (53वें मिनट) और शारदा नंद तिवारी (56वें और 58वें मिनट) ने, जबकि ग्रेट ब्रिटेन के लिए मैक्स एंडरसन (पहले और 40वें), हैरिसन स्टोन (42वें मिनट) और जामी गोल्डन (54वें और 56वें) ने गोल किए। भारत ने राउंड रोबिन के अपने अभियान का अंत पांच मैचों में आठ अंकों के साथ किया और वह अभी ऑस्ट्रेलिया के बाद दूसरे स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया चार मैचों में 10 अंक लेकर पहले फाइनल के लिए क्वालीफाई कर चुका है। मौजूदा चैंपियन ग्रेट ब्रिटेन पहले ही फाइनल की दौड़ से बाहर हो चुका है। उसके पांच मैचों में सात अंक हैं। दक्षिण अफ्रीका के चार मैच में छह अंक हैं और यदि वह ऑस्ट्रेलिया को हरा देता है तो फाइनल में पहुंच जाएगा। ऐसी स्थिति में भारत फाइनल की दौड़ से बाहर हो जाएगा। दक्षिण अफ्रीका का गोल अंतर भारत से बेहतर है।

पाक फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान अली नवाज का निधन

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान अली नवाज बलूच का शुक्रवार सुबह कराची में निधन हो गया। समाचार चैनल जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार बलूच को पिछले हफ्ते स्ट्रोक आया था जिससे वह उबर नहीं पाये थे। उनका अंतिम संस्कार कराची के केएमसी स्टेडियम में किया जायेगा। ल्यारी में जन्मे बलूच ने कई अंतर्राष्ट्रीय मैचों में देश का प्रतिनिधित्व किया था। उन्हे 1996 में प्रेसिडेंट्स प्राइड ऑफ परफॉर्मेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। वर्ष 1967 से 1974 के बीच पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करने के बाद बलूच ने अबूधाबी में अमीरात एफसी के लिए पांच साल तक पेशेवर रूप से खेला। उन्होंने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में पांच साल तक बतौर कोच अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

पाकिस्तान को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए भारत के सहारे की जरूरत

मेलबर्न (एजेंसी)। पाकिस्तान टी-20 वर्ल्ड कप 2022 में अपने पहले दोनों मैच हार चुका है। भारत के खिलाफ आखिरी गेंद पर उसे 4 विकेट से हरा मिली। फिर जिम्बाब्वे ने आखिरी गेंद पर एक रन से हराकर बड़ा उलटफेर किया। दो हार के बाद उसका सेमीफाइनल में पहुंचना मुश्किल दिख रहा है। हालांकि अभी भी ऐसे समीकरण है, जिससे बाबर आजम की सेना टी20 वर्ल्ड कप के अंतिम चार में पहुंच सकती है। पाकिस्तान को अभी टूर्नामेंट में दक्षिण अफ्रीका, नीदरलैंड्स और बांग्लादेश से खेलना है। वह इन सभी मैचों को जीत जाता है तो उसके 6 पॉइंट हो जाएंगे। दक्षिण अफ्रीका के 2 मैच में तीन पॉइंट हैं। उसे भारत, पाकिस्तान और नीदरलैंड्स से

खेलना है। नीदरलैंड्स से दक्षिण अफ्रीका की जीत पक्की मानी जा रही है। वहीं, टीम पाकिस्तान से हार जाती है, तो उसके 4 मैच में 5 पॉइंट हो जाएंगे। असली खेल यहीं से शुरू होता है। अगर दक्षिण अफ्रीका भारत को हरा देता है तो उसके 7 पॉइंट हो जाएंगे। वह पाकिस्तान अपने बाकी तीनों मैच जीतकर भी 6 पॉइंट तक ही पहुंच पाएगी। पाकिस्तान के सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदों को जिंदा रखने के लिए भारतीय टीम को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जीतना ही होगा। रविवार को पर्थ में भारत और दक्षिण अफ्रीका का मुकाबला होना है। अगर भारत वहां हार जाता है तो पाकिस्तान लगभग टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगा।

भारत कैसे सेमीफाइनल में पहुंचेगा : सुपर-12 के एक ग्रुप से टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में दो टीमें जाएंगी। भारत को दक्षिण अफ्रीका के अलावा बांग्लादेश और जिम्बाब्वे से भी खेलना है। भारत दो मैच जीतकर भी सेमीफाइनल में पहुंच सकता है। टीम इंडिया शानदार प्रदर्शन भी कर रही है। ऐसे में उसके लिए सेमीफाइनल की राह मुश्किल नहीं दिख रही। भारत और दक्षिण अफ्रीका का मुकाबला पर्थ स्टेडियम में खेला जाना है। यहां तेज गेंदबाजों के लिए काफी मदद है और दक्षिण अफ्रीका के पास तेज गेंदबाजों की फौज है। टीम के पास कागिसो रबाडा, वेन पार्नेल और एनरिच नोर्तजे के अलावा लुंगी एनगिडी भी हैं।

दो मैचों से किसी को नहीं आंक सकते, केएल राहुल करेंगे ओपनिंग : कोच

पर्थ (एजेंसी)। टी-20 विश्वकप में पाकिस्तान और नीदरलैंड के बाद अब भारत का मुकाबला 30 अक्टूबर को दक्षिण अफ्रीकी टीम से होगा। भारतीय खेमे के लिए चिंता की बात उनके ओपनर केएल राहुल की बैटिंग है। केएल राहुल ने प्रैक्टिस मैच में जरूर हाफ सेंचुरी जड़ी थी, लेकिन भारत के दोनों मुकाबलों में वे रन नहीं बना सके हैं। टीम इंडिया के बैटिंग कोच विक्रम राठौर ने कहा कि हम ओपनिंग में किसी बदलाव के बारे में नहीं सोच रहे हैं और केएल राहुल ही टीम की ओर से ओपनिंग करते दिखेंगे। प्रेस कांफ्रेंस के दौरान जब विक्रम से पूछा गया कि क्या केएल राहुल की जगह ऋषभ पंत से ओपन कराया जा सकता है। इस पर बैटिंग कोच ने हंसते हुए जवाब दिया कि नहीं हम लोग ऐसा नहीं सोच रहे हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ दो मैचों के आधार पर ऐसा नहीं किया जा सकता। राहुल नेट्स पर अच्छी बल्लेबाजी कर रहे हैं और प्रैक्टिस भी बेहतर कर रहे हैं। ऋषभ पंत के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में विक्रम राठौर ने कहा कि टीम मैनेजमेंट ने उनसे कहा है कि वे आने वाले किसी भी मौके के लिए तैयार रहें। बैटिंग कोच ने कहा कि टीम में केवल 11 खिलाड़ी ही खेल सकते हैं। हम जानते हैं कि ऋषभ पंत बहुत ही शानदार खिलाड़ी हैं। हमने देखा है कि किसी मैच में वे विपक्षी टीम के खिलाफ क्या कर सकते हैं। इसलिए हमने उनसे कहा है कि स्टैंड बाई में रहें और किसी भी वक्त मौका मिल सकता है। यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि वे मेंटली और फिजिकली फिट रहें। रविवार को जब भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैच होगा को कसिगो रबाडा और एनरिच नार्के भारतीय टॉप ऑर्डर की परीक्षा लेते नजर आएंगे। यह मैच ग्रुप बी को टॉपर का नाम भी तय कर देगा और भारत मैच जीतता है तो सेमीफाइनल में उसकी जगह पक्की हो सकती है। वाका का यह मैदान काफी पुराना है लेकिन जिस पिच पर मैच होगा वह बिल्कुल नया है। इस पिच पर अच्छा बाउंस मिलने की उम्मीद है जो कि बल्लेबाजों के लिए मुश्किल हालात पैदा कर सकती है।

न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को 65 रन से हराया, ग्लेन फिलिप्स ने खेली 104 रन की धमाकेदार पारी

सिडनी (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को 65 रन से हरा दिया है। कीवी कप्तान केन विलियमसन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और 20 ओवर में उनकी टीम ने 6 विकेट खोकर 167 रन बनाए। ग्लेन फिलिप्स ने सबसे ज्यादा 64 बॉल में 104 रन की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 10 चौके और 4 छक्के लगाए। उनका स्ट्राइक रेट 162.50 का रहा। ये इस वर्ल्ड कप की दूसरी सेंचुरी है। पहला शतक साउथ अफ्रीका के राइली रूसो ने बांग्लादेश के खिलाफ बनाया था। श्रीलंका के लिए सबसे ज्यादा दो विकेट कसून रजिथा ने लिए। वहीं, महेश तीक्ष्णा, धनंजय डी सिल्वा, हसरंगा और लाहिरु कुमारा को एक-एक सफलता मिली। जवाब में श्रीलंका की टीम 19.2 ओवर में 102 रन बनाकर ही ऑलआउट हो गयी। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 4 विकेट झटके। वहीं, मिचेल सैंटनर ने 2 विकेट लिए। टिम साउदी, ईश सोढ़ी और लॉकी

फर्ग्युसन ने 1-1 विकेट अपने नाम किया। इस जीत के साथ न्यूजीलैंड के 5 अंक हो गए हैं और वह अपने ग्रुप में नंबर-1 पर है। वहीं, श्रीलंका की टीम के सिर्फ 2 अंक है और वे लगभग सेमीफाइनल की रेस से बाहर हो गई है। महेश तीक्षणा ने न्यूजीलैंड को पहला झटका दिया। उनकी अंदर आती हुई बॉल को फिन एलन समझ नहीं पाए। वह लेग स्टंप से बाहर हटकर बैकफुट से बॉल को कट करना चाहते थे, लेकिन चकमा खा गए। ऑफ स्टंप पर बॉल लगी और उन्हें पवेलियन लौटना पड़ा। एलन ने 3 बॉल का सामना किया और 1 रन बनाए।

धनंजय डी सिल्वा ने न्यूजीलैंड के दूसरे ओपनर डेवोन कॉनवे को आउट किया। राउंड द विकेट से उन्होंने लेंथ गेंद ऑफ स्टंप के पास डाली, कॉनवे एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से बड़ा शॉट लगाना चाहते थे, लेकिन गेंद थोड़ी रुक कर आई और कॉनवे बोल्ड हो गए। कॉनवे ने 4 बॉल का सामना किया और वो एक रन ही बना पाए। डेवोन कॉनवे श्रीलंका के खिलाफ कुछ खास नहीं कर पाए और 1 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। कप्तान केन विलियमसन का फ्लॉप फॉर्म जारी है। उन्हें कसून रजिथा ने आउट स्विंग से अपना शिकार बनाया। विलियमसन गेंद को कवर की तरफ ड्राइव लगाना चाहते थे, लेकिन स्विंग से चकमा खा गए। उन्होंने 13 बॉल में 8 रन बनाए। 15वें ओवर की तीसरी बॉल पर वानिंदु हसरंगा ने डेरिल मिचेल को बोल्ड किया। हसरंगा की लेंथ गेंद पर मिचेल बड़ा शॉट खेलना चाहते थे। गेंद पड़कर अंदर आई और लेग स्टंप पर जा लगी। मिचेल ने 24 बॉल में 22 रन बनाए। केन विलियमसन का खराब फॉर्म जारी है। इस साल टी-20 इंटरनेशनल में उनका स्ट्राइक रेट 115 का है। केन विलियमसन का खराब फॉर्म जारी है। इस साल टी-20 इंटरनेशनल में उनका स्ट्राइक रेट 115 का है।

हार पर पाकिस्तानी फैंस का छलका दर्द, खिलाड़ियों का उड़ाया मजाक

सिडनी (एजेंसी)। एक ओर जहां भारतीय टीम ने टी-20 वर्ल्ड कप 2022 में लगातार दूसरी जीत दर्ज की तो दूसरी ओर पाकिस्तान की दूसरी हार हो गई। इससे उसके पूर्व क्रिकेटर्स और फैंस बौखला गए हैं। कहीं से भी इस बात को पचा नहीं पा रहे हैं कि उनकी टीम अब वर्ल्ड कप से लगभग बाहर हो चुकी है। भारत के हितैशी बनने की अक्सर एक्टिंग करते दिखने वाले शोएब अख्तर ने तो यहां तक कह दिया कि भारत भी कोई तीस मार खां नहीं है। वह भी जल्द ही हारकर ऑस्ट्रेलिया से वापस लौट आयेगा।

दूसरी ओर, एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें फैंस अपना दर्द बयां करते हुए बता रहे हैं कि क्रिकेट के मैदान पर ही नहीं, बल्कि ऑफ द फील्ड भी पाकिस्तानी क्रिकटर्स कितना पीछे हैं। वायरल वीडियो में एक फैन कहता है- भारतीय टीम के खिलाड़ियों के टैटू हैं। उनकी गर्लफ्रेंड होती हैं और उन्हें फरार्टेदार अंग्रेजी आती है। मैदान पर जब वह विदेशी प्लेयर्स से मिलते हैं तो दोस्ताना रिश्ते दिखाई देते हैं। फैन कहता है- हार्दिक पंड्या जब मैक्सवेल से मिलते हैं तो उनके बीच फनी मोमेंट्स होते हैं। वे बातचीत करते हैं। विराट कोहली को टैटू हैं। दूसरी ओर, हमारे प्लेयर्स से इन सब चीजों से कोई वास्ता नहीं है। न तो टैटू है और न ही वह चिल्ल करना करना जानते हैं। जब वह बाहर जाते हैं और भारतीय प्लेयर्स को अंग्रेजी में बात करते और दूसरी टीमों के प्लेयर्स के साथ चिल्ल करते देखते हैं तो असुरक्षा की भावना आ जाती है।

वह कहता है- भारत का बच्चा-बच्चा अंग्रेजी बोलता है। वो काफी होशियार हैं। इसके साथ ही वह अपनी टीम की खराब अंग्रेजी का भी मजाक उड़ाते दिखाई देता है। इस वीडियो को मेजर सुरेंद्र पूनिया ने अपने ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किया है। बता दें कि भारतीय टीम ने पाकिस्तान को रोमांचक मुकाबले में 4 विकेट से हराया था, जबकि इसके बाद पाकिस्तान की टीम जिम्बाब्वे से हार गई थी। दोनों ही मैचों का रिजल्ट आखिरी गेंद पर आया था।

बेईमानी करके भी जिम्बॉब्वे से नहीं जीत पाया पाकिस्तान, ब्रैड हॉग ने वायरल की तस्वीरें

सिडनी (एजेंसी)। टी-20 विश्व कप में जिम्बाब्वे का पाकिस्तान के खिलाफ बड़ा उलटफेर क्रिकेट की दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है। टूर्नामेंट में सबसे कमजोर टीमों में से एक जिम्बाब्वे ने पाकिस्तान को दांतो तले चने चबा दिए। पाकिस्तान ने अपनी साख बचाए रखने के लिए अंत तक कोशिश की, लेकिन जिम्बाब्वे ने अपने जबरदस्त आत्मबल से यह मैच 1 रन से जीत लिया। हालांकि, इस मैच को जीतने के लिए पाकिस्तानी खिलाड़ी ने बेईमानी भी की, लेकिन फिर भी वे मैच नहीं जीत पाए। दरअसल, मैच की अंतिम गेंद पर पाक टीम को तीन रन चाहिए थे, इसी दौरान पाक टीम के खिलाड़ी मोहम्मद वसीम जूनियर ने बेईमानी की। जिसे बाद में पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी ब्रैड हॉग ने उजागर किया और इसकी फोटोज भी सोशल मीडिया पर शेयर की। हॉग ने अपने ट्विटर पर पाक खिलाडी मोहम्मद वसीम जूनियर की एक तस्वीर साझा की, जहां उन्होंने गेंदबाज ब्रैड इवांस के गेंद डालने से पहले ही अपनी क्रीज छोड़ दी, लेकिन नियम के धज्जियां उड़ाने के बाद भी उनकी टीम नहीं जीत पाई और अंतीम गेंद में पाक टीम सिर्फ एक ही रन ले पाई, क्योंकि पाक टीम के दूसरे खिलाड़ी शाहीन अफरीदी रन-आउट हो गए। ब्रैड हॉग ने पाक खिलाड़ी मोहम्माद वसीम जूनियर द्वारा नियमों के उल्लंघन के लिए गंभीर दंड देने की मांग की। उन्होंने वसीम की फोटो शेयर करते हुए लिखा कि गेंद डालने से पहले ही क्रीज छोड़ने के लिए कड़ी सजा की आवश्यकता क्यों है? आप कल रात के मैच की आखिरी गेंद देख लीजिए! गुरुवार को खेले गए इस मैच की बात करें तो पहले गेंदबाजी करते हुए पाकिस्तानी ने जिम्बाब्वे के बल्लेबाजों को 130 रन के स्कोर तक सीमित रख कर अच्छा प्रदर्शन किया, लकिन 131 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बाबर आजम एंड कंपनी मजबूत साझेदारी करने में नाकाम रही।

वावरिंका स्विस इंडोर टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में

बासेल (एजेंसी)। स्टेन वावरिंका ने स्विस इंडोर टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में ब्रेंडन नाकाशिमा को तीन सेट में हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनायी। वावरिंका के पास दूसरे सेट में सर्विस करते हुए जीत दर्ज करने का मौका था, लेकिन उन्होंने इसे गंवा दिया। वह हालांकि 6-4, 5-7, 6-4 से जीत दर्ज करने में नाकाम रहें। तीन बार के ग्रैंडस्लैम विजेता और चोटों के जूझने के बाद अब दुनिया के 194वें नंबर के खिलाड़ी वावरिंका ने बैकहैंड विनर लगाकर जीत दर्ज की। शुक्रवार को क्वार्टर फाइनल में वावरिंका का सामना रॉबर्टो बतिस्ता आगुत से होगा। स्पेन के इस छठे वरीय खिलाड़ी ने तीन बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन ब्रिटेन के एंडी मरे को 6-3, 6-2 से हराया। कनाडा के दुनिया के तीसरे नंबर के खिलाड़ी और तीसरे वरीय फेलिक्स ऑगर एलियासिम ने मियोमिर केसमानोविच को 6-1, 6-0 से हराया।

सामने आया बड़ा बयान : बुमराह सभी फॉर्मेट में नहीं खेल सकते, अब उसे करना है फैसला

पर्थ (एजेंसी)। जसप्रीत बुमराह भारतीय टीम के सबसे अहम तेज गेंदबाज माने जाते हैं, जो ना सिर्फ अपनी यॉर्कर से बल्लेबाजों को धाराशाही करते हैं बल्कि डेथ ओवरों में भी विरोधियों को घुटने टेकने पर मजबूर कर देते हैं। यही कारण है कि उन्हें 'डेथ स्पेशलिस्ट बॉलर' माना जाता है, लेकिन उनको लेकर अपने समय के तूफानी तेज गेंदबाज रहे जेफ थॉमसन ने बड़ा बयान दिया है। दुनिया के महानतम तेज गेंदबाजों में से एक थॉमसन का कहना है कि बुमराह सभी फॉर्मेट में नहीं खेल सकते। उन्होंने कहा कि अगर जसप्रीत बुमराह को अपना करियर लंबा खींचना है तो वह लंबे समय तक तीनों प्रारूपों में खेलने का जोखिम नहीं उठा सकते। समकालीन क्रिकेट में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाजों में से एक बुमराह चोटिल होने के कारण टी-20 विश्वकप में

नहीं खेल पा रहे हैं। पीठ की चोट के कारण उन्हें लंबे समय तक बाहर रहना पड़ सकता है। अपने समय के तूफानी तेज गेंदबाज थॉमसन का मानना है कि यह बुमराह को तय करना है कि उन्हें तीनों प्रारूपों में से किस प्रारूप में खेलना है।

दर्शक चाहते हैं कि वह सीमित ओवरों की क्रिकेट में खेले : थॉमसन ने पीटीआई से बातचीत में कहा कि बुमराह अपने शरीर पर बहुत अधिक बोझ डालते हैं, क्योंकि वह सभी प्रारूपों में खेलते हैं और ऐसे में वे चोटिल हो जाते हैं। अब फैसला उन पर है कि वह क्या करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि दर्शक चाहते हैं कि वह सीमित ओवरों की क्रिकेट में खेले। वह सीमित ओवरों की क्रिकेट में उसे गेंदबाजी करते हुए देखने के लिए स्टेडियम में आते हैं। वनडे में केवल 60 और टी-20 में 24 गेंद करनी होती हैं जो इस पर निर्भर करता है कि वह किस प्रारूप में खेलता है। थॉमसन ने कहा कि टेस्ट क्रिकेट में उसे एक दिन में 15 ओवर करने की जरूरत पड़ेगी। आप अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि अपना करियर लंबा खींचने के लिए आपको किस प्रारूप में खेलना चाहिए। जिस तरह से प्रत्येक साल विश्वकप हो रहे हैं सीमित ओवरों की क्रिकेट भी कम महत्वपूर्ण नहीं रह गई है।

निराश हूं मगर हमारा ध्यान अगले मैच पर है केंद्रित : जोश बटलर

मेलबर्न (एजेंसी)। आस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्वकप टी-20 मैच के रद्द होने से इंग्लैंड के कप्तान जोस बटलर को निराशा है मगर अब उनका पूरा ध्यान श्रीलंका और न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले जानेवाले दो मुकाबलों पर है। बारिश के चलते शुक्रवार को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर गीली आउटफील्ड के कारण इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच बहुप्रतीक्षित मैच बगैर बाल फेंके रद्द कर दिया गया। अंपायर क्रिस ब्राउन, जोएल विल्सन और अलीम डार ने भारी बारिश के बाद आखिरी बार स्थानीय समयानुसार आठ बजकर 48 मिनट पर आउटफील्ड का निरीक्षण किया और मैच को रद्द करने की घोषणा की। बटलर ने कहा कि मुझे लगता है कि गीली आउटफील्ड के कारण वहां गेंदबाजी करनेवाले हर गेंदबाज को चिंता होती। खिलाड़ियों की सुरक्षा वास्तव में महत्वपूर्ण है और यह खेलने के लिए फिट नहीं था चाहे वह हमारे गेंदबाज हों या ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाज। मुझे लगता है कि सही कॉल किया गया था। मैच के धुलने से इंग्लैंड की चिंतायें निश्चित तौर पर बढ़ी है। उसे तीन मैचों में सिर्फ एक जीत मिली है और खुद को सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए उसे दो में से दो जीत की जरूरत होगी। आयरलैंड के खिलाफ वर्षा बाधित मैच में हार मिलने के बाद आज का मैच रद्द होने से इंग्लैंड की मुश्किलों में इजाफा हुआ है। इंग्लैंड के खाते में अब तक एकमात्र जीत अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में आई है। अब उसे एक नवंबर को न्यूजीलैंड और पांच नवंबर को श्रीलंका से भिड़ना होगा। हालांकि, तीन अंकों के साथ फिलहाल इंग्लैंड अंकतालिका में दूसरी पायदान पर काबिज है। बटलर ने कहा कि मुझे वास्तव में कोई निराशा नहीं है। मैं ऑस्ट्रेलिया में मौसम विशेषज्ञ नहीं हूं, लेकिन हम सभी क्रिकेट का पूरा खेल खेलना चाहते हैं लेकिन दुर्भाग्य से अब हमारे पास सिर्फ दो मौके बचे हैं।

टी-20 वर्ल्ड कप : आयरलैंड-अफगानिस्तान का मैच भी धुला

मेलबर्न (एजेंसी)। मेलबर्न में हो रही बारिश के चलते टी-20 विश्वकप में सुपर-12 के ग्रुप 1 में आयरलैंड और अफगानिस्तान के बीच मुकाबला शुक्रवार को रद्द कर दिया गया है। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में सुबह से ही हो रही बारिश और तेज हवाओं के चलते टॉस भी संभव नहीं हो सका था। इस बीच वर्षा की गति कम होने पर मैदानी अंपायर अलीम डार और एडरियान होल्डस्टाक ने स्थानीय समयानुसार करीब साढ़े चार बजे मैच के रद्द होने का औपचारिक ऐलान कर दिया। मैच के रद्द होने पर दोनों टीमों को एक-एक अंक मिले। इस मैच के रद्द होने के बाद ग्रुप 1 की अंक तालिका में आयरलैंड तीन मैचों में तीन अंक के साथ दूसरे स्थान पर काबिज है, वहीं अफगानिस्तान ने इतने ही मैचों में दो अंक जुटाये हैं। दोनों टीमों का यह तीसरा मुकाबला था। इससे पहले आयरलैंड की टीम इंग्लैंड को 5 रन से हरा कर बड़ा उलटफेर कर चुकी है। हालांकि, अपने शुरूआती मैच में उसे श्रीलंका के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। दूसरी ओर अफगानिस्तान को इंग्लैंड ने हराया था, वहीं न्यूजीलैंड के खिलाफ वर्षा बाधित मैच में उसे एक अंक से खाता खोलने का मौका मिला है। मौजूदा विश्वकप अब तक पांच बड़े उलटफेरों का गवाह बन चुका है जिसमें गुरुवार को खेला गया पाकिस्तान और जिम्बावे के मुकाबला भी शामिल है।

न्यूज गैलरी

कारोबारी प्रेम प्रकाश की जमानत अर्जी खारिज

रांची। खनन घोटाले में चल रही ईडी की कार्रवाई के तहत जेल में बंद चर्चित कारोबारी प्रेम प्रकाश की जमानत अर्जी ईडी कोर्ट ने खारिज कर दी। इससे पहले कोर्ट ने दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी होने के बाद मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता विक्रांत सिन्हा ने पैरवी की। आपको बता दें कि प्रेम प्रकाश सहित तीन के खिलाफ ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोप पत्र पूर्व में ही दाखिल कर दिया है। ईडी पूर्व में ही प्रेम प्रकाश से दो बार 6- 6 दिनों की रिमांड पर लेकर पूछताछ कर चुकी है। आपको बता दें कि ईडी ने अवैध खनन के मामले में प्रेम प्रकाश के 16 ठिकानों पर पहले छापेमारी की थी और बाद में 25 अगस्त को ईडी ने प्रेम प्रकाश को गिरफ्तार किया था। ईडी की टीम ने प्रेम प्रकाश के ठिकानों पर हुई छापेमारी के दौरान अरगोड़ा स्थित आवास से दो एके-47 और 60 गोलियां बरामद की थी। इसके अलावा कई अवैध संपत्तियों व कोला कारोबार से जुड़े दस्तावेज बरामद किए थे।

एसएन तिवारी, सुरेन्द्र सिंह और राजेश्वरी देवी के अंतिम संस्कार में उमड़ी भीड़, दी भावभीनी विदाई

रांची। पत्रकार राजेश तिवारी के पिता एस एन तिवारी (65 वर्ष), भाजपा नेता सत्य नारायण सिंह की माता राजेश्वरी देवी (78 वर्ष) और वार्ड 39 के पार्षद वेद प्रकाश सिंह के पिता सुरेन्द्र सिंह (82 वर्ष) का आज अंतिम संस्कार कर दिया गया। एस एन तिवारी और राजेश्वरी देवी का हरमू मुक्ति धाम (रांची) और सुरेन्द्र सिंह का धुर्वा (सीठियो, रांची) स्थित मुक्ति धाम में उनके परिजनों ने मुखाग्नि दी। इस दौरान पत्रकारिता जगत के लोगों के अलावा भाजपा सहित अन्य दलों, संगठनों के लोग भी उपस्थित थे। सबों ने एस एन तिवारी, राजेश्वरी देवी और सुरेन्द्र सिंह के परिजनों को ढाढस बंधाते इसे अपूर्णीय क्षति बताया। गहरा शोक प्रकट किया।

विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने छठव्रतियों के बीच छठ प्रसाद का वितरण किया

रांची। शनिवार को विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों से जुड़े प्रसिद्ध समाजसेवी एवं छात्र क्लब मानव कल्याण मंच के संरक्षक मनमोहन पांडे ने पिस्कामोड़ जतरा मैदान हनुमान मंदिर रोड पांडे निवास के निकट सैकड़ों छठव्रतियों के बीच छठ प्रसाद का वितरण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ रांची ग्रामीण डी.एस.पी.प्रवीण कुमार सिंह जी ने अपने कर कमलों से छठ व्रतियों के बीच प्रसाद वितरण कर किया।इस मौके पर समाजसेवी नदकिशोर सिंह चंदेल,बैजू सोनी,अमृतेश पाठक,शिव किशोर शर्मा,अमित राज ठाकुर, कुमुद झा,पायल सोनी, सीमा मिश्रा, विजय पांडे,शशि पांडे, विद्या पांडे,मंजू पांडे, पुष्पा देवी, गणेश महतो, अरुण कुमार तिवारी, प्राशु कुमार माही तिवारी, अभिमन्यु कुमार यादव आदि श्रद्धालुगण मौजूद थे।यह जानकारी समाजसेवी शिव किशोर शर्मा ने दी है।

अरगोड़ा और सहजानंद चौराहा पथ विभाग को होगा ट्रांसफर,जुडको को लिखा गया पत्र

रांची। राजधानी के दो महत्वपूर्ण चौराहा अरगोड़ा व सहजानंद चौक का डेवलपमेंट पथ निर्माण विभाग अपने हाथों में लेगा। इसके लिए पथ निर्माण सचिव सुनील कुमार ने नगर विकास सचिव को पत्र लिखा है और इन दोनों चौराहों के हस्तांतरण करने के लिए अपने विभाग के संबद्ध पदाधिकारियों को निर्देशित करने अनुरोध किया है ताकि इन चौराहों का आवश्यक रूप से मरम्मतिकरण और सुंदरीकरण कराया जा सके। दरअसल, हाल ही में अरगोड़ा चौक पर भारी जलजमाव होने की वजह इसे नये सिरे से पथ निर्माण विभाग ने बनवाया था और सहजानंद चौक का भी मरम्मत कराया गया था। मार्च में ही यह बात सामने आयी थी कि दोनों चौराहों का मरम्मत कार्य पथ निर्माण विभाग करा रहा है इसलिए इन्हें पथ विभाग में हस्तांतरित माना जायेगा। पथ विभाग के सचिव के इस अनुरोध पर अब नगर विकास विभाग ने जुडको को इस संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने का भी अनुरोध किया है। सचिवालय, विधानसभा, एयरपोर्ट, स्टेशन इत्यादि होने की वजह से इस महत्वपूर्ण बाइपास से रोजाना वीआईपी का आना-जाना होता है।

डॉक्टर महुआ माजी ने छठ महापर्व को लेकर रांची शहर के विभिन्न छठ घाटों का किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

रांची। शनिवार को राज्यसभा सांसद डॉक्टर महुआ माजी ने छठ महापर्व को लेकर रांची शहर के चडरी तालाब, जेल तालाब, करम टोली तालाब, दिनकर छठ पूजा घाट पश्चिमी कांके डैम सहित शहर के विभिन्न तालाबों और डैमो का दौरा कर रांची नगर निगम के पदाधिकारी को अच्छे ढंग से तालाब की साफ-सफाई सहित सुरक्षा के लिए तालाब में बेरी केटिंग करने का निर्देश दिया और शहर के प्रशासन को भी निर्देश दिया कि सुरक्षा चाक-चौबंद होनी चाहिए। निरीक्षण के दौरान सभी के साथ सांसद महोदया ने छठ घाट की सफाई भी की। छठ घाट निरीक्षण के दौरान राज्य सभा सांसद महुआ माजी के नेतृत्व में महावीर मंडल के अध्यक्ष जय सिंह यादव, युवा रांची महानगर रामनवमी पूजा समिति के अध्यक्ष नंद किशोर सिंह चंदेल, रांची महानगर काली पूजा समिति के अध्यक्ष विनय सिंह, बालवीर नवयुवक रामनवमी पूजा समिति के संस्थापक अध्यक्ष नमन भारतीय,दिनकर छठ पूजा समिति के अध्यक्ष दीपक ओझा जी, न्यू सर्वोदय क्लब के अध्यक्ष विवेक सिंह, रांची जिला छठ पूजा समिति के सूरजभान सिंह, कुमार बंटी, धीरज यादव, अजीत सिंह टिंकू, निशांत यादव, चंदन वर्मा, निशांत सिंह, सन्नी गुप्ता, नीरज वर्मा आदि लोग उपस्थित थे।

◆महुआ माजी के नेतृत्व में महावीर मंडल के अध्यक्ष जय सिंह यादव, युवा रांची महानगर रामनवमी पूजा समिति के अध्यक्ष नंद किशोर सिंह चंदेल, रांची महानगर काली पूजा समिति के अध्यक्ष विनय सिंह, बालवीर नवयुवक रामनवमी पूजा समिति के संस्थापक अध्यक्ष नमन भारतीय

चडरी तालाब के मुख्य संरक्षक जितेंद्र सिंह, संरक्षक सबलू मुंडा, जेल तालाब के मुख्य संरक्षक राजेश सिन्हा सन्नी, संरक्षक उज्जवल तिवारी, अध्यक्ष रौशन कुमार, करमटोली तालाब के अध्यक्ष सूरज टोप्पो, दिनकर छठ पूजा समिति अध्यक्ष दीपक ओझा, कमलेश यादव, ऋषि, न्यू सूर्योदय क्लब छठ पूजा समिति अध्यक्ष विवेक सिंह, राहुल, रिंकू शाहदेव आदि लोगों ने छठ घाट पहुंचने पर राज्यसभा सांसद महुआ माजी का स्वागत किया।

श्री राम सेवा संघ के द्वारा छठ महोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

रांची। अपार हर्ष की प्राप्ति हो रही है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री राम सेवा संघ के द्वारा छठ महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है निम्नलिखित कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं। आपका आगमन और सहयोग समिति के सदस्यों सदैव गौरवान्वित महसूस कराता है। 30.10.2022 रविवार सूर्यदेव के प्रतिमा के पट् का अनावरण छठ व्रतियों के बीच फल, पुष्प व पूजन सामारी का वितरण श्रद्धालुओं के आगमन तक भजनपूजन, हवन व प्रातः अर्घ्या के लिए गंगाजल, दुग्ध का वितरण किया जायेगा। चालुओं के आगमन तक भजन, चाय का वितरण प्रातः 6 बजे सोमवार को होगा। छठ व्रतियों के बीच सुबह 11 बजे सम्मान समारोह छठ के दौरान सफाई में जुटी सफाई कर्मियों को वस्त्र वितरण दोपहर 3 बजे से भोग वितरण आपके आगमन तक दिनांक 01.11.2022 मंगलवार प्रातः 10 बजे हवन, आरती और प्रसाद वितरण संध्या 3 बजे भव्य विसर्जन शोभा यात्राआप पूरे महोत्सव में अतिथि के रुप में सादर आमंत्रित है । आपसे आग्रह है कि दिनांक 31.10.2022 को संध्या 3.00 बजे से महोत्सव स्थल पर पहुंचकर महाभोग अवश्य ग्रहण करें।

◆रविवार सूर्यदेव के प्रतिमा के पट् का अनावरण छठ व्रतियों के बीच फल, पुष्प व पूजन सामारी का वितरण श्रद्धालुओं के आगमन तक भजनपूजन, हवन व प्रातः अर्घ्या के लिए गंगाजल, दुग्ध का वितरण किया जायेगा।

परिवहन आयुक्त के आदेश से ट्रक चालक चिंतित, हस्तक्षेप की कर रहे मांग

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राज्य के ट्रक और बड़े परिवहन संचालकों की परेशानी परिवहन आयुक्त के आदेश के बाद से बढ़ी हुई है। इन समस्याओं के समाधान के लिये गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन और झारखंड ट्रक मालिक संघ के पदाधिकारियों ने चैंबर से भी मामले में हस्तक्षेप की मांग की है। चैंबर अध्यक्ष से मामले में ट्रक व्यवसायियों ने मुलाकात की। जिसमें बताया गया कि पिछले दिनों विभाग की ओर से निर्देश जारी किया गया कि ऐसे वाहन जिनका निबंधन अन्य राज्यों से कराया गया है लेकिन उनका निवास व व्यापार का क्षेत्र झारखंड है, पर अभियान चलाकर राज्य पथ कर की वसूली की जाये। इस निर्देश से वाहन मालिक चिंतित हैं। यह भी अवगत कराया गया कि इस मामले में पिछले सप्ताह परिवहन सचिव के साथ बैठक की गई थी, लेकिन कोई उपयुक्त समाधान नहीं निकल सका है। इस दौरान एसोसिएशन और चैंबर के बीच गहन विचार विर्मश किया गया। जिसके बाद निर्णय लिया गया है कि चैंबर के नेतृत्व में आरजीटीए और झारखंड ट्रक मालिक संघ की ओर से शीघ्र ही एक राज्यस्तरीय बैठक आयोजित किया जायेगा। वाहन मालिकों की समस्याओं का संकलन कर, परिवहन सचिव से वार्ता की जायेगी। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्राचार किया: चैंबर से जानकारी मिली कि एक पत्र रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव को किया गया है। जिसमें आग्रह किया गया है कि कोविड काल से अब तक बंद सीनियर सिटीजन, खिलाड़ियों समेत अन्य श्रेणी के यात्रियों को रियायती टिकट की सेवा पुर्नबहाल किया जाए। पत्र में लिखा गया है कि 30 सितंबर 2022 तक के जारी किये गये आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि यात्री ट्रेन के किराये से भारतीय रेलवे को वित्तिय वर्ष 2021-22 की तुलना में वित्तिय वर्ष 2022-23 में लगभग दो गुणा अतिरिक्त राजस्व की वृद्धि हुई है। ऐसे में जब भारतीय रेलवे के राजस्व में नियमित रूप से संतोषजनक बढ़ोत्तरी हो रही है।

नयी बिजली टैरिफ पिटीशन में आयोग ने फिर दिया दो सप्ताह का समय, जेबीवीएनएल ने मांगा समय

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राज्य में नयी बिजली दरों के निर्धारण की राह मुश्किल लग रही है। कुछ दिनों पहले राज्य विद्युत नियामक आयोग ने झारखंड बिजली वितरण निगम के टैरिफ पीटिशन में कई खामियां पायी थी। जिसके बाद आयोग ने निगम को पीटिशन में सुधार करने का निर्देश दिया था। जिसके लिये आयोग ने निगम को एक सप्ताह का समय दिया था। एक सप्ताह पूरा होने पर आयोग ने दो सप्ताह का फिर से अतिरिक्त समय दिया है। लेकिन इसके बाद फिर से निगम ने आयोग में पत्र दाखिल कर समय की मांग की। निगम ने पीटिशन में सुधार करने में असर्मथता दिखायी है। ऐसे में अब आयोग को इस पर निर्णय लेना है। जानकारी हो कि पिछले साल नंवबर में आयोग के पास निगम ने पीटिशन दाखिल किया। जो साल 2022-23 के लिये बिजली दरों को निर्धारण किया जाता। लेकिन अब फिर से निगम को साल 2023-24 के लिये पीटिशन फाइल करना होगा। जिसकी अंतिम तिथि 30 नवंबर है। जेबीवीएनएल ने साल 2022-223के लिए 16-17 प्रतिशत टैरिफ बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है। जेबीवीएनएल ने अपने प्रस्ताव में हर साल कुल 6500 करोड़ रुपए का नुकसान दिखाया है। पिछले दो वित्तीय साल से बिजली दरों में बढ़ोतरी नहीं होने के कारण बिजली खरीद और आपूर्ति में 6500 करोड़ का गैप दिखाया गया है। आयोग ने स्क्रूटनी के दौरान इन आंकलनों पर संदेह व्यक्त किया था। अक्टूबर 2020 में राज्य में नयी बिजली दरें निर्धारित की गयी। जो अब तक मान्य है। साल 2020 में आयोग में अध्यक्ष पद रिक्त है। वहीं साल 2021 में दो सदस्य पद भी खाली हो गये। ऐसे में आयोग खाली होने के कारण दो साल से नयी बिजली दरें तय नहीं की गयी है। आयोग में एक सदस्य होने पर भी नयी बिजली दरें तय हो सकती है।

डीएसपीएमयू में कार्तिक उरांव की जयंती पर कार्यक्रम

रांची। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में शनिवार को कार्तिक उरांव की जयंती मनाई गई। इसमें बतौर मुख्य अतिथि डीएसडब्ल्यू डॉ अनिल कुमार मौजूद थे। मुख्य वक्ता साहित्यकार महादेव टोप्पो ने कहा कि कार्तिक उरांव ने अपने व्यक्तित्व और कार्यों से समाज को प्रभावित किया। हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ जिंदर सिंह मुंडा ने कहा कि हमें कार्तिक उरांव जैसी विभूतियों को याद करना चाहिए। मौके पर डीएसडब्ल्यू डॉ अनिल कुमार, प्रो रामदास उरांव ने भी अपने विचार साझा किए। संचालन सुमंती तिर्की और डॉ सीता कुमारी ने किया। कार्यक्रम में युगेश कुमार महतो, डॉ पीपी महतो, डॉ जयकिशोर मंगल, डॉ डुमनी माई मुर्मू, डॉ मनोज कच्छप, सुजाता टेटे व अन्य शिक्षकों समेत बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

राजीव कुमार, अमित अग्रवाल व पूजा सिंघल की न्यायिक हिरासत की अवधि बढ़ी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मनी लाउंड्रिंग मामले में अधिवक्ता राजीव कुमार और व्यवसायी अमित अग्रवाल की पेशी शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ईडी कोर्ट में हुई। कोर्ट ने इन दोनों की अगली पेशी की तिथि 11 नवंबर निर्धारित की। वही, निलंबित आइएएस पूजा सिंघल को शनिवार को ईडी कोर्ट में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पेश किया गया। उनके साथ जेल में बंद सीए सुमन कुमार एवं बर्खास्त जूनियर इंजीनियर राम बिनोद प्रसाद सिन्हा को भी पेश किया गया। कोर्ट ने तीनों की न्यायिक हिरासत अवधि 2 नवंबर तक बढ़ा दी है। तीनों की अगली पेशी अब अदालत में 2 नवंबर को होगी। दूसरी ओर अवैध खनन से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपी पंकज मिश्रा, प्रेम प्रकाश, बच्चू यादव की पेशी भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ईडी के विशेष न्यायाधीश के समक्ष हुई। कोर्ट ने इन तीनों की न्यायिक हिरासत की अवधि 5 नवंबर तक के लिए बढ़ा दी है। बता दें कि यह सभी आरोपियों के खिलाफ ईडी ने चार्जशीट दाखिल कर दिया है। ये सभी ईडी की न्यायिक हिरासत में जेल में है।

पेज एक के शेष

झारखंड में सुखाड़ की स्थिति...

प्रखंडों के प्रभावित किसान परिवारों को बड़ी राहत देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि सूखे की स्थिति को देखते हुए 22 जिलों के 226 प्रखंडों के प्रति किसान परिवार को तत्काल सूखा राहत हेतु 3500 रुपये राशि दी जायेगी। इन 226 प्रखंडों के सभी प्रभावित किसान परिवारों को यह राशि शीघ्र ही उपलब्ध करायी जायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि विभाग द्वारा सुखाड़ का आकलन प्रतिवेदन के अनुसार राज्य में 22 जिलों के 226 प्रखंड सूखे की चपेट में है। ऐसे में राज्य सरकार की नैतिक जिम्मेदारी है कि प्रभावित किसान परिवारों को तत्काल सूखा राहत राशि उपलब्ध करायी जाये। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के लगभग 30 लाख से अधिक किसान परिवार सूखे की चपेट में हैं जिन्हें इसका लाभ मिल सकेगा। सूखा राहत राशि उपलब्ध कराने में राज्य सरकार लगभग 1200 करोड़ रुपये का खर्च करेगी।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जल्द राज्य में सूखे की स्थिति का आकलन के आधार पर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर केंद्र सरकार को अनुशंसा भेजते हुए सूखा राहत राशि की मांग की जायेगी। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आपदा प्रबंधन मंत्री बन्ना गुप्ता, मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में कृषि मंत्री बादल, मुख्य सचिव सुखदेव सिंह, विकास आयुक्त अरुण कुमार सिंह, प्रधान सचिव वित्त विभाग अजय कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे, सचिव खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग हिमानी पांडे, सचिव आपदा प्रबंधन विभाग अमिताभ कौशल, सचिव कृषि विभाग अबूबकर सिद्दीख, सचिव जल संसाधन विभाग प्रशांत कुमार, सचिव स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के रवि कुमार, कृषि निदेशक निशा उरांव, निदेशक समाज कल्याण विभाग छवि रंजन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

राज्य के सूखा प्रभावित 22 जिलों के ये हैं 226 प्रखंड : जरीडीह, कसमार, पेटरवार, गोमिया, बेरमो, नावाडीह, कान्हाचट्टी, सिमरिया, तंडवा, इटखोरी, मयूरहंड, सरवां, सारठ, कैरों, देवघर, मोहनपुर, सोनारायठाडी, मधुपुर, पालोजोरी, मारगोमुण्डा, देवीपुर गोविन्दपुर, टुंडी, तोपचांची, धनबाद, बलियापुर, निरसा, कालियासोल, एग्यारकुंड, पूर्वी टुंडी, बाघमारा, जरमुंडी, दुमका, जामा, मसलिया, रणेश्वर, शिकारीपाड़ा, सरैयाहाट, रामगढ़, काठीकुंड, गोपीकांदर, मेराल, डंडई, रमना, विशुनपुरा, भवनाथपुर, चिनियां, मझिआंव, सगमा, गढ़वा, डंडा, रंका, कांडी, धुरकी, बड़गढ़, नगर उंटारी, रमकंडा, बरडीहा, केतार, खरौंधी, भंडरिया, गाण्डेय, बेंगाबाद, जमुआ, धनवार, बगोदर, सरिया, डुमरी, पीरटांड़, गिरिडीह, बिरनी, तिसरी, देवरी, गावां, गोड्डा, पथरगामा, बसंतराय, महागामा, मेहरमा, बोवारीजोर, सुंदरपहाड़ी, पोडैयाहाट, ठाकुरगांगटी, गुमला, पालकोट, चैनपुर, डुमरी, जारी, कामडरा, सिसई, भरनो, बिशुनपुर, घाघरा, रायडीह, दाड़ी, बड़कागांव, केरेडारी, हजारीबाग, चूरचु, दारू, ईचाक, ताती झरिया, कटकमसांडी, बरही, चौपारण, बरकट्टा, चलकुसा, पदमा, बिष्णुगढ़, नारायणपुर, कर्माटाड़, जामताड़ा, नाला, कुंडहित, फतेहपुर, खूंटी, मुरहू, अड़की, कर्रा, तोरपा, रनिया, कोडरमा, जयनगर, मरकच्चो, डोमचांच, सतगांवा, महुआटांड़, गारू, हेरगंज, बरियातु, लातेहार, चंदवा, बालूमाथ, मनिका, बरवाडीह, लोहरदगा, सेन्हा, भंडरा, कुडू, कैरो, किस्को, पेशरार, पाकुड़िया, पाकुड़, हिरनपुर, लिट्टीपाड़ा, अमरापाड़ा, महेशपुर, मनातू, लेस्लीगंज, पांकी, मेदनीनगर, तरहसी, विश्रामपुर, नवाबाजार, पांडू, पड़वा, हरिहरगंज, छतरपुर, नौडीहा बाजार, रामगढ़, चैनपुर, ऊंटारी रोड, पाटन, सतबरवा, हैदरनगर, हुसैनाबाद, मोहम्मदगंज, पिपरा, दुल्मी, चितरपुर, मांडू, पतरातू, गोला, मांडर, बेड़ो, इटकी, ओरमांझी, नामकुम, अनगड़ा, सिल्ली, तमाड़, रातू, नगड़ी, बुड़मू, खलारी, लापुंग, बुंडू, चान्हो, सोनाहातू, बरहरवा, साहेबगंज, बोरियो, मंडरो, बरहेट, पतना, राजमहल, उधवा, तालझारी, सरायकेला, खरसावां, कुचाई, चांडिल, ईचागढ़, कुकडू, राजनगर, गम्हरिया, झींकपानी, टोंटो, जगन्नाथपुर, नवामुंडी, मंझगांव, कुमरडुंगी, मंझरी, तांतनगर, चक्रधरपुर, सोनुवा, गोइलकेला, मनोहरपुर, बंदगांव, हाटगम्हरिया, गुदड़ी, चाईबासा, खूंटपानी, आनन्दपुर।

जेजेएमपी उग्रवादी संगठन के...

द्वारा उग्रवादियों की गिरफ़्तारी को लेकर एक छापामारी दल का गठन किया गया। जिसमें छापामारी दल के द्वारा बारीडीह गांव में छापामारी की गई। जहां से जेजेएमपी उग्रवादी संगठन का दस्ता सदस्य सुधीर लोहरा एवं जेजेएमपी उग्रवादी संगठन का सहयोगी जीतेन्द्र कुमार तुरी को पकड़ा गया है। पुलिस ने इनके पास से जेजेएमपी उग्रवादी पर्चा एवं जिन्दा गोली बरामद की है। जीतेन्द्र कुमार तुरी के विरुद्ध पूर्व से ही हत्या,लूट एवं उग्रवादी से संबंधित कांड दर्ज है। जबकि सुधीर लोहरा जेजेएमपी उग्रवादी संगठन का दस्ता सदस्य है। इसके विरुद्ध लातेहार एवं मनिका में कई कांड दर्ज है तथा सुकरी के रहने वाले उमेश प्रसाद की हत्याकांड में दो वर्ष से फरार चल रहा था। इन दोनों अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। अभियुक्त सुधीर लोहरा का आपराधिक इतिहास लातेहार, मनिका थाना के चार केस में आर्म्स एक्ट एवं 17 सीएल एक्ट के तहत मामला दर्ज है। वहीं अभियुक्त जीतेन्द्र कुमार तुरी का आपराधिक इतिहास बालूमाथ व चंदवा थाना में आर्म्स एक्ट एवं 17 सीएल एक्ट के तहत मामला दर्ज है।

बरामद सामानों की सूची : एक मारुति सुजुकी स्विफ्ट कार ,जेजेएमपी का पर्चा 6 अदद,8 एमएम की जिन्दा गोली 15 अदद, मोबाइल फोन तीन अदद,पिट्ठू बैग एक अदद बरामद किया गया है।

छापामारी दल में शामिल पुलिस पदाधिकारी : पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी अमित कुमार गुप्ता , पुअनि मोहम्मद शाहरुख, पुअनि दीपक नारायण सिंह , पुअनि धर्मेन्द्र सिंह सरदार शामिल थे।

छठ पर्व में आकर्षक दृश्यों का...

भीतर उक्त योजना को पूरा करने के लिए निर्देशित किया था। अब मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र का पूरा परिसर दूधिया रोशनी से नहा रहा है। आकर्षक और भव्य विद्युत सज्जा लोगों के आकर्षण का केंद्र बना है। मत्स्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक इस बार मत्स्य प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार स्थित तालाब में छठव्रतियों सहित श्रद्धालुओं को आकर्षक विद्युत सज्जा मंत्रमुग्ध कर देगी। वहीं, तालाब की साफ-सफाई भी पूर्व की अपेक्षा इस बार काफी बेहतर तरीके से करायी गयी है, ताकि छठव्रतियों को यहां पर छठ करने का एक सुखद अनुभूति हो। इस दिशा में मंत्री बादल और मत्स्य निदेशालय के प्रयासों की चहुंओर सराहना की जा रही है।

डालटनगंज : तथाकथित मरीन ड्राइव-टू...

शुरू हो गयी है। लोगों का कहना है कि पिछले पांच साल में कभी भी इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया। जबकि पहली मरीन ड्राइव के निर्माण के समय सावधानी और नियम के तहत कार्य किया गया था। लेकिन इस बार चुनाव में फायदा लेने के लिये निमार्णाधीन मरीन ड्राइव के गुणवत्ता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। शहर में मरीन ड्राइव की घोषणा के समय उत्साह देखा गया था। लेकिन घटिया निर्माण को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्थान में छठ महापर्व पर आध्यात्मिक कार्यकम आयोजित

प्रकृति के सूर्य परमात्मा के सम्मुख आने से आत्मा की गन्दगी दूर होती है व विकारों के कीटाणु नाश होकर आत्मा शुद्ध हो जाती है

नवीन मेल संवाददाता

रांची। शनिवार को यहां चार दिनों तक चलने वाले छठ महापर्व के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय ब्रह्माकुमारी संस्थान चैधरी बगान हरमू रोड में ब्रह्माकुमारी निर्मला बहन ने अपने उद्गार अभिव्यक्त करते हुए कहा कि ज्ञान सूर्य परमात्मा अन्धकार, निर्बलता, अस्वच्छता, चरित्रहीनता को दूर कर सदा सूर्य की भांति सेवा में उपस्थित रहता है। आज सर्व आत्माएँ परमात्म ज्ञान से विमुख है। यदि हम ज्ञान सूर्य से संबंध जोड़कर उसके सम्मुख रहेंगे तो अत्यधिक मात्रा में सर्व शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं। छठ पर्व के दौरान रखी जाने वाली शारीरिक स्वच्छता तथा खान-पान की स्वच्छता के बारे में उन्होंने कहा जैसे प्रकृति के सूर्य परमात्मा के सम्मुख आने से आत्मा की गन्दगी दूर हो जाती है व विकारों के कीटाणु नाश होकर आत्मा शुद्ध स्वच्छ बन जाती है। सूर्य जिस प्रकार स्वयं प्रदीप्त व प्रकाशमय परमपिता की अविनाशी शक्ति को पाकर इस ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है उस परमपिता कल्याणकारी परमात्मा शिव से सर्व संबंध जोड़कर हम आत्माएं सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित कर कल्याण एवं परिवर्तन कर सकते हैं। उर्जा एवं शक्ति प्राप्ति की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा ज्ञान सूर्य परमात्मा हम आत्माओं से यही आशा रखते हैं कि हम एक-दो दिन अस्ताचलगामी या उदयकाल के कुछ घंटों के लिए ही नहीं बल्कि सदाकाल के लिए अभिमुख रहकर विश्व कल्याणकारी बनें। बादल बीच में आने से पृथ्वी के अर्द्धभाग में सम्मुख नहीं होने से लोग रात्रि के समय सूर्य की शक्ति पूर्ण प्रमाण प्राप्त नहीं करते। इसीलिए जैसे वैज्ञानिक पृथ्वी से सवा लाख मील की दूरी पर एक शक्ति भंडार बनाने का विचार कर रहे हैं वैसे हम भी इस धरा के साकार वातावरण से दूर पॉच तत्वों के पार परमधामवासी शिव से संबंध रखें तो अथाह शक्ति प्राप्त हो सकती है। फिर अपने शुद्ध विचारों की तंरगों द्वारा यहॉ की तड़पती दुखी अशांत आत्माओं को सुख, शांति, प्रेम, पवित्रता रूपी शक्तियॉ प्रेशित कर सकते हैं।

आस्था का पवित्र महापर्व छठ आज

छठ मईया सभी की मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं जो इस व्रत को स्वीकार करते हैं। इसलिए इसे छठ के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है छह। एक मान्यता यह भी है कि भगवान सूर्य की एक बहन थी । जिसका नाम छठ माता था, इसलिए लोग उनकी बहन को प्रभावित करने के लिए भगवान सूर्य से प्रार्थना करते हैं। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए लोग इस व्रत को रखते हैं और आजकल दुनिया भर में लोग इस त्योहार को मनाते देखे जा सकते हैं। इस विशेष अवसर के लिए लोगों की बहुत सारी मान्यताएं हैं और कई नियम तथा प्रतिबंध हैं। जिनका इस व्रत को करते समय कड़ाई से पालन करना चाहिए। ये नियम बेहद ही कठिन होते हैं । फिर भी लोग अपने चेहरे पर खुशी के साथ इसका पालन करते हैं। वे 3 दिन तक उपवास रखते हैं, फिर भी उनके चेहरे पर मुस्कुराहट बनी रहती है। वास्तव में यह विश्वास का त्योहार है जो उन्हें इन कई दिनों तक उपवास रखने में मदद करता है। पलामू सहित पूरे गांव कस्बे में कई त्योहार मनाए जाते हैं और उनमें से प्रत्येक की एक अलग मान्यता होती है। इसी तरह, छठ पूजा भी उनमें से एक है। यह हर साल दिवाली के बाद 6वें दिन मनाई जाती है। हमें इस अवसर पर काफी खुशी महसूस होती है। यह पर्व भारतीय अक्टूबर और नवंबर का महीना त्योहारों के महीने के रूप में जाना जाता हैं। इस बीच लगातार कई त्योहार मनाए जाते हैं और उनमें से एक है छठ पूजा। यह दीवाली के ठीक बाद मनाया जाता है, क्योंकि दीपावली हिन्दू धर्म के पवित्र माह कार्तिक माह की अमावस्या को मनाई जाती है और दीपावली लगातार इन त्योहारों के साथ साथ चलता है । जिनमें सबसे पहले धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दिवाली लक्ष्मी पूजा गोवर्धन पूजा, भाई दूज, तुलसी विवाह इन त्योहारों को मनाने के बाद फिर छठ पूजा के साथ 6वां दिन आता है। छठ पूजा के पहले दिन घर की साफ सफाई करके पवित्र किया जाता है । इसके बाद छठव्रती स्नान करती है ,शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाती है । पहले दिन भोजन में चने की दाल, लौकी की सब्जी और रोटी का सेवन किया जाता है। सर्वप्रथम भोजन व्रत करने वाली महिला द्वारा किया जाता है । उसके बाद परिवार के अन्य सदस्य भोजन ग्रहण करते है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार इस दिन कार्तिक शुक्ल चतुर्थी होती है और छठ पूजा के पहले दिन को नहाय खाय के नाम से भी जाना जाता है। छठ पूजा का दूसरा दिन कार्तिक शुक्ल पंचमी को होता है । इस दिन व्रती महिलाएं पूरे दिन उपवास करती है और शाम को डूबते सूर्य को अर्ध्य देती है । इसके बाद छठव्रती भोजन ग्रहण करती है। इस दिन गुड़ की खीर बनाई जाती है । चावल का पिट्ठा और घी चुपड़ी रोटी बनाई जाती है। त्योहार को और आनंदमय बनाने के लिए आसपास के पड़ोसियों को भोजन पर आमंत्रित किया जाता है। छठ पूजा के दूसरे दिन को कुछ जगहों पर लोहंडा और कुछ पर खरना कहा जाता है। तीसरा दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी का होता है । यह सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है । इस दिन महिलाएं निर्जला व्रत रखती है। और शाम को अपने सामर्थ्य के अनुसार सात, ग्यारह, इक्कीस व इक्यावन प्रकार के फल-सब्जियों और अन्य पकवानों को बांस की डलिया में लेकर व्रती महिला के पति या फिर पुत्र नदी या तालाब के किनारे जाते है। नदी और तालाब की तरफ जाते समय महिलाएं समूह में छठी माता के गीतों का गान करती है। नदी के किनारे पहुंचकर पंडित जी से महिलाएं पूजा करवाती है और कच्चे दूध का अर्ध्य डूबते हुए सूरज को अर्पण करती है। इसके पश्चात नदी और तालाब के किनारे लगे हुए मेले का सभी आनंद उठाते है । यह देखने में बहुत ही सुंदर और रोचक लगता है । ऐसा लगता है कि मानो दीपावली का त्योहार वापस लौट आया हो। प्रसाद के रूप में इस दिन ठेकुआ जिसे कुछ क्षेत्रों में टिकरी भी कहते है और चावल के लड्डू, रोटी बनाई जाती है। चौथे दिन महिलाएं सुबह सूर्योदय से पहले उठ जाती है और उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देती है । छठी मैया की पूजा करती है। इसके पश्चात वर्ती महिलाएं कच्चे दूध का शरबत और प्रसाद खाकर अपना व्रत पूरा करती है । जिसे पारण या खरना कहा जाता है।

- वेद प्रकाश

सूर्य भगवान की बहन को छठी मैया के रूप में पूजा जाता है

आस्था का महापर्व छठ पलामू सहित पूरे भारत में मनाये जाने वाले सबसे बड़े पर्वों में से एक है। छठ पूजा उत्तर प्रदेश और बिहार के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना जाता है। जो भारत के उत्तर-पूर्व भाग में स्थित है। इस पूजा में लोग 3 दिन का उपवास रखते हैं। यह पुरुष या महिला किसी के भी द्वारा किया जा सकता है। जो कोई अपनी इच्छा पूरी करना चाहते हैं । वे छठ माता से प्रार्थना करते हैं। सूर्य भगवान की बहन को छठी मैया के रूप में पूजा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार अगर कोई पूरे विधि विधान से छठी मैया की पूजा करता है तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है । इसीलिए सभी लोग माता की पूरी श्रद्धा पूर्वक पूजा करते है और पूरे हर्षोल्लास से इस त्योहार को मनाते है। छठ पूजा का हिंदू धर्म में बहुत अधिक महत्व है, यह व्रत पति की लंबी आयु, संतान की प्राप्ति और घर में सुख शांति के लिए किया जाता है। यह त्योहार चार दिनों तक चलता है । इसलिए सभी आस-पड़ोस के लोग और अन्य अतिथि भी घर पर आते है और एक दूसरे से मेलजोल बढ़ाते हैं। जिससे समाज में सद्भावना और भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है। यह त्योहार बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाया जाता है । जिसके कारण चारों ओर खुशियां ही खुशियां दिखाई देते है। इससे भारत की अनुपम और भव्य संस्कृति देखने को मिलती है जो यह बताती है कि पलामू की संस्कृति में त्योहारों का कितना अधिक महत्व है। पलामू सहित पूरे भारत में एक बहुत बड़ी विशाल संस्कृति का रूप है। जहां पर सभी धर्मों को महत्वपूर्ण माना गया है । यहां के लोग सभी धर्मों का आदर करते है। इसीलिए यहां पर साल भर प्रत्येक धर्म के उत्सव और त्योहार बड़े ही हर्षोल्लास से मनाए जाते है। वह हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करती है और अपने भक्तों को आशीर्वाद देती है। लोगों का बहुत दृढ़ विश्वास है, इसीलिए हर साल वे इस अवसर को बहुत ईमानदारी से मनाते हैं। वह हमारे जीवन को आनंद और खुशी से भर देती है ,जो हम सभी को पसंद है। जब लोग इस पूजा को करने के बाद दूसरों को खुश देखते हैं, तो वे अगले वर्ष से इस अवसर को मनाने की इच्छा रखते हैं । हमारे द्वारा मनाये जाने वाला सभी त्योहार कुछ ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित होते हैं । वे हमारे लिए बहुत मायने रखते हैं। हम विभिन्न देवी-देवताओं से प्रार्थना करते हैं और अपनी बेहतरी की कामना करते है और एक अवसर को मनाते हैं। छठ पूजा उत्तर भारत के सबसे पारंपरिक त्योहारों में से एक है और वास्तव में नई पीढ़ी को संस्कार सीखना चाहिए और हमारी परंपराओं का पालन करना चाहिए

- गुड्डू कुमार

छठ पूजा का मुख्य प्रसाद ठेकुआ

आस्था का महापर्व छठ पर्व हमारे जीवन में खुशियां भर देते हैं। हम हर साल उन्हीं त्योहारों को दोहराते हैं। फिर भी हमें इसका बेसब्री से इंतजार रहता हैं। हम योजना बनाते हैं और ढेर सारी खरीदारी करते है। इस पर्व को पूरा देश मनाता है और अपने परिवार और दोस्त के साथ कुछ खुशनुमा पल साझा करता है। छठ पूजा भी उनमें से एक है। इसके मनाने के पीछे मान्यताएं हैं। एक राजा थे प्रियव्रत, जिनकी कोई संतान नहीं थी और किसी तरह एक बार एक बच्चा पैदा हुआ मगर दुर्भाग्यवश वह मृत पैदा हुआ था। परिणामस्वरूप, राजा ने बच्चे को अपनी गोद में लेकर श्मशान की तरफ चल दिए। लेकिन उनमें इतना ज्यादा दुःख था कि वो खुद भी उसी क्षण खुद को मार देना चाहते थे। तभी अचानक एक देवकन्या प्रकट हुई। वह राजा से देवी षष्ठी की प्रार्थना करने के लिए कही, क्योंकि वही आपकी मदद कर सकती है। वह देवसेना थी, देव की बेटी थी और वह स्वयं देवी षष्ठी थी। राजा ने देवसेना का बातों का पालन किया और आखिरकार, उसको एक बेटा हुआ। तभी से यह व्रत प्रसिद्ध हो गया। वहीं दूसरी एक और मान्यता है कि जब भगवान राम और देवी सीता 14 वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे। उन्होंने भी यही पूजा की थी। उसी परंपरा का पालन करते हुए, लोग प्रार्थना की पेशकश करते हैं और इस दिन उपवास रखते हैं । यह एक पारंपरिक त्योहार है और इस अवसर पर विशेष रूप से पकाया जाने वाला पारंपरिक प्रसाद सबसे अच्छा लगता है। लोग खास्ता और ठेकुआ खाना बेहद ही पसंद करते हैं ,जो इस अवसर पर बनाये जाने वाले दो मुख्य प्रसाद हैं। यह एक बहुत बड़ा त्योहार है ,क्योंकि परिवार के सभी सदस्य इसे एक साथ मनाते हैं। वे तैयारियों में एक-दूसरे की मदद करते हैं। इन तीन दिनों में सभी को साफ और शुद्ध कपड़े पहनने चाहिए । सबसे मुख्य बात यह है कि पूजा समाप्त होने तक यानी तीन दिनों तक आप प्रसाद नहीं खा सकते। बहुत से लोग इस अवसर को मनाने के लिए किसी नदी, तालाब या झील के पास इकट्ठा होते हैं। वास्तव में यह एक अद्भुत अनुभव है और सबसे प्रतीक्षित त्योहारों में से एक है।

- ओम प्रकाश उर्फ डब्लू

इस पर्व को पूरा देश मनाता है और अपने परिवार और दोस्त के साथ कुछ खुशनुमा पल साझा करता है। छठ पूजा भी उनमें से एक है। इसके मनाने के पीछे मान्यताएं हैं। एक राजा थे प्रियव्रत, जिनकी कोई संतान नहीं थी और किसी तरह एक बार एक बच्चा पैदा हुआ मगर दुर्भाग्यवश वह मृत पैदा हुआ था। परिणामस्वरूप, राजा ने बच्चे को अपनी गोद में लेकर श्मशान की तरफ चल दिए।

सुबह में अर्घ्य देने के साथ ही छठ पूजा का समापन होता है

चार दिनों तक मनाया जाने वाल छठ पूजा 31 नवंबर को उगते हुए सूर्य भगवान को अर्घ्य देने के साथ ही संपन्न हो जाएगा। इस साल छठ की शुरूआत 28 नवंबर को नहाय खाय के साथ हुई है। 29 नवंबर को खरना मनाया गया था। 30 नवंबर को डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जायेगा। छठ पर्व के अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही छठ महापर्व का समापन हो जायेगा। वैसे तो सूर्य को अर्घ्य हरेक दिन दिया जाता है, लेकिन छठ पूजा में सूर्य देव को अर्घ्य देने का विशेष महत्व है। माना जाता है कि सूर्य को अर्घ्य देने से कुंडली में सूर्य की स्थिति मजबूत होती है। छठ पूजा के अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने का विधान है। इस दिन पूरा परिवार घाट पर पहुंचता है और सूर्य देवता और छठी मैया की अराधना करते है। अर्घ्य में सूर्य देवता को जल, दूध अर्पित किया जाता है। जैसे की जिस तरह पौधों के लिए जल के अलावा सूर्य के प्रकाश की भी जरूरत होती है। उसी तरह मनुष्य के जीवन के लिए भी सूर्य के प्रकाश या धूप की अत्यंत ही आवश्यकता होती है। सूर्य प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत है और प्रकाश को सनातन धर्म में सकारात्मक भावों का प्रतीक माना गया है। सूर्योपासना का यह अनुपम पर्व है। इस व्रत को महिलाओं के साथ पुरुष भी समान रूप से करते हैं। यह व्रत अत्यंत ही कठिन होता है । क्योंकि इस व्रत में पूरे 36 घंटे तक व्रती बिना कुछ खाए पीए रहता है। माना जाता है कि छठ का पर्व वैदिक काल से चला आ रहा है। इस व्रत में मुख्यः रूप से ऋषियों द्वारा लिखी गई ऋग्वेद सूर्य पूजन, उषा पूजन किया जाता है। इस पर्व में वैदिक आर्य संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। इस पर्व को भगवान सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु आदि को समर्पित किया जाता है। यह पर्व पलामू के साथ पूरे देश के कई हिस्सों में धूमधाम के साथ मनाया जाता है। दूसरे देशों में बसने वाले प्रवासी भारतीयों के कारण अब ये पर्व विदेशों में भी मनाया जाने लगा है। छठ का महापर्व पलामू की संस्कृति बन चुका है। पौराणिक कथा के अनुसार प्रियंवद नाम के राजा की कोई संतान नहीं थी। तब उन्होंने संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ करवाया। महर्षि कश्यप ने पुत्र की प्राप्ति के लिए यज्ञ करने के पश्चात प्रियंवद की पत्नी मालिनी को आहुति के लिए बनाई गई खीर प्रसाद के रुप में दी। जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई, परंतु दुर्भाग्यवश वह पुत्र मरा हुआ पैदा हुआ। तब राजा प्रियंवद का हृदय अत्यंत द्रवित हो उठा। वे अपने पुत्र को लेकर श्मशान गए और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे। उसी समय ब्रह्मा की मानस पुत्री देवसेना प्रकट हुई। उन्होंने राजा से कहा कि वो उनकी पूजा करें। ये देवी सृष्टि की मूल प्रवृति के छठे अंश से उत्पन्न हुई हैं। इसी कारण ये षष्ठी या छठी मइया कहलाती हैं। राजा ने माता के कहे अनुसार पुत्र इच्छा की कामना से देवी षष्ठी का व्रत किया। जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। कहते हैं कि इसलिए संतान प्राप्ति और संतान के सुखी जीवन के लिए छठ की पूजा की जाती है।

- ओम प्रकाश प्रजापति

छठ पूजा लोक आस्था का प्रमुख त्योहार

छठ पूजा का उत्सव चार दिनों तक चलता है जिसमें विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक और भक्तिमय गतिविधियां देखने को मिलती है। छठ पूजा का त्योहार दीपावली के कुछ दिनों के पश्चात ही मनाया जाता है । लेकिन लोग इस त्योहार में घुलमिल कर और पूरे हर्षोल्लास से मनाते है कि मानो दोबारा से दीपावली का त्योहार आ गया हो। छठ पूजा का त्योहार मुख्य रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। इस त्योहार की तैयारी लोग कई दिनों पहले से ही करने लग जाते है। वे पारंपरिक भक्ति गीत गाते हैं, महा प्रसाद बनाते हैं। महा प्रसाद तैयार करने के लिए आम की लकड़ियों की व्यवस्था करते हैं। महा प्रसाद को हाथ से बने चूल्हे पर अलग से पकाया जाता है। इन तीन दिनों का हम पूरा आनंद लेते हैं। वास्तव में यह एक अद्भुत अनुभव है और मैं हर साल इस त्योहार का इंतजार करता हूं। लोक आस्था का पर्व छठ पूर्वांचल वासियों द्वारा मनाया जाने वाला प्रमुख त्योहार है। प्रवासी भारतीयों के साथ यह पर्व विश्वभर में प्रचलित हो गया है। यह साल में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र माह और दूसरी बार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को यह पर्व मनाया जाता हैं। इस पर्व में छठ माता की पूजा की जाती है। छठ पर्व पूर्वी भारत के बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश के अलावा नेपाल और मॉरीशस जैसे देश में भी मनाते हैं। यह चार दिनों तक चलने वाला पर्व है। छठ का मुख्य प्रसाद गेहूं का आटा और गुड़ से बना ठेकुआ है। महिलाएं इस पर्व को पति और संतान की दीर्घायु के लिए करती हैं। पुरुष भी मनचाहे फल प्राप्त करने और अपने कार्य में सफलता के लिए छठ का व्रत करते हैं। गाय के कच्चे दूध और जल से सूर्य को अर्घ दिया जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस पर्व की शुरूआत नहाय खाया से शुरू होती है। दूसरे दिन खरना किया जाता है। तीसरे दिन शाम को डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा है। चौथे दिन यानि अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है।

- बजरंगी कुमार

सुख-समृद्धि तथा मनोवांछित फल प्राप्ति का है यह पर्व

आस्था का महापर्व छठ वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक मास में। चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्लपक्ष षष्ठी पर मनाए जानेवाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। सूर्य भगवान और छठी मैय्या की पूजा का विशेष पर्व छठ पूजा रविवार को झारखंड बिहार समेत देश के हर हिस्से में मनाई जा रही है। पारिवारिक सुख-स्मृद्धि तथा मनोवांछित फलप्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। इस पर्व को स्त्री और पुरुष समानरूप से मनाते हैं। यह पर्व चार दिनों का है। भैयादूज के तीसरे दिन से यह आरंभ होता है। पहले दिन सेंधा नमक, घी से बना हुआ अरवा चावल और कद्दू की सब्जी प्रसाद के रूप में ली जाती है। अगले दिन से उपवास आरंभ होता है। इस दिन रात में खीर बनती है। व्रतधारी रात में यह प्रसाद लेते हैं। तीसरे दिन डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य यानी दूध अर्पण करते हैं। अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। इस पूजा में पवित्रता का ध्यान रखा जाता है; लहसुन, प्याज वर्ज्य है। जिन घरों में यह पूजा होती है, वहां भक्ति गीत गाए जाते हैं। आजकल कुछ नई रीतियां भी आरंभ हो गई हैं। जैसे पंडाल और सूर्यदेवता की मूर्ति की स्थापना की जाने लगी है। सुबह अर्घ्य के उपरांत आयोजनकर्ता माइक पर चिल्लाकर प्रसाद मांगते हैं। पटाखे भी जलाए जाते हैं। कहीं-कहीं तो आर्केस्ट्रा का भी आयोजन होता है। परंतु साथ ही साथ दूध, फल, अगरबत्ती भी बांटी जाती है। पूजा की तैयारी के लिए लोग मिलकर पूरे रास्ते की सफाई करते हैं। छठ व्रत के संबंध में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से देखें ,तो सूर्यदेव को आत्मा का कारक माना गया है। ऐसा भी माना जाता है कि सूर्य देव को अर्घ्य देने से वे बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। और अपने भक्त के जीवन को अंधकार से निकालकर प्रकाश व ज्ञान की ओर लेकर जाते हैं। मान्यता अनुसार अर्घ्य देने से घर-परिवार में मान-सम्मान बढ़ता है। सूर्य को प्रतिदिन अर्घ्य देने से व्यक्ति कुंडली में सूर्य की स्थिति भी मजबूत होती है। छठ पर्व को विधिवत मनाने से मिट जाता है । सभी तरह का सूर्य दोष। साथ में यह भी कहते हैं कि शाम के समय सूर्य की आराधना से जीवन में संपन्नता आती है। साथ ही सुबह के सूर्य की आराधना से सेहत बनती है, रोग मिटते हैं, दोपहर की सूर्य आराधना से नाम और यश बढ़ता है और शाम के समय की आराधना से जीवन में संपन्नता आती है।

- ओपी

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति